दुर्लभ पुस्तक संग्रह में
मे भेजे
31/7/13

यह किताव खेल बंगाला हिस्से अव्वल कुदातुल्ला खां फरुखवादी ने वनाया

खेल बंगाला

कपड़े की आड़ से निशाना लगाने की विधि

वंदूक में गोली की जगह पारा भरे और वंदूक के आगे कपड़ा तानो और जिसके चाहो निशाना लगाओ जानवर मरजायगा। कपड़ा पर दाग न आवेगा॥१॥ आक के दूध से हाथ से जो चाहे सो लिखो जब साफ खुश्क होवे तो ख़ब मलो लिखो कुछ मालूम न होगा॥

बगैर रंग व स्याही के रंग वरंग का लिखना

पियाज का अर्क निकाल के सफेद कागज़ पर उस अर्क से लिखे और साये में सुखाले तो लिखा बे मालूम होजायगा और जब उस कागज को आंच पर गरम करे तो सारे हर्फ जर्द रंग के जाहर हों गे देखने वालों को बड़ी हैरत होगी कि सादे कागज पर हर्फ कैसे लिख गये॥२॥ नारंगी या नीबू के अर्क से लिखे और सादे में सुखाले जब तेज़ धूप से सामने कागज को गरम करे गर्मी पाकर सब लिखा हुवा वसंती रंग का होजावेगा॥३॥ गाय के दूध में थोड़ा नौसादर मिलाओ और कागज सफेद पर लिख कर सुखालो जब आग से सकोगे तब सब हर्फ हरे होंगे॥४॥ कल्ई याने चूने से सफेद कागज़ पर लिखो या फूल बनाओ और

सालो तो कागज सादा वे लिखा मालूम होगा और पानी ज ब डालो लिखा पढ़ा जायगा।।५।। गुड़का शरबत करके सफेद कागज पर चाहे सो लिखो और ऊपर से काजल या तवे की कलोंच सूखी सारे कागज पर हर्फों समेत खूब मलो कि सब कागज खूब काला होजावे फिर एक लकड़ी की तख्ती पर काले कागज पर रक्खो और ऊपर से कागज पानी के छींटे मारे तो सारा लिखा स्याही से धुलके सफेद होजायगे और जमीन काली रहे तो हर्फ बहुत खूब सूरत मालूम होंगे।।५।।

मुतफ़र्कात खेल

जलते चिराग को बुझादो लेकिन उसका फूल बाकी रहे गंधक कपूर हरताल तीनो चीजों को एक २ मासा लेकर बहुत बारीक पीस कर पुड़िया में रक्खो और बुझे चिराग के ऊपर चुटकी से ज रा डालो बुझा चिराग उसी दम रोशन होजायगा।।२।। नौसादर को पानी में कपूर घिसकर अपने हाथों में मले और खुश्क कर ले फिर आग का अंगारा हाथ पर धरले तो भी नहीं जलेगा।।३।। शीशे को जलती आग में डालदो जब खूब आगकी तरह लाल हो जावे तब आग से निकाल कर अधरक के अर्क में डालो तो शीशा ऐसा नर्म होजायगा कि उसको दांतो से चबाय डालो और मुह में न लगेगा किसी के सामने चाबो तो बड़ी हैरत होगी कि शीशा मुंह में नहीं लगेगा ४ मुर्गे के अंडे में बारीक छेद करके भीतर मे सब मसाला निकाल डालो और ३ माशे पारा उसके भीतर भरो और छेद

को मोम या आटे से खूब बंद को फिर थोड़ी सुका का यानी रेता गरम जमीन पर डाले ऊपर सेत के अंडा रखदे तो गरमी पाकर वैजा यानी अंडा खूब कूद फांद करैगा फिर लोगों को बड़ा अचरज मालूम होगा ॥ देसी नील को बारीक पीस ले फिर रूई के भीतर लपेट के वत्ती वनावै फिर अंजीर की लकड़ी चिराग में डाले और वही वती रोशन करै तो सब घर काला स्याह मालूम होगा ॥ ६ ॥ सफेद घुंघची को बारीक पीस ले और खड़ाऊं पर लेप करे और खूंटी को उखार के खड़ाऊं को साये में सुखा ले फिर जब तमाशा किया चाहे दोनों पांव धरके खड़ा होकर चले फिर खड़ाऊ वे खूंटी चिपकी रहे गी देखने वालों को ताज्जुब मालूम होगा ७ तीन माशे पारा लेकर गोश्त की पकती देग में डालो तो गोश्त हरगिज न गलैगा चाहे सो मन लकड़ी जलादो तो भी कुछ असर न होगा ॥ ८ ॥ अंजीर की लकड़ी मेंढक की चरबी लेकर चूल्हे में गाड़ दो फिर उस चूल्हे में कुछ न पक सकेगा चाहे जितनी आंच करो चीज नहीं गलेगी ॥ ९ ॥ औरत के सिर के बाल मर्द का पुराना कपड़ा दोनो को मंगल की आधी रात को मरघट पर जाकर जला कर राख करो और पान में खिलादो तो दोनों में यानी मर्द औरत में अदावत होजा वेगी ॥ मगर बाल कपड़ा उन्ही का हो जिनमें वैर कराना हो अजमाया हुवा है बहुत सही है ॥ १० ॥ कायफल घिस के उसके अर्क में गेहूं भिगोदे फिर सुखाले अगर कौवे को वही दाने खिलादो तो वे होशी में आवे ॥ हीरा हींग पानी में घोल

ल थोड़ा सहद मिलाय लो फिर गेहूं या कोई नाज भीज ने दे फि र छांह मे सुखाले फिर जिस जानवर को चाहे खिलावो वे होश में आजावे ॥ १२॥ अगर किसी को विच्छू ने काटा होतो माशे भर चूना लगाकर सुखादे उसीदम अच्छा होजावैगा ॥ १३॥ अगर किसी को काले सांपने काटा होतो जल्दी से थोड़ा नी ला थोता खूब बारीक पीस के आदमी की नाक में पोंगी लगाके फूंक दे तो आराम होजावैगा लेकिन काटे हुवे आध घंटे से जियादा न हो फिर दवा असर न करेगी ॥ १४॥ पियाज को कत र के चिराग में डालो तो पतंगे नहीं पास आयेंगी ॥ १५॥ फि टकरी और काफूर को पीस कर कागज पर लेप करे और क ढाई बना कर हलुवा पकाले कागज नहीं जलेगा कढ़ाई आंच से उंगल भर ऊंचे रहे आंच कायलो का करना चाहिये आग की लौ से कागज जल जायगा ॥ १६॥ नौसादर सुहागा संखि या दोनों चीजें महीन पीस कर हाथ के लिखे हर्फों पर मले और धूप में रखे सारे हर्फ उड़कर कोरा कागज रह जायगा ॥ १७॥ एक शीशे में नीबू का अर्क भरो और एक कौड़ी जर्द रंग की जलाक र उसकी राख शीशे में भरके मुंह शीशे का खूब मजबूती के साथ हा थ के अंगूठे से बंद करो अर्क उड़ जायगा ॥ १८॥ शीशे के भीतर कबूतर के परों को खूब ठूंस २ के भरो कि बिल्कुल खाली न रहे फि र मुंह को मोम से बंद करो फिर शीशे को कोठे पर से फेंक दो तो कभी न टूटेगा ॥ १९॥ चार मासे हींग को कोरे मुलरा में रखके ऊपर से पानी

नी में डाल दो तो साल भर तक नहीं डूबेगा देखने वाले जादू जा नेंगे॥२१॥ मारकीन कपड़े का एक टुकड़ा घीवार के दूध में तर करे फिर साये में सुखालो इसी तरकीब से सात बार भिगाये और सु खालो फिर चाहे आग में डाल दो हरगिज न जलेगा॥२२॥ इ तवार के दिन कौवे की चोंच लावे और धूप वा गूगल की धूनी दे कर फिर उसी चोंच से सात लकीरें खींचे जो औरत उसे लांघ जाय उसी वक्त खून हैज जारी हो जायगा जब तक उस खो च को धोकर पानी न पिलाओ बंद नहीं होगा चाहे लुकमा न हकीम हो॥२३॥ चलनी को तीन वार घीगुवार के अर्क में तर करो और तीनो दफ़ा छांह में सुखालो फिर उसमें पानी भ रे पानी नीचे न गिरेगा॥२४॥ नौसादर और अकरकरह मुंह में खूब चबा के थूक दो फिर आग मुंह में रक्खो तौभी मुंह न जले गे लेकिन आगी कपास की लकड़ी की करेलना औ दूसरी लक ड़ी की आग से मुह जल जायगा तो छः महीने तो करो रोटी खा ने को तरसोगे और किताब बनाने वाले को गालियां दो कर झूठा कहोगे॥२५॥ धतूरे के सात पते सात काली मिरचे इतवार के रोज पीस करपिलावे जिसको दिन तीन का बी च देकर चौथे रोज बुखार आता हो जाता रहेगा॥२६॥ तालम खाने बारीक पीस कर दूध में डालो तो बे जामन दही जम जायगा २७॥ भेड़ की चरबी सेर की चरबी बीच में दोनों चिराग में बत्ती जला ओ दोनों चिरागों के बीच दो उंगल का फासिला रखे तो दोनों याने

तो आपस में लड़ने लगेगी॥ २८॥ मूली एक और फिटकरी एक मासा सराबी को देने से शराब का नशा बिलकुल उतर जायगा॥ २९॥ एक मरखी आधी कालीमिर्च दो रत्ती हींग पानी में पीसकर पिलावे सेया तीनो चीजों सूखी पासकर आंख में अंजन लगाने जाने से जाड़े का बुखार जाता रहेगा ३० जो शीशा काटा चाहो तो ऐसे का टो कच्चे सूत की वत्ती ऐसी बनाओ जैसा बंदूक का तोड़ा होता है॥ फिर शीशे पर तेज चाकू से जैसा काटा चाहो लकीर करो वही बत्ती जलाकर शीशे के नीचे आंच दिखाओ निशान पर से सीसा टूट जायगा ३१॥ तूतिया में घिसकर लोहा व सोने व चांदी परमलो तांबा मालूम होगा खरी नोन से धोने से असली सूरत हो जायगी ३२ अकरकरहा तीनमाशे गंधक दो माशे नरगिस की जड़ ४ माशे यह तीनो चीज पानी को जिस जगह छिड़क दोगे चाहे बंगला या दुकान या मकान हो वहां पर मक्खियां न आवेगी दीवार जमीन में सब जगह छिड़कना चाहिये॥ बड़े मकान में दवा जायद हो॥ ३३॥ जिस जगह मच्छड़ हों वहा पर किसी बड़े मकान के वर्तन में ऐसा थाली वा परात में पानी मुंह लो खूब भरो ऊपर से एक बूंद कड़ुवा सरसों का तेल बीच पानी डाल के रखदो सवेरे बहुत मरे मच्छड़ पानी में मिलेगे ऐसे ही पाव या साल दिन करो सब मर जायगे॥ ३४॥ काले बिलाव के आंखों के आसुओं से लिखो दिनको कुछ मालूम होगा रात में पढ़ा जायगा॥ ३५॥ एक साफ शीशे में सराब दुआनि भर दो माशे जर्द गंधक उसमे डाल दो और अंधेरे में

मकान में रखदो तो यह मालूम होगा कि शीशा आग से भरा है ॥ ३६
चीनी का टूटा वर्तन जोड़ना ॥ चूना कलई का बहुत बारीक पीस कर
मुर्ग के अंडे की सफेदी मिलालो और टूटी चीनी के जोड़ों में भरो
और धूप में रखदो बहुत मजबूत जोड़ लगेगा मगर पानी एक बूंद
भी न मिलाना ३७ मोम को मीठे तेल में पकाओ फिर पत्थर पर चाहे
फूल बनाओ या नाम लिखो तीन रोज तक रहने दो बाद तीन रोज के
रस के उम्दा सिरके से धो डालो फिर लिखा हुवा नहीं मिलेगा ॥ ३८ ॥
लोहे के किसी हतियार पर या वर्तन पर जो चाहो सो मोम से गरम क
रके लिखो फिर तूतिया को पीस कर डालो फिर उस पानी से औजार
को धो डालो लिखा कायम रहेगा । ३६ । मेंढक पुराने की चरबी हाथों
में मलो फिर हाथ पर आगी का अंगारा रखलो हाथ में आंच न ल
गेगी ४० जुआर को तीन दिन पानी में भिगोदे फिर एक रात दिन
आक के दूध में तर रहने दो फिर एक रात दिन थूहड के दूध में तर र
खके साये में यानी छाह में सुखालो जब किसी को खेल दिखाना मंजूर
हो तब बीस दाने लेकर मुट्ठी में मजबूत पकरो थोड़ी देर में खीले हो जा
वेगी ॥ हिदायत ॥ पहले इस छोटी सी किताब के खेलों को आप
करके खूब आजमालेना जब खूब महावरा हो जावे तब किसी
के सामने करना नहीं तो तरकीब भूलोगे और झूठ कहोगे यह सब
खेल मेरे आजमाये हैं और सही हैं तरकीब में फर्क होने से ए
कभी सही न होना फिर हमें लाग देना ॥ शोवदा ॥ गंधक
को खरिया मिट्टी के साथ पीस कर यानी पानी में घोल कर किसी दीवार

पर फूल वा लकीरें बनाओ रात को एक लकड़ी के सिरे पर आग लगादो सब लिखा रोशन होजायगा ५२ जिस जानवर को जी चाहे मिट्टी का बनाओ पेट भीतर खाली रखो मुंह में छेद करो जो पेट के सूराख से मिल जाय फिर मेंढक खिलौना के पेट में छेद बड़ा सूराख खुला रहने दो फिर उसको खूब बंद कर के बस एक मुंह का सूराख खुला रहने दो फिर उस जानवर के आगे गंधक जलादो और उस जानवर के धुआं पहुंचाओ तो जानवर धुआं लगने से उसके पेट में बोलेगा लोग जानेंगे कि मिट्टी का खिलौना जादू के जोर से बोलता है लुत्फ़ यह है कि मेंढक की आवाज किसी को समझाऊ न देगी लेकिन तुम मेंढक को किसी के सामने न बंद करो खिलौना कुम्हार से बनवालो ।। ५३ ।। एक मोम का तोता बनाओ पेट में ओस भरदो और धूप मे रख दो थोड़ी देर बाद ही तोता हवा में उड़ने लगेगा देखने वालों को ताज्जुब मालूम होगा ।। ५४ ।। शेर का पित्ता काले कुत्ते का पित्त तीनो पित्तों को मिला के सफेद कागज पर लिखो दिन में हरूप नही मालूम होंगे अंधेरी रात में साफ पढ़े जायगे ५५ ।। मकोह के पत्ते सूखे कूट के सिर खर्मोश के खून में गोलियां बनालो फिर एक गोली सूत के डोरे में बांध के पानी में डाले तो हजारों मछरियां उसे खाने को आयेगी फिर जाल डाल के पकड़ लो यह खेल मछली पकड़ने वालों के बड़े मतलब का है ।। ५६ ।।

इतवार को थोड़ी मिट्टी उस जगह की लावे जहां गदहा लोटा हो और दस्तर खाने के नीचे रखदो सब खाना खाने वाले ठट्ठा मार मार के

हंसेंगे कि खाना खायगा ॥ ४७ ॥ नौसादर नीला तोता दो २ मा
से कागजी नीबू के अर्क में घिसो फिर मोम को औटा के तलवार
या किसी हतियार पर नाम लिखो ऊपर से वह घिसी हुई चीजें
मोम के लिखे पर लगाओ थोड़ी देर धूप दे दो फिर धो डालो लि
खा हुवा उभर आवेगा अगर हथियार चोरी जावे तो तुम चोर गिरफ्ता
र करा सकेहो ४८ चिरचिरा के पेड़ की जड़ हाथ में धाम के जीता
बिच्छू पकड़ हो जहर असर नहीं करेगा ॥ ४९ ॥ कसौटी
का पत्थर खूब बारीक पीस के चिराग के बत्ती पर बुर्के दो चाहे
जितनी हवा चले चिराग न बुझेगा मगर तेल सरसों का जलाना
५० मर्द की मनी कपड़े में बांध कर जहा पानी के घड़े रखे जाते हैं
एक घड़े के नीचे गाड़ दो तो वह नामर्द हो जावेगा जब निकाल लो फि
र मर्द हो जावेगा मगर मंगल के रोज पुष्य नक्षत्र में गाड़ना ॥ ५१ ॥
मंगल के दिन सूर्य के निकलने से पहले सायल हिरन की खोपरी
लावे और उसमें करेले का बीज रख के जमीन में गाड़ दे और पानी
दिया करे लेकिन परछाईं बचाये रहे जब पेड़ उगेंगे और करेले ल
गे तो उनको तोड़ के छाह में सुखाले जब एक करेला डोरे में
पोहिके जिस आदमी के गले में बांधे फौरन हिरन के भेष में आ
जायगा करेला खोल लेने से वही असली सूरत होजायगी ले
किन करेले के पेड़ पर किसी की साया न पड़ जाय तो सब तासीर
जाती रहेगी फिर करेला सिवाय तरकारी के और किसी के काम
में न आवेगा साये की पूरी हिफाजत करने से खेल होगा अक्सर

लोगों से नहीं हो सकती है॥

यहां से दवाइयां लिखी जाती

जहां पर सांप ने काटा हो उसी काटी जगह पर पेशाव करदो तो जहर जल जायगा अगर ऐसी जगह काटे कि आप पेशाव न कर सके तो दूसरे आदमी से करालें॥२॥ दूध थूहर का या आक का जहां बिच्छू ने काटा हो डंक की जगह पर मले जहर उतर जायगा॥३॥ करेले के बीज पीसकर मले तो बिच्छू का जहर जाय॥४॥ रसौत १ मासा औरत के दूध में पीस के गर्म करके कान में डालो पीव बंद होगा और कान में दर्द न होगा॥५॥ लोध को महीन पीस के भीतर कान में डालो तो पीव बंद होगा और दर्द न होगा॥६॥ जंगली कबूतर का ताजा खून भरलो आंखों में तो रतौंध जाता रहे दो बूंद सरसो का तेल डालना कानों में तो दुखती आंखें बंद होजायगी॥८॥ लिंग बड़ा और मोटा होने की दवाये॥ अकरकरहा एक मासा पियाज का अर्क दस दिरम पांच मांशे दोनों को खूब खिस के सात दिन लेप करे तो लिंग बड़ा मोटा होजाजाय॥ मुवाशिरत में लज्जत पाने के नुकशे॥ सुअर की चरवी सहत खालिस के साथ मिलाके लिंग पर लेप करो दो घड़ी वाद औरत से सोहवत करो॥ एक काली मिर्च चंदन की लकड़ी से पत्थर पर घिस्कर लेप करो फिर सुहव्वत करो लुफ़ आयेगा और सिर के बाल जो कंघी करने से टूटे हो उनको जलाकर उनकी राख कर सहत मिलाकर लेप करो फिर उसी औरत से जि-

ना करोती वह औरत पिछान छोड़ेगी वादजिना के गायके औटे
दूध में दारचीनी पीसकर मिलाकर दूधपीलिया करे उमर भर तक
ताकत कम न होगी। या सहद खालिस में दारचीनी मिलाके पीना
भी ताकत को कायम रखता है वादजिना के वगला पान की गिलो
री में लौंग दो जावित्री दो रत्ती डाल के खालो ताकत रहेगी।। मूसली
स्याह कलौंजी स्याह इनतीनों चीजों को पांच पांच तोले लेक
रवारीक पीसकर कच्ची शक्कर पन्द्रह तोले मिलाके एक तोला
रोज सुवह को खाके ऊपर से गाय का दूध आध सेर पियाक
रे खटाई तेल लाल मिर्च वादी चीजों से वचते रहना।। २१।।
सुजाक की दवा।। सिरस के वीज एक तोला विनोले की मिंगी
१ तोला वकायन के वीज १ तोला इनतीनों चीजों को पीस वर गैंद के
दूध में मिलाकर वेर की वरावर गोलियां वनालो एक गोली
रोज सुवह को खाय ऊपर से पाव भर दूध गाय का पिया करो
खट्टी चीजों और ऊपर लिखी चीजों से परहेज करो।।
आधासीसी की दवा।। कागज़ी नीवू का अर्क दो वूंद कान में डा
लो जिधर दर्द होता है उस तर्फ नाक में डाले आराम होगा।।
सिर के वड़े वाल होने के दवा।। आमला नीवू के अर्क में घिस के
रात को वालों में लगाले सवेरे धो डाले सुखाके तेल डाले वाल
स्वाह वड़े और नर्म होंगे।। जिस औरत के औलाद न होती
हो उसकी दवा।। असगंध को कूट कर रखे और जिस दिन
से हैज सुरू हो उसी दिन से चार मासे हैज वंद ++++++

द् होने तक खाय और खाना भात के सिवा कुछ न खाय फिर नहाय के मर्द के पास जाय तो हमल है॥ खरगोश नर का पिता शराब में मिलाकर और पी लेवे तो भी हमल रह जायगा हमल गर्भ को कहते हैं॥ हमल गिरने की दवा॥ गाजर के बीज कूट आग पर डालकर फुर्जे में धूनी देने से गर्भ उलझा रहा हो सो बाहर आवे मर्द के सिरके सो बाहर आवे॥ गाय का गोबर आटाय के थोड़ा गर्म २ पीले फौरन हमल गिर पड़े॥ मर्द के सिर के बाल या घोड़े के सिर के बाल की धूनी देने से मुर्दा बच्चा बाहर आवेगा साप की केचली का फुर्जे में धुंआ देने से फायदा होता है पहलौटी का किसी का लड़का हो जब उसके दांत गिरें तो दांत लेकर तावीज में रख कर पास रखे तो हमल कायम नहीं होगा॥ लेकिन लड़के मुंह से दांत जमीन में गिरने न पावें ऊपर से ऊपर ही ले लेवे॥२०॥ चूहे की मिगनी छः मासे सहद में मिलाकर सात रोज खाय तो भी हमल करार नहीं पकड़े गा॥

गाने वालों की आवाज़ साफ़ रहने और बड़ी आवाज खुल जाने की दवाइयां॥ हींग १ माशे पानी में घोल के पानी गर्म २ पीलेवे आवाज साफ हो जावे गी॥ कुलीजन को मुह में दावे रहे तो खुले॥ सड़का यानी हतलस

यह मर्ज उसी का नाम है उ जिसने लाखों जवानों को जवानी से खो दिया यह मर्ज वही है जो इस किश्ती पर स ... ड़ुवा बीच में डूबा दिया इसी मर्ज की बदौलत लाखों आदमी तबाह होगये इस

मर्ज के वायस से लाखों बंदे खुदा जवानी से खोगये आ
ज कल इस आरज़े में दूर हो जाती है वहिस्तत नजदीक आज
आती है मनी की जगह से खून आता है इसी तरह से मरीज
घुल २ कर एक दिन मरजाता है इसी मर्ज से भूख प्यास जा
ती रहती है रात को नींद नहीं आती है धात पतली होजाती
है उसी वक्त मरीज अपनी जवानी को याद करके रोती है
किसी ने सच कहा है ॥ शेर ॥ जलक वमूजिव है ॥ हर सख्
स की वस ख्वारी की ॥ यह हतलस नहीं है इक कहर है
वरीका ॥ इस आरजे से हर सख्स को आगाह है ॥ इस मर्ज
सब मर्जों का किल्वेगाह है ॥ लुकमान हकीम इस मर्ज से इ
लाज करने से कानों पर हाथ धरते हैं धन्वतर वैद्य इसी मर्ज को
देखकर इन्कार करते थे ॥ यह बहुत दुश्वार है इससे बुरा कौ
न आजार है इस मर्ज में अक्सर मुजर्रद व शरमदार आदमी गि
रफ़्तार होते हैं ॥ लिंग तमाम नाताकत होजाता है तव अफ
सोस कर जान खोते हैं इस आरज़े में सब रंगे वेकार हो जाती
हैं और फिर मर्द औरत के काम का नहीं रहता है और तवियत वेजरू
रत मनी को वाहर फेकने की आदत होजाती है इसी सबब से जो
फ और तपे दिक नौबत होजाती है और मजा कम आने से की
वजह से तवियत मनी का वनाना छोड़ देती है इसी सबब से
कमजोरी होजाती है और खड़ा भी नहीं होता है ॥ सवाल ॥
यह मर्ज कैसे होजाता है ॥ यह मर्ज जवानी में हाथ से ^

जकरको हिलाकर या किसी नर्म कपड़े मिस्ल मलमल की थैली से सूराखदार तकिये से या चारपाई के सोखे के जरिये से किसी औरत का ख्याल करने से मनी को निकालना इसका नाम हतलस है॥ सवाल॥ अगर किसी को यह मर्ज भूल से यानी जब वह इसकी बुराई से आगाह नहीं था होगया तो क्या करे॥ जवाब॥ उस की तदबीर है कि मरीज को लाजिम है कि उसी रोज से इस काम को छोड़ दे और अपने लिंग पर सुबह को पानी बासी डाले अगर सिमिट जाय तो इलाज करे और न सिमिटे तो न इलाज करना चाहिये यानी फिर इलाज करना फजूल है॥ इलाज॥ पहले पांच या सात जोंके सिर छोड़ कर लिङ्ग के इर्द गिर्द में लगावे जब उनका आधा पेट भर जाय तो छोड़ाय के लिङ्ग के गिर्द को खूब कपड़े से रगड़े के सहद खालिस और जवान मुर्ग की बीट मिलाकर एक बार सुबह को लेप करदे ठन्ड से बचाये रहे और हिले नहीं सात रोज यह दवा करे अगर फायदा होय तो यही किये जाय अगर आराम न होय तो ना करे॥ दूसरी तरकीब॥ नाइजे की शरह सफा छोड़ कर चौतरफे लगाकर मरा खून निकलवाके पारा एक माशे काली बकरी की पिंदरी का गूदा मिलाकर मरहम की तरह लगाए॥ तीसरी तरकीब॥ जोकों से खून फिसादी निकलवाके दारचीनी आंबा हल्दी दो दो माशे महीन पीस के ४ माशे सहद मिलाकर लेप करे तीन रोज तक ऊपर से बंगला पान बांधे और खाना हल्वा मुर्गे के अंडा का या दूध छुहारा और वादी चीजों से परहेज करते रहे॥ इति श्री स्वेलबंगाल

मुल्क रूम में यह वड़ा सौदा गर था डाढ़ी इसकी इतनी वड़ी थी कि नौकर लेकर चलते थे सूरत उसकी यह है ॥

शालिहोत्र

जिसें

अश्वोंका गुणागुण

आदि जानना अर्था

त ब्राह्मण क्षत्री शूद्र

ज़ाति तथा रंग आदि का

पहिचाना।

आगरा धूलियागंज में अहमद
अलीके प्रबन्धसे अहमदी प्रेस में छपा

श्रीगणेशायनमः

अथ शालहोत्र प्रारंभः

अथ घोड़ों का इलाज

दो० नमो निरंजन देव गुरु मारतण्ड ब्रह्मण्ड ॥ १ ॥
रोग हरन आनंद करन सुख दायक जगपिंड
श्री महाराजाधिराज गुरु सेंगर बंश नरेश
गुण ग्राहक गुणजनन के जगत विदित कुशलेश ॥ २ ॥
जाको नाम प्रताप को चाहत जगत उदोत
नर नारी सुख मुख है कुशल कुशल गोशगोत ३
चित चातुर चख चातुरी मुख चातुर सुख देन।
कवि कोविद बरनत रहत सुख मुख पावत बैन ४
बाजी सो राजी रहै ताजी सुभट समर्थ ॥
रन धूरे पूरे पुरुष लहहिं कामना अर्थ ॥ ५ ॥
बालापन ते सरन रहि मैं सुख पायो वृन्द
शालहोत्र मति देखि कै बरनत चैतन चंद ६
श्री कुशलेश नरेश हित नित चित चाहत हो
अश्व बिनोदी ग्रन्थ यह सार बिचार कह्यो ॥ ७ ॥
मूल मान शाखा सुमधु पत्र सुमग करगाज
भुवन फूल फलियो सदा कुशलसिंह महाराज ८

अथ शालहोत्र जथा प्रति बर्णनं

दो० विजय करन अरु जय करन गावत चारों वेद।

नकुल कहै सहदेव सौं रविबाहन को भेद ९
वाहन भूसुर को सुरथ क्षत्रिय को हयजान
वैश्य वृषभ बाहन कहो महिषा सूद्र निदान १०
रवि शशि कुल के वंश जो क्षत्री वीर प्रचंड
एक तुरी एक वारि बस विजय करन ब्रह्मण्ड ॥ ११
मारतंड मंडल सकल उपजा जासु प्रकाश
वाहन तें जो तुरंग तें जुगजुग जुगत बिलास १२
तेहि बाहन को भेद सब सुनहु सकल सहदेव
प्रभु देही मन जान यह हय देवन को देव। १३
जाको प्रवल प्रचंड वल अमित अनल आकाश
ताको गुण कहं लो कहों जो रविरथ आकाश १४
भुवि हरि क्रिया और धर्म युत जो क्षत्री जग होय
ताहि भगवती दाहिनी सारन मंडै गोय १५
महा पुनीत पवित्र तन होय तुरी असवार ॥
विजय करै संशय नहीं डारै शत्रु संहारि १६।
जैसे भानु उद्योत तें तिमिर लोप ह्वै जाय ॥ ४ ॥
तैसी गाजी मर्द तें शत्रु न रण ठहराय। १७।
गाजी केवल अश्व है मरद सो क्षत्री नास ॥
जाके प्रवल प्रताप तें जग पावत आराम १८
चारि बरण चाहौ चरण चाहो सुजस जास ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्र चरण को दास १९

सहदेवउवाच। अहै अनुज हय प्रवल हैं जानत सकल जहान॥
इन में चारौं बर्ण हैं तिनको करौ बखान।२०।
तिनके लक्षण सब कहैं जा विधि जाने जात॥
अब सबै सामर्थ हैं होत एक सो गात॥२१॥
बर्ण २ के भेद सब भिन्न भिन्न कहि देउं॥
केते रण समरत्थ हैं केते पालहिं देउ।२२।

नकुलउवाच जथामति लक्षण बर्णनम्॥२।

दो॰ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्र बर्ण हय होत॥
लक्षण तें पहिचानियो तिन में अंग उदोत॥२३

अथ ब्राह्मण वर्ण के लक्षण

सूक्ष्म रूप अनूप छवि महा तेज अधिकार
जाके दर्शन देखते नविन करहि संसार२४
रुचि दाने सो अति रहे भोजन करै अघाय
तेज न मानै तोय को पैठ जल में धाय।२५।
अग्नि पुंज ज्वाला ज्वलित रण के देखे होय
महा सुगंध प्रस्वेद तन जल अचैवे मुख सोय२६
अड पकड़े छाड़े नहीं डरै न त्रासहि वास॥
ब्राह्मण सो पहिचानिये सरसौं आवे रास।२७।

अथ क्षत्री बर्ण के लक्षण॥

दो॰ क्षत्री बर्ण विरोध अति मानहि नेक नहारि॥
क्रोध करै संग्राम लखि डारै शत्रु संहारि२८

वारवार धुनि शब्द मुख ललकारे जनु वीर॥
एका एकी शैार को आवन देत न तीर।२६।
टापै ही सबल करै डारै बन्धन तोरि॥ ५॥
असवारी प्यारी लगै वाहि न दीजै खोरि३०
रण देखै प्रचंड हय मन के साथ उड़ै॥ ५॥
अस्त्र चोट मानै नहीं सन्मुख गोद गुडै ३१।
अति सुगंध प्रस्वेद तन आवै लहरि सुवास
चौंके चितवहि सहज ही निनउनमानय खास ३२
मरदानो क्रोधी वड़ो वर्ण क्षत्री होय॥ ५॥
जाके वल और पौरुषहिं अघ्वन लागै कोय ३३

अथ वैश्य वर्ण के लक्षण

सुस्त चुस्तवन तंग कसे रहे सदा आधीन॥
जल्द करै तो जल्द है तन वल तें नहिं हीन ३४
झड़ के देखत भीत भय मानै उर अधिकाय॥ ५
रण कांचो नाचो फिरै उतरन तें चलि जाय ३५
अंग मस्वेद प्रस्वेद ज्यों आवै नाहिं सुवास॥
शुद्ध राह चाहै सदा रुचि सों दानो घास ३६

अथ शूद्र वर्ण के लक्षण

मलिन बसन सों सोरहे लोटहि थान विशेष
मंद मंद भोजन करै डरपहि पानी देखि ३७
बासें तो सूधो रहै औगुन देय भुलाय॥ ५॥

महा सुगंध प्रसेद तन रन तें चले पराय ३९

यह लक्षण बहु वर्ण के सब में सब नहिं होत
मिश्रित अंग पहिचानिये तैसे करहिं उदोत ३९

जो एकहि अंग देखिये लीजे नाहि बिचारि ॥
चेतन चंद सचेत करि साल होउ उपचारि ४०

अथ रंग बर्ण उपचार अथ प्रति

नुकरा हंस स्वरूप अति रजित मेल एक अंग
कुमैत मुस्की सुरंग रंग सुरखा सकल प्रसंग ४१

जपा सोरठा अति हि दृढ़ महा बली बल साषि
पंचा द्रिया की सकल सात होउ बल भाषि ४२

तो० छं० एक स्याह पचलख लाल एक समंद सहित विशाल
एक संदली पंजाव इक रिंग है कुसुरखाव
एक समंद सिरंगा रंग एक चालि चौधर अंग ॥
एक सूव पचकल्यान एक सबज नीला जान
दीनार पायक जरद नीलादि नारी सरद ॥
एक रंग गात्रा लाल एक स्याह अबलख खाल
एक तेलिया कुम्मेत एक सेरतप्पल तेज ॥
एक तपल नाजी मंज ॥ पुल वारियां करकंज
एक चंचल चीनी अंग । चतुरंग अंग उतंग ॥ ४३

दो० स्याम करन उच्चैश्रवा वास तुरंग बखानि
अवर रंग मिश्रित बहुत चेतन चंद प्रमान ४४

अथ जन्म घोड़े के विचार फला फल वर्णनं

दो० प्रथम पहर जो राति के जन्मै घोड़ी पुत्र ॥ ४४
महा सुफल फल कहत हैं देखत नासै शत्रु ४५
द्वितीय पहर को फल यही निधनी के धन होय
पुत्र नाम वा साल में साल होत्र कहि सोय ४६॥
तृतीय पहर चिंता करैं कछुक दिनन को नाहि ॥
बहुरि करषी ह्वै के पुरुष महरै बेगि उमाहिं। ४७
पहर चतुर्थक फल यही जन्म सुना सुनि गेह ॥
धन आमहै तासु को सुत फल होय सनेह ४८।

अथ दिन बिचार जामा जाम को

वासर जन्मै पुत्र को सुत फल होय सनेह ॥ ४॥
प्रथम पहर मध्यम कहत हैं चित वित नेह ४९
द्वितीय पहर फल अतिनिधि जाकी घोड़ी होय॥
संकट ताको परिय अति बिरलै जानै कोय।५०।
तृतीय पहर मध्यम अधम चौथा महामलीन ॥
दीजै काहू शत्रु को फेरि न बांधै जीन।५१।

अयन बिचार॥ उत्तरायन शुभ फल कहै दक्षिण मध्यम मान्
ताही में श्रावण विषै महा निषिद्ध बखान।५२।

अथ घोड़ा के रदन बिचार लक्षण

प्रथम दंत अस फटिक सम बेद होत गुन क्षीर ॥
बहुरि पीत निडर के भये टूटहिं हैं गंभीर।५३।

द्वैक भये तासौं कहैं ऐसे चार बिचार ॥ ४॥
नेसरि कोरे पुंज गति आगे लेहु निहारि ५३।
तरुन रदन स्याही रहै सप्त बर्ष उनमान ॥
द्वादश ते स्याही तजे लेहु वृद्धि पहिचान ५४
जे असील हैं ठौर के खुरासान मुलतान ॥ ४।
औराकी अरबी कछी दीरघ आयु बखान ५५।
तिन की तैसी आयु है दीर्घ बर्ष प्रमाण ॥ ५।
बदन २ त्यौं जानियें रदन २ पहिचान। ५६।
सो० अधिक दंत हैं जासु के बिरलै बिरलै अश्व ॥
करि बित्ता है नास को धनी धाम रहि नाम के ५७

अथ भौंरी बर्णन शुभाशुभ लक्षणम्।

चौ० अथ लक्षण घोड़ा कहौं। जो कछु शालहोत्र मत चहौं
समझैं पंडित अरु बुद्धिवंत। यातें धारत चौपई छन्द
रंग वैश्य घोड़ा के अंग ॥ बरनि कहत सब चेतन चन्द
कलह सुठारनयन बड़ भारे। थुथरी छोटी अधर हिं कारे
कंठ मिली ग्रीवा अस्थूल। छाती चौड़ी होय समूल
सूधो सूक्ष्म मास न होय। करपद म्रग कैसे शुभ होय
ग्रीवा पूंछ उचास बतावै ॥ कटि लखि चौड़ी पुटी लखावै
छोटे करन स्याम शुभकारे। लम्बोदर कोवा फुलवारे
चासौं चौका आठहु रवंद ॥ जो पावै दानें केसो चंद
भूरि भाव नर को तेहि भावै ॥ जो घोड़ा या विधि को पावै

खालदार घोड़े का स्वरूप
जिस घोड़े पर स्याह खूत पड़ जांय
उसको बुरा जान लेहु

शुतरदन्त घोड़ा
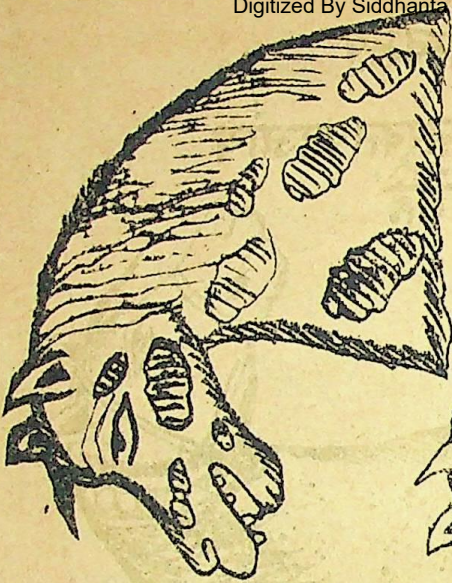
वदांतवाले घोड़े इनको पोपल भी कहते हैं
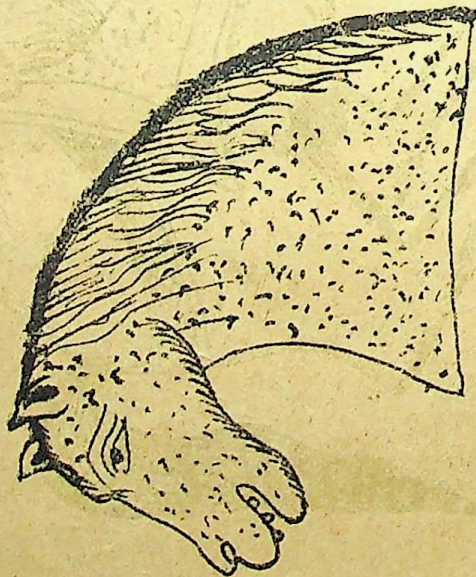
स्याह तालू घोड़े का स्वरूप
यह अच्छा नहीं होता है
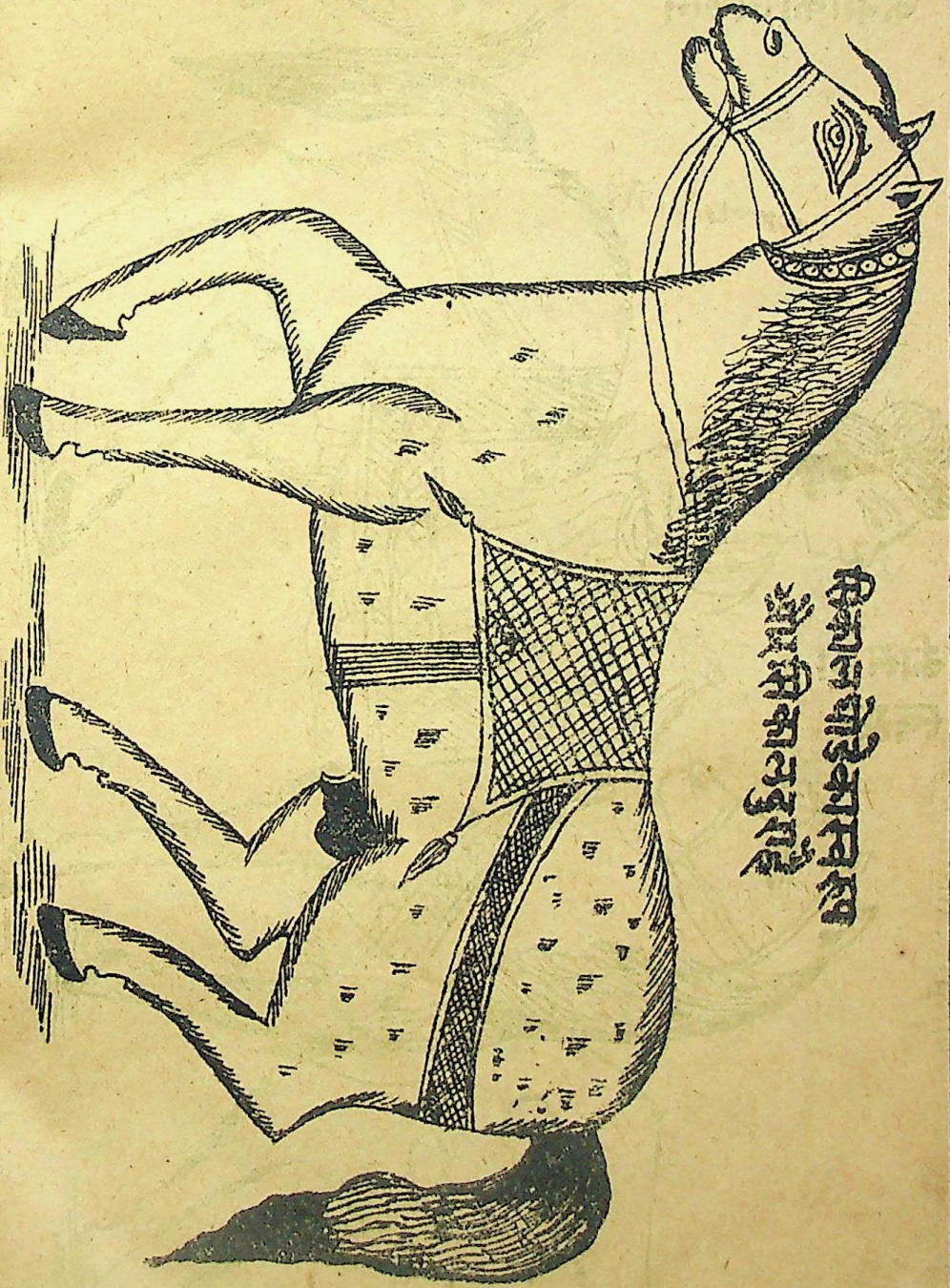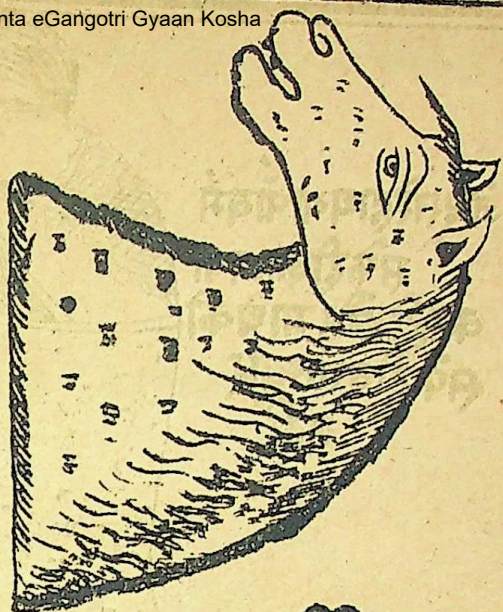
गजदां घोड़े का स्वरूप

सिकाल घोडेका स्वरूप
औरसिकाल दुरा है

गायत्री के पट में
कबरी का निशान
कील का
स्वरूप

कुत्तेकी जीभवालेका निशान

यहसारी जीभ निकाले चलताहै

ओर दूसरे हाथ या पांव में
सफेदी का जवा
बनही और माथे की
सफेदी पर एतबार
नहीं
अर्जुन घोड़ा बुरा है

रकाब की सांपन का मुंह सवार
की तरफ़ है

जब तल में

दुल अकाड़ में

माथके मुंहपर सफ़ेद घावका निशान
भली की अलामत
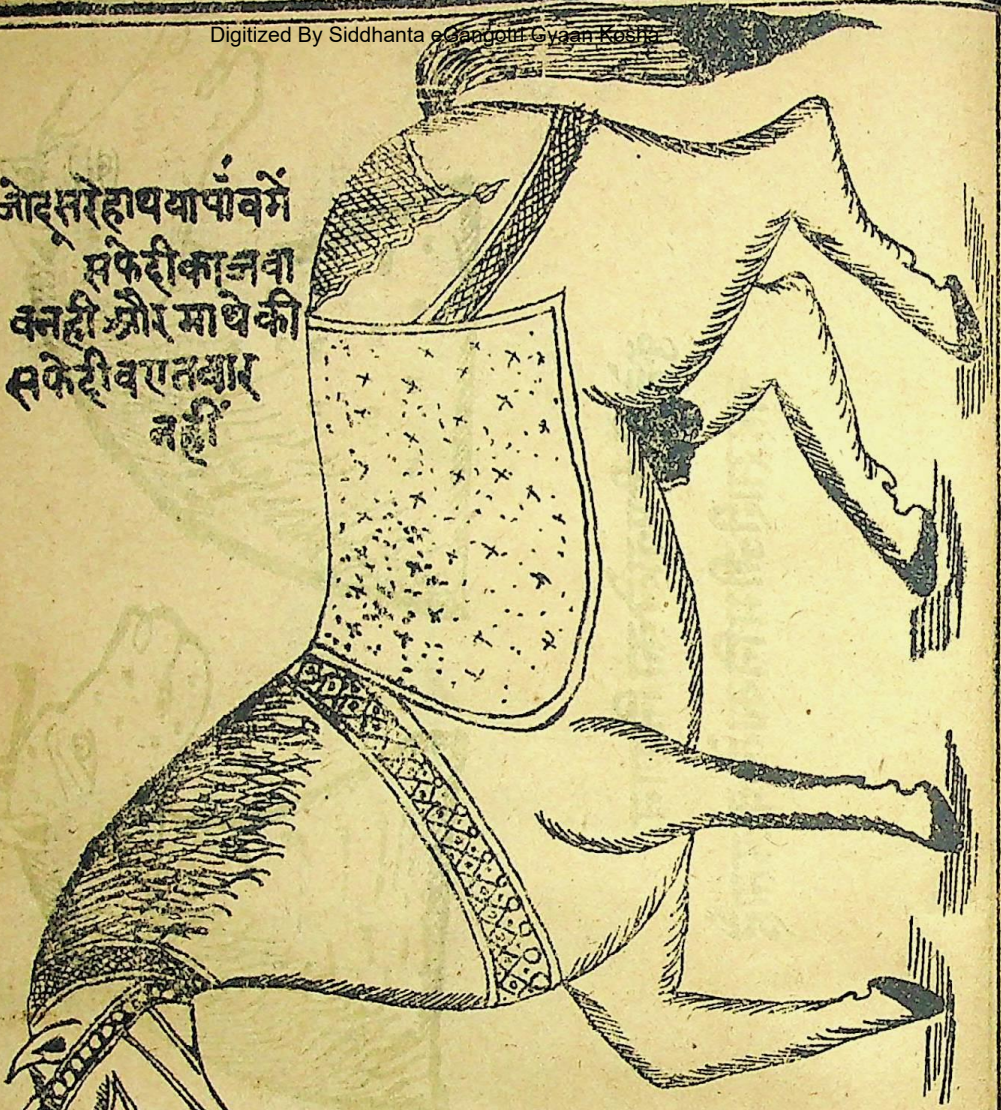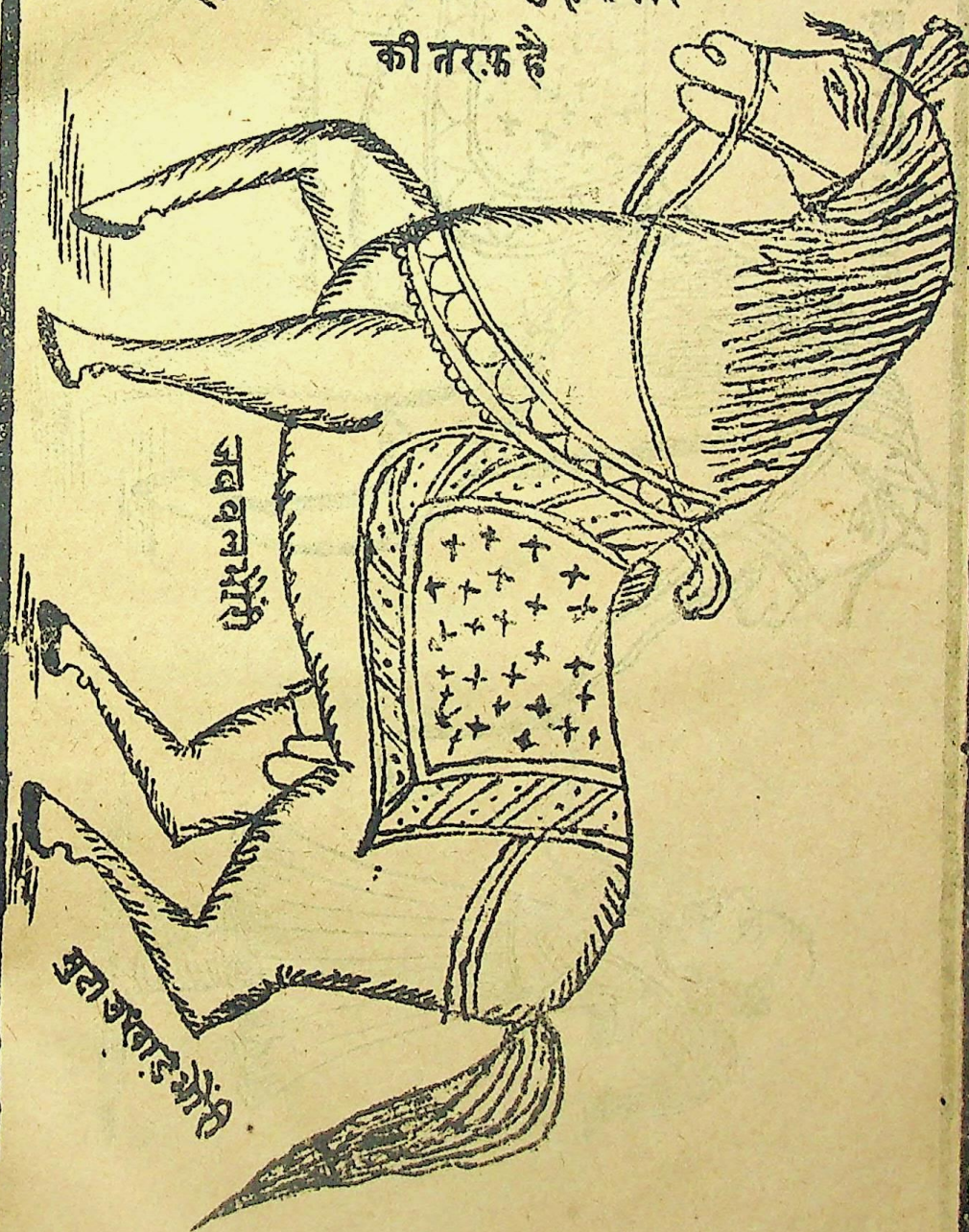
गर्दनफरसींगकाकला
सरखदारसूरत
दूसरी मुख खस
का निशान
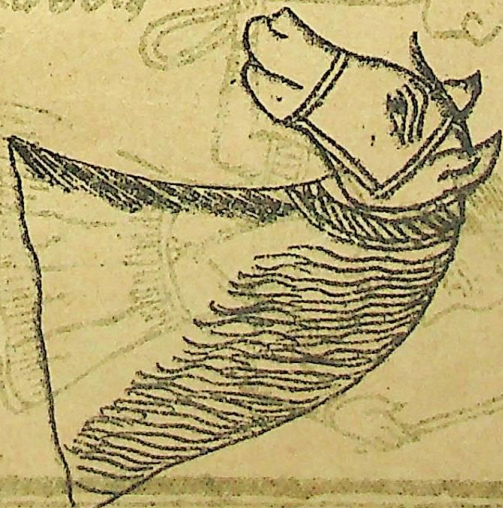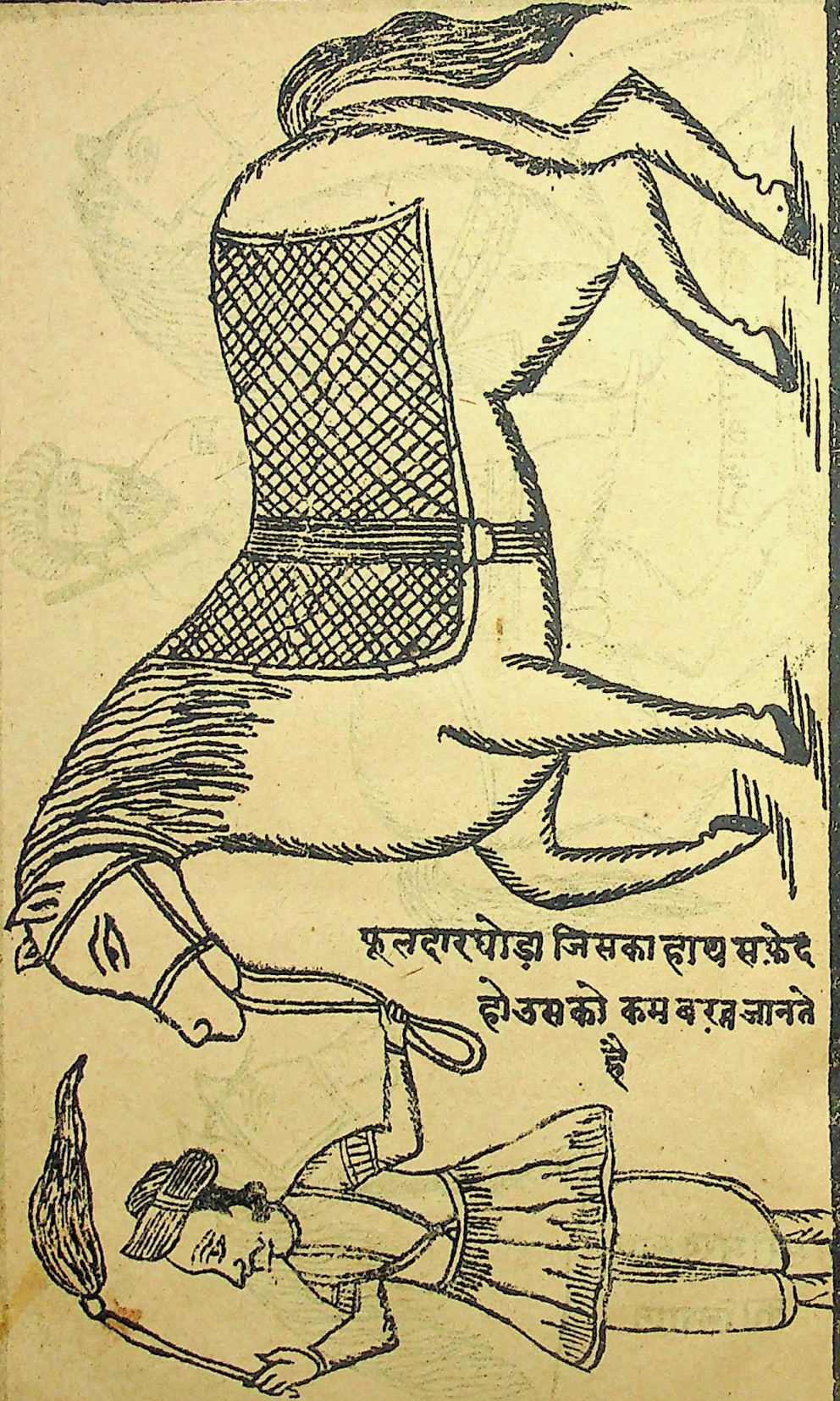
फूलदार घोड़ा जिसका हाथ सफ़ेद
हो उसको कम बख़्त जानते
है

चंपदस्त घोड़े की सवारी
चंपदस्त घोड़े को उस्ताद
बुरा कहते हैं

मूलखभौंरीकानिशान
चंद्रसूर्यकीभौंरियोंकानिशान
गांसूढानपलक
संगमतीनौंभौंरीएक
जगहमें

नाका निशान
देवमनि और कंठमनिका निशान
छत्रभंग का निशान
गले के नीचे की भौंरी
का निशान
पेटकी भौंरीका निशान
साँखूढाल

अगला पैर घोड़े का सफ़ेद हो उस को अर्जल कहते हैं
जिसके दोनों पांव सफ़ेद धान गऊ का बंद बेज़दा
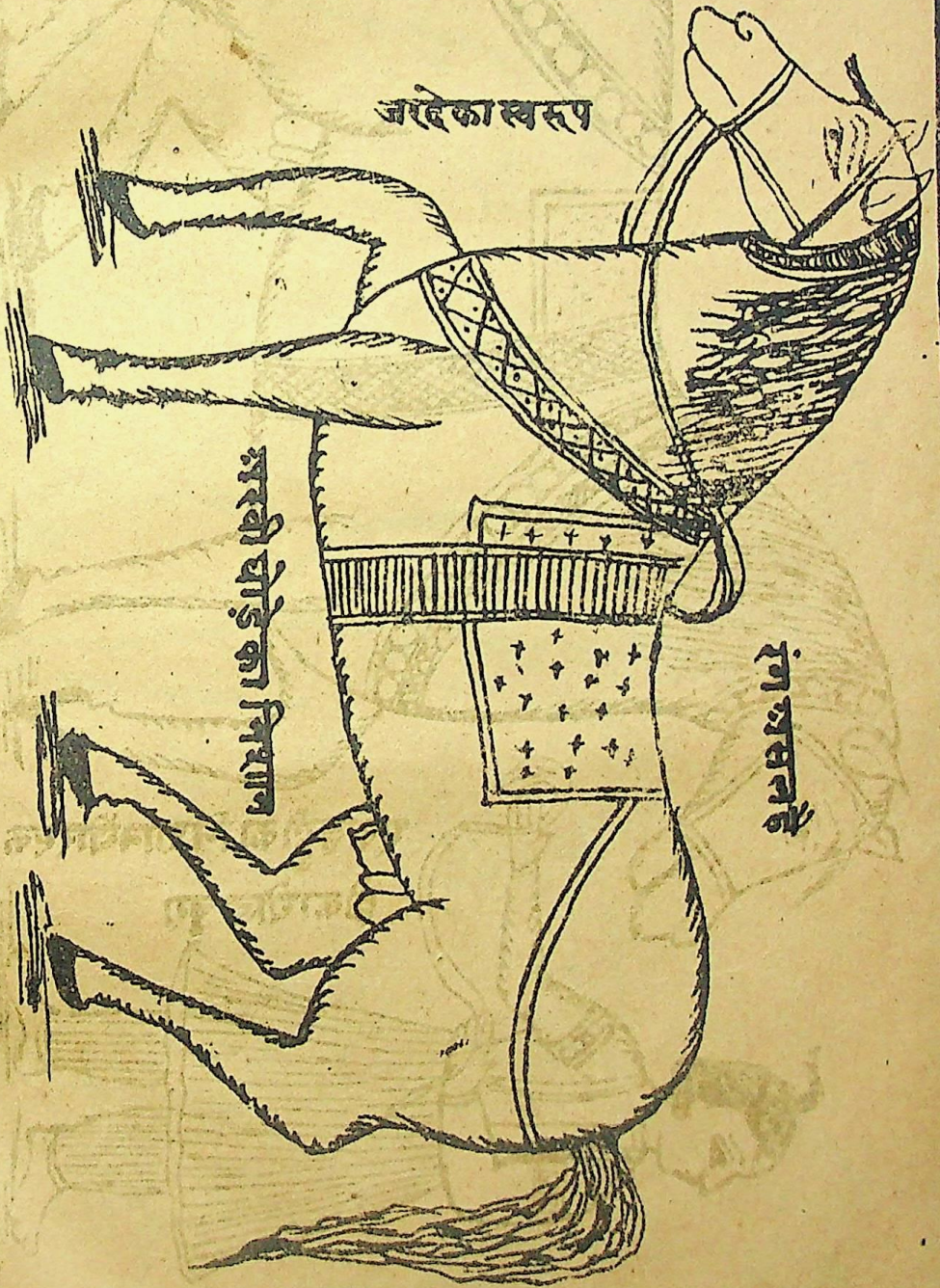
रंग असल है
जरहेका स्वरूप
अरबी घोड़े का निशान

एकहड्डी का निशान और एक
का घोडा हुआ

काने का निशान और काना एक नज़र
रमुती को कहते हैं ऊपर होता है
चकावलि का
निशान
पुस्तका निशान

सापन भौरी का निशान
घोंघ की भौरीका
निशान
तंग के नीचे भौरी का
निशान

शाख़दार की तारीफ़ का निशा
न व कि पहिचान यह कि दोनों
आंखें एक तरह की नहीं ॥

यह भी मुतलयकुम है

पदम घोडे की सवी का स्वरूप उसको
ईरानी मुग़ल्ल बुरा कहते हैं

तीन कानवालेघो
डे का निशान

यह सुशील है
मुश्की मूरत
अर्वी का निशान
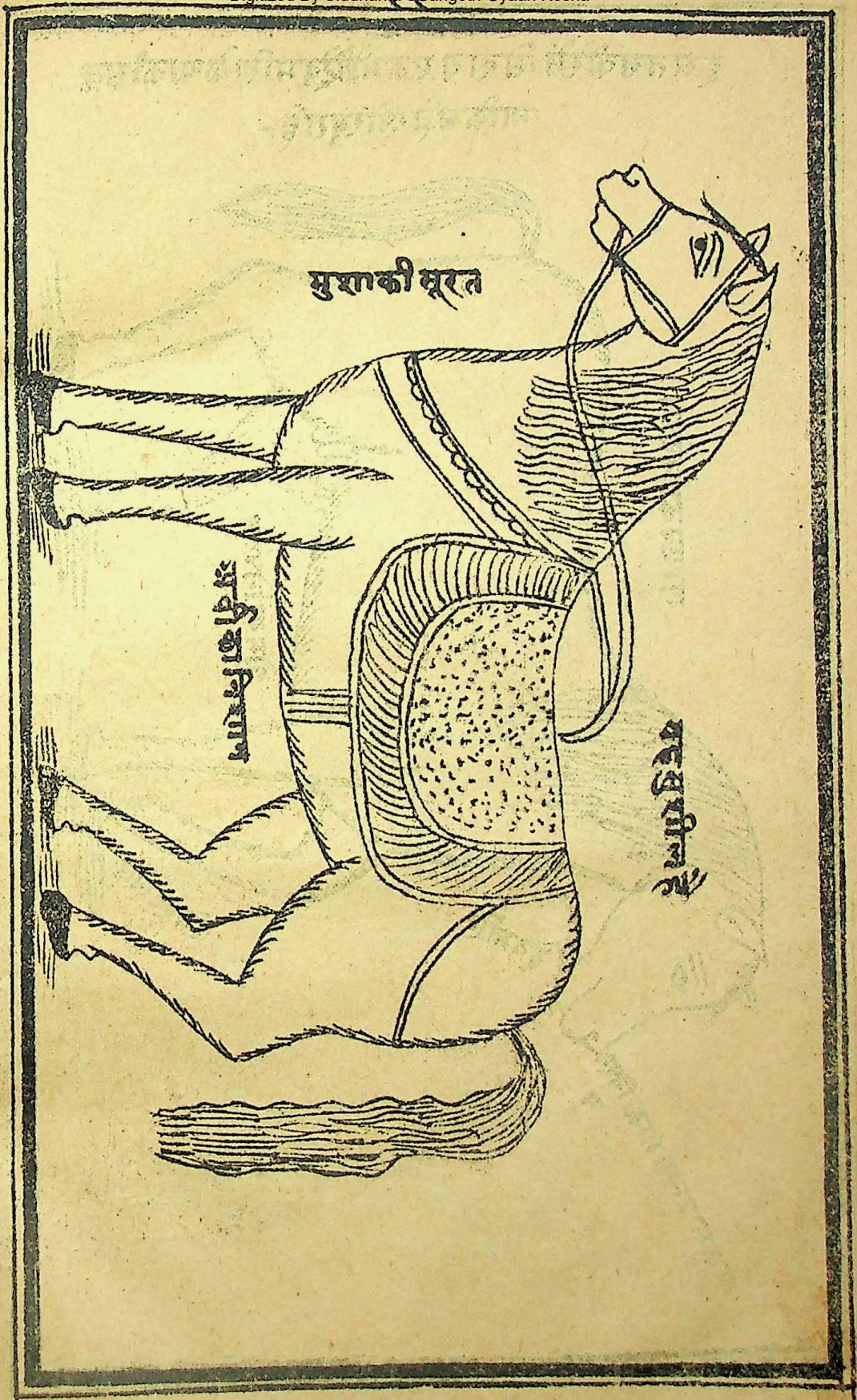
इस तसवीर में सिवाय एक भौंरी देवमणि के बाकी सब
माक़ूल हैं और बुरा है -
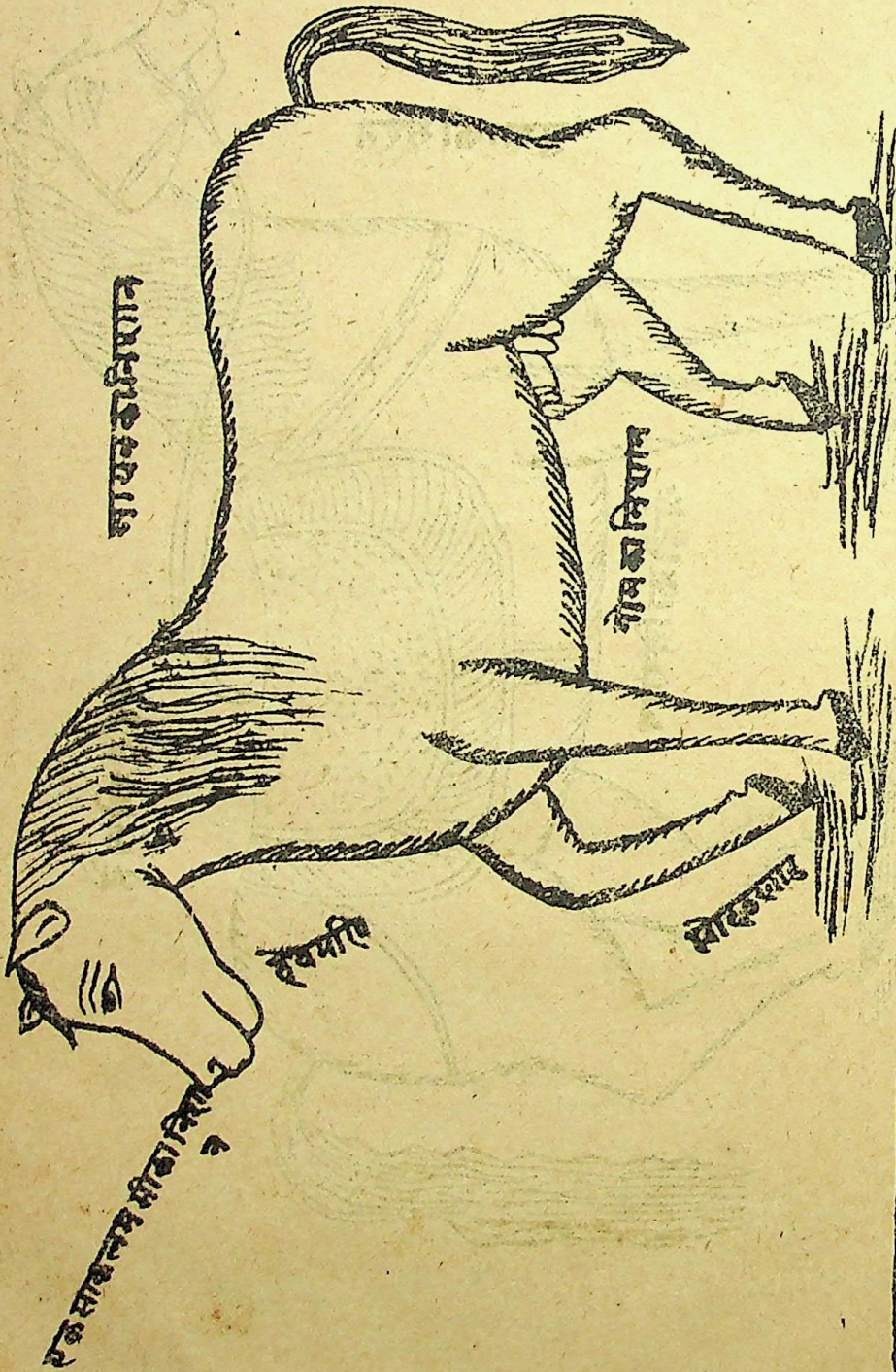
गावदुमघोड़े की सूरत
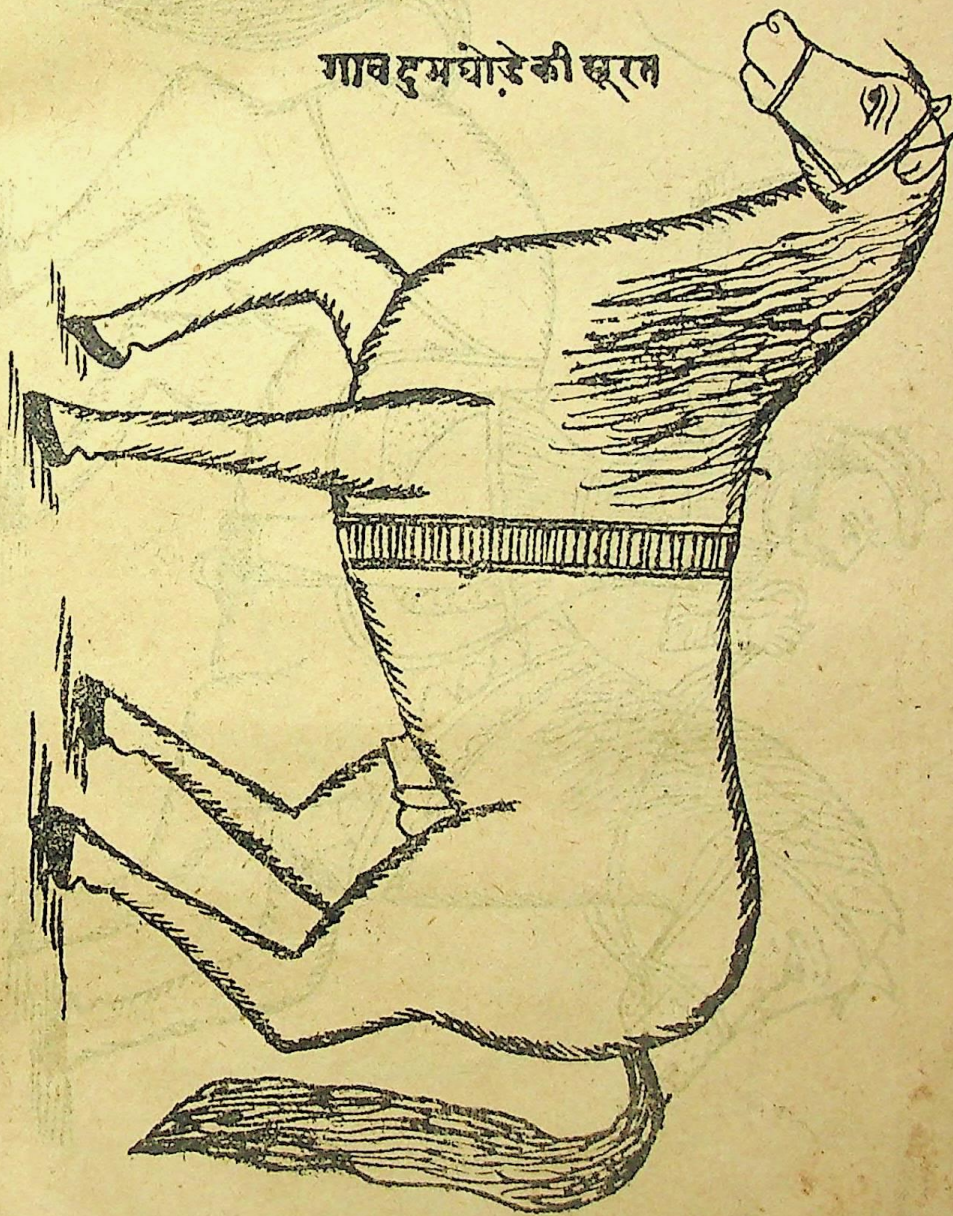
जिस घोड़े का सीना निकल जाता है
वह चलने में खराब है यह घोडे का ऐब है

जिस घोडे के बांए हाथ पैर सफ़ेद हों उसको
मुतल्लेकुलयसार कहते हैं बुरा है-

ग़ाल्त के खोल के मुंह मे हो चूका लटकनयनों का,
मिशान

जिसकी घोड़े की हालत मयीत लिंगके संदन
उसको अरज़ा कहते हैं

मुतदेवन घोड़े का स्वरूप
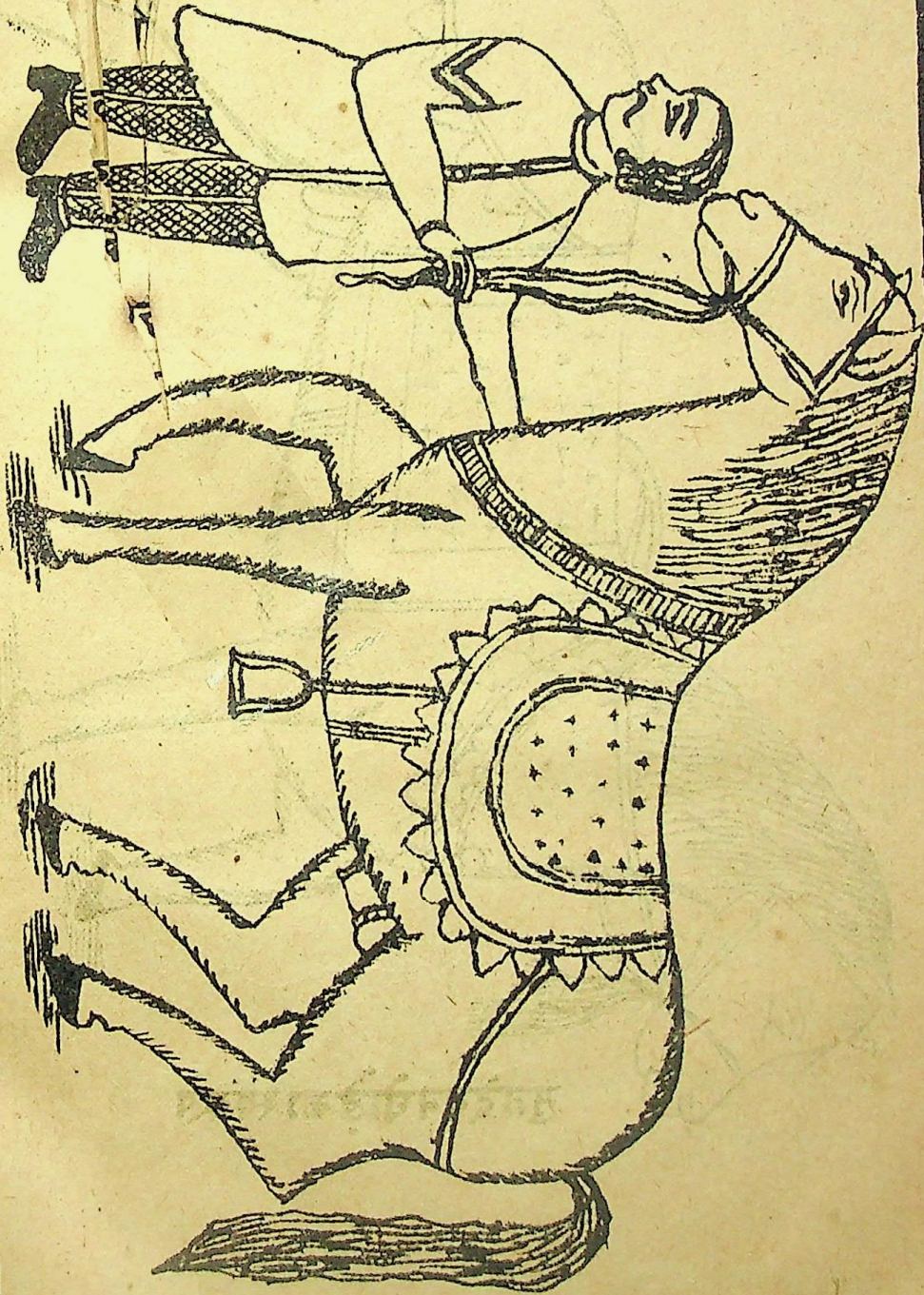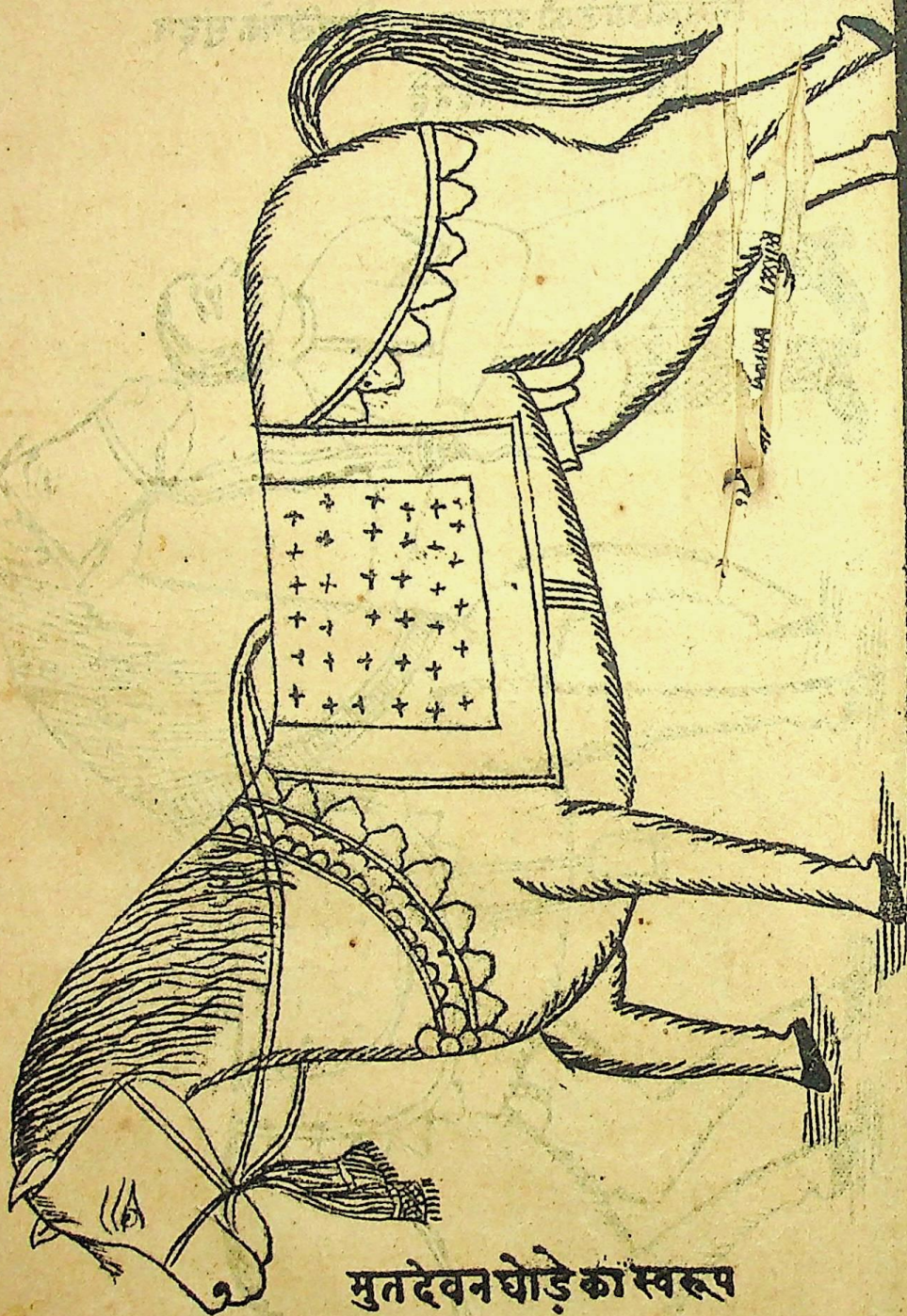
अथ भौरी शुभ लक्षण

अथ भौरी बरणौ शुभ अंग॥ जो शुभ राखी अंग तुरंग
जो माथे पर भौरी लहिये॥ गुणीलोग श्रोगुणमत कहिये
कंध तरे भौरी जो होय॥ उत्तम कहत स्याने लोय॥
अघरस भौंरी जो लहौं॥ शुभ सुखदायक वाहू कहौं
कौसन सौं भौरी जो होय॥ शुभ लक्षण भौंरी जो सोय
पिछले पांवन जंघा ऊपर॥ ज्यौं भौंरी लहिये पद ऊपर
तासमान शुभ बरनि न कोय॥ जो भौंरी पावन में होय
विजय करन ताही सों कहै॥।शालहोत्र जेहि लक्षण लहै
भौंरी चार ग्रीव जो होती॥ तिन को नाम सुनहु उद्योती
दो० चिंतामनि श्रौर जोगमनि होत कंठ मनि नाम।
द्वौ मनि भौंरी श्रादि दै शुभ राखी श्री राम॥ ६१

भौंरी अशुभ लक्षण

दो० भौंरी अशुभ कहौं मदि सोई॥ अंग अश्व के यह विधि होई
आंखिन नीचे ऊपर पूंछ॥ होत मध्य यह भौंरी पूंछ
आंसू डार नाम है ताको॥ खोवै तेहि घोड़ा है जाको
अंग तरे भौंरी जो होय॥ तंग करे स्वामी को सोय॥
मूल करन को भौंरी लहौं॥ एकहु याते अशुभहि कहौं।
जो भौंरी होय सर्पाकार॥ जी दीजे वाहू को डार॥
विधि भौंरी जो नयी समान॥ ताहू डाल देय सो तान
पद्रै तर भौंरी जो परे॥ स्वामी कौं दरिद्री करे॥

हृदय वलि फ़ हृदय में होय॥ सोडाले स्वामी को खोय
मैं जापर भौंरी जो लोय॥ मेदि देय स्वामी को कोय
दो॰ नखत भाल सब काल हो खंड खंड सब दाम॥
और सपेदी अंग नहिं अकरब ता को नाम ६६
एक लक्ष के जाल हैं दूजी नहीं सुपेद ॥ ५॥
अकरब ता को कहत को लीजे उपजे खेद ६७

अथ लक्षण घोड़ा के जथामति शालहोत्र वर्णनं

दो॰ सब औषधि और रोग सब बरणौं मति अनुसार
चेतन चन्द समेत नर लहो सब अंग बिचार।६८
दोनो वेर सुवेर सो विना ताक जो देय ॥ ५॥
जाय बन्द ते होय है रोग द्वेष सब कोय ६६॥

अथ औषधि सब रोग हरण व्याधि नसावन

चौ॰ कब की कद और काराजीरा। काले भ्ररह लदी अरु पीरा
वाय विडंग सुहागो लेय। भूनि फिटकरी तामहिं देय
मिरच कंज अरु पीपरि मूल। त्रिफल अमलतास के मूल
असगंध ता भौंरी तहं देउ॥ अजवायन मेथी अरु राऊ
लेहु पुराने गुड़हि मिलाई। सम करि औषधि एक नलाई
औषधि में दूना गुड़ दीजे॥ आध सेर का पिंडा कीजे
पीड़ा दीजे एक नहार॥ वलग़म ज़हर बाद को चार
वाको होय रूप प्रकारो
दो॰ सोंठ मिरच अरु पान में अदरक पीपला मूल॥

नित प्रति घोड़हि दीजिये रोग हरै तेहि दूर

बत्तीसा मसाला घोड़े का

पीपल लहसन पीपलामूल ॥ कुटकी वायबिडंग कचूर
मिरच सुहागा काला जीरी ॥ अजवायन हलदी अहपीरी
वच गूगल और दही मंगावै। सज्जी जवाखार को ल्यावै
मैथी सोंठि मैनफल लेऊ ॥ बीजक सौंधी तामधि देउ
चीतो बीज पमार विधारो ॥ कालेम्बर जीरो विचन्यारो
सेर एक विजिया को लीजै ॥ हींग टका भरि तामहि दीजै
लेउ सुहागा और फिटकरी ॥ भूंजि खील सौं जो वह करी

दो॰ मानस की खुपड़ी सुफल द्वै पल महिषी सींग
लेय जराय सो राख कर ताहि कर्म ले हींग ॥
टका एक भरि दीजिये भूजि आटा मध्य ।।
रोग नसै सब अश्व के बल पौरुष की वृद्ध

अथ सिंगरफ़ गुटिका प्रारम्भः

सिंगटका एक भरि लेउ ॥ सुम्भल खार तेहि सम कर देउ
त्रिकुटा गूगल और बिनागा ॥ टंक एक भरि तीनो भागा
लौंग अदरक पान सुहागा ॥ करिकें खील सोधविषनागा
झरबेरी सम गोली करौ ॥ सबही रोग घोड़ा के हरौ

दो॰ भूजे आरा मध्य जो गुटिका देय खवाय ॥
नासै रोग सुचन्द करि औरन कौ उपाय ॥

अथ सुधाकरन

मन द्वै गाय दही मंगवावै ॥ छाल सहजनेकी करि ल्यावै
सैंधो साम्हर सज्जी लीजै ॥ सोंचर खारी तामहि दीजै
राई लहसन कारा जीरी ॥ अजवायन हल्दी औरपीरी
वाय विडंग मूसली संग ॥ खील सुहागा करि एक संग

दो० सब को तनक सुकूटि करि राखै धूप धराय ॥
टका भरिय एक दीजिये जब औषधि उफनाय
ग्रीष्म ऋतुहि बचाय करि जो घोड़े को देय ॥
होत सुपुष्ट शरीर तेहि छुद्र शमित कर लेय ॥

औषधि छुधाकरन

सज्जी अजवायन अरु राई। सांभरि वाय बिडंग कटाई
सोंचर सेंधो सांमरि लीजै ॥ बजन बराबर यह सब कीजै
काला जीरी और चौराई ॥ लहसन पीपलामूल सुहाई
मानस की पेशाब मंगावै। कूट पीस तामहिं धरवावै

दो० एक टका भरि दीजिये मोठ महेला माहिं ॥
छुधाकरन अति अश्व को औषधि वा सम नाहिं

औषधि छुधाकरन

नीव वकायन और कसोंदी। तामहि देउ कंजा की वेंदी
तापीछे विषखपरा लीजै ॥ सेर सेर या सब को दीजै
अदरक पात मिरच को देउ ॥ करि गुटिका घोडा को देउ
सात दिवस अश्व जो पावै ॥ छुधा होय अरु मांस बढावै

सो० भूंजे आटा मध्य प्रात समय जो दीजिये ॥

होय सुबल की दृष्टि चेतन चन्द विचार कह

अथ अश्वके मोटे होने की विधि

सेर एक मडुवा मंगवावै ॥ असली सहत भांग भुंजवावै
मेथी अजवायन तहं भांग ॥ टका एक भरि खील सुहाग
गुड़ में सान लेय सेर चार ॥ प्रात सांझ दीजै पल चारि ॥
दो० जायवन्द नहिं दीजिये मोटो देखत होय ॥
साल होन्तयह भाषही बढ़ै पराक्रम सोय ॥

दूसरी बिधि

हलदी सेर आठ लै आवै ॥ सुरभी छीर ताहि भिजवावै
सात दिना तक भीज्यो करै ॥ छांह सुखाय कूटि करि धरै
ताते घीउ नारि करि मलै ॥ वेर एक सोंठा फिरि कलै ॥
सेर पांच मैदा जो लावहि ॥ सबकी मैदा एक करावै
स्वेत खांड को हलुवा करै ॥ दूध डाल करछुली सों चलै
दो० पाव सेर नित दीजिये घोड़े को उठि प्रात ॥
चेतन चन्द विचार कहि मोटो ह्वै है गात ॥

अथ औषधि सरदी गरमी की

सुम्मल खार संखिया लावै ॥ खील सुहागा को करवावै
बछ्नरि अफीम एलुआ धरै ॥ तासों चार चार सब करै
लै दश मासे साजी लोट ॥ तासों अश्व होय बहु मोट
दो० काले तिल के साथ सब गुटिका दीजे टंक
दीजे एक सु प्रात ही रीझै राउ अरु रंक ॥

औषधि ज़हरबादकी

मिरच कसौंदी अदरकपान। चारौं कसौ एकसमान
ज़हरबाद बिषबेलहि हरै॥ कहे सो शालहोत्रमनिचरै

दूसरी विधि

राई मिर्च पीपलैं लेउ॥ टंकटंक भरिसमकरिदेउ॥
हींग सुहागा और अफीम। उन औषधि तें कीजो नीम
ताही भाग लौंग को करै॥ अकड़कड़ा ताही समधरै॥
सोंठ पीपलामूल मंगाई॥ उड़ुक छाल जड़भेजननाई
दो॰ तामहिं गोली कीजिये औरा के परमान॥
सांझ भोर को दीजिये रोग न रहे निदान॥

चांदनी मारेको इलाज

राई मिरच पीपलैलेउ॥ समकरलहसन तामें देउ॥
पीपरि मिरच सोंठ अरु पान। छाल सहजने की समआन
कंजा मैनफल एकतर करो॥ पैसाभरि गोला अनुसरौ
प्रात समै घोड़ा को दीजे॥ रोग घटै घोड़ा को दीजे
सिंह चर्म अजया को लावै॥ घोड़ा को मुख ढ़ाप बंधावै
दो॰ औषधि कीजे जो कहे लागन आवे कोइ
दधिसुत रवि सुत को हनै बज्रारि ननीको होइ

दूसरी विधि

लहसन हींग सुहागा आनि॥ कारीजीरी अरु अजवानि
पीपल मिरच सोंठ भारंगी॥ सैंधो सोंचर साजी संगी।

सींग जलाय राख करिलेउ ॥ तब औषधि के माहीं देउ
मूल जवासा और अतीसा ॥ पान खदाई और अतीसा
विष खपरा और अदरक पान। गोली करो और प्रमान
भूंजे आदा तामहिं देउ ॥ दोय पहर बन्द करि देउ।
पानी तापत अधिक कराई ॥ शीतल करि देउ पिवाई

अधूरा चौपाई

आक धतूरो सेंहुड़ जारि ॥ अजवायन हल्दी ले झारि
और राख में लीजो छानि ॥ अंग अश्व के मले निदान
जागहि बन्द बांधि तेहि राखे। झारहि मंत्र खेद जो मांखे

अथ मंत्र विधि

चंडी चंडी तू पर चडी ॥ आवत चोट करै नवखंडी
हय राखही या राख। थूनी वडेरा राख। दुहाई हनुमंत
बीर अगस्त मुनी की फट फट स्वाहा॥ चौपाई ॥
पाव अनार तीन ले दीजे ॥ होय आखल तो नहि छीजे

इलाज सुम्मल गुटिका का सर्व रोग हरण

हींगुल सुम्मल खार मंगाई। टका टका भरि वजन कराई
गूगल आदो लोंग सुहागा ॥ आनि पैसा भरि एक प्रमाणा
पीपल मिर्च मिला सम करै ॥ अदरक पान के अर्क में धरै
खरल करै दिन तीनि बनाई। गुटिका चना प्रमान कराई
दो॰ गोली दीजे अश्व को भूंजे आदा माहिं ॥
रोग हरै बड़ बल करै मिटै जहर को छांह

अथ औषधि बलघोड़े की जोजकरिगयो है।

प्रथम छुहारे खाली करै ॥ फिर अफ़ीम ताही में धरै
करि कपरौटी भूंजे ताहि ॥ आधो रोज खवावे वाहि
अम्ब अंग खुलि जायतुरंत ॥ दाना घति दीजो बुधिवंत
पानी प्यावे तव सो रोज ॥ मेटे रोग रहहि नहि खोज

दूसरी बिधि

सज्जी साम्हरि बोडी पोस्त ॥ सालिम गुड़ सावन दै दोस्त
टका टका भरि औषधि लेउ। पाव सेर गुड़ तामहि देउ।
आटा भूंजि के देउ मिलाय ॥ सांझ प्रात अम्ब जो खाय
अंग २ खुलि नीको होय ॥ दाना देउ न साते दोय॥

इलाज तीसरी विधि

सांभरि लह सन टंक पच्चीसा गोली करि दीजे दिनवीस
दाना मेदि मसाला देउ। पानीतप्त नित्य करि लेउ।
आधी प्यास पिवावे पानी ॥ देहि मसाला यह सुन ज्ञानी
हल्दी सालिम गुड़ सब लेय। प्रात समय घोड़ा को देय
सांझ समय वह गोली देय ॥ घड़ी चार काइजा करिदेय
नीको होय न लागे वार ॥ औषधि शाल होत्र अनुसार

अथ छातीबंधकी विधि लिख्यते

गूगल टका एक भरि लेय ॥ हींग सुहागा खील करेय
अजवायन सोंचर मिलवाय। घोड़ा को दे प्रात खवाय
हींग सुहागा मासे दीस। औषधि वजन बराबर पीस

दानामेदि मसाला देउ॥ सात दिवस महं नीको लेउ

इलाज नाखुना की विधि। चौ०॥

मिरच दक्खिनी बदलेउ॥ भांग सुहागा तामहिं देउ॥
सेंधोनोन फिटकडी खील॥ गूगल वजन बराबर लेउ॥
कटुक तेल महं खील कराई॥ नाखूने पर देउ लगाई
रोग मिटहि करि नीको होय॥ चेतन चन्द सब व्याधि यहै

औषधि मासवृद्धि। चौ०॥

अजय पाल अरु हरिया थोथा॥ सम्भल खार सज्जी औ मोथा
नीम पात की टिकिया करै॥ कडुवे तेल मध्य सों धरै॥
टिकिया काढ़ औषधि ताय॥ नीचो खल सों खरल कराय
लेपन करै खोलि रंग देय॥ हरै रोग नीको करि लेय

अथ बादी खाये का इलाज। चौ०।

काला जीरा गेरू लेय॥ सोंठि कचूर हि तामहि देउ
गोबर के रस खरल कराय॥ क्षीर में मथि के अग्नि लगाय
हरै रोग नीको व्है जाय॥ यामें कछु संशय नहि लाय
गरम होय जब लेपन करै॥ बेजा रोग अम्ब को हरै॥

दूसरी विधि

दो० ढाक सुमन जो औटि कें निज प्रति बांधे कोय
शाल होन इमि उच्चरै बेजा रोग न होय॥११

अथ औषधि खारिश की

बरुचि गंध कमे नासिल आनि। वायविडंग चोख लेजानि

कूटि पीसि केइकतरकीजे ॥ पानी में सब निशिभरिलीजै
मात मथे ले कड़वे तेल ॥ घोड़े के अंग मर्दन मेल।
घटिका तीनि घाम में राखै ॥ माटी मलि धोवेहरि साखे
रोगन में जो धोय खवावै ॥ फेरि खारिश्त होन नहिपावे

अथ इलाज अग्नि वायु का

लोनी घृत सेर इक लेय ॥ ता पाछे औषधि करि लेय
अरु मिर्च पैसाभरि लेउ ॥ मधुमाखी ले माटी देउ ॥
पे माटी लीजे मुल्तान ॥ तेल डालि कड़वे सानि ॥
अंग अंग घोडा के मले ॥ पूंछ अंग बछरि यह कले
उड़द उसेयनीर मधि धेरै ॥ सोलेपनके राखे अंग ॥
अहि काले की कांचली लावे ॥ मासे चारकनक मिलवावै
रोटी करके घृतमें सानि ॥ घोड़हि देउ प्रातही आनि
याविधि से जो नित प्रति करै ॥ अग्नि वाय घोडा को हरै

दूसरी विधि चौपाई

फूलाहार सेर दश लेइ ॥ खंडखंड करि दूध में देइ ॥
सात दिवस घूरे में राखे ॥ दिवस आठवें बाहर राखे
सेर सेर घोडा को दीजे ॥ तापीछे औषधि यह कीजै ॥
महिषी सुत को सींग जरावे ॥ छाछ मेंड की और मथवावे
तीन टंक मैनसिल को लेउ ॥ करि मैदा ताहियमें देउ ॥
घाम तेल में मथे बनाई ॥ घड़ी एक यामें मथवाई ॥
पीतम्रतिका में अनुवाई ॥ अग्निवायु को सेत मिटाई ॥

दो० छाई लेकर ताल की जब को आटा देय
सात दिवस के देनही घोड़ा नीको होय।

इलाज ब्राह्मणी रोग को ॥ चौपाई

पट सन जारि संख सों करै ॥ साम्हरि तीन टक तहं धरै ॥
दोऊ सीरा मथि लग वावै ॥ चार घड़ी पीछे अन्ह वावै
सनमुख मुदा संख मिलवावै ॥ सहित संग में देह लगावै
सात तीन दिन करै जो कोइ ॥ केश बड़े ब्रह्म नी को खोय

औषधि बरसायत की चौपाई

बरसाती मोम सो मलै ॥ मलत मलत लोहू जब चलै
कटुक तेल ले आगे धरै ॥ तामहिं और मोम को करै
रंजक की दारू को वावै ॥ सेंदुर सहित वाहि मिलवावै
मल्हम करै हरै बरसायत ॥ सात दिवस लागहि दिन रात
दिवस सातमें नीको होय ॥ बरसाती डौराह खोय ॥

इलाज विषवेलि का दुष्ट हरण । चौ० ।

प्रथम मिलाये की विधि लेउ ॥ एक एक बढ़ि सोतक देउ
सोतें उतरि एक जब आवै ॥ जब यह मल्हम को बंधवावै
पात बबूल नीब को लीजे ॥ मेंढा सिंगी सहित भुजीजे
मुरदा संख सुहागा लावै ॥ छेरी छीर खरल कर वावै
खपरा परी सेंदुर सानहि ॥ कडुवे तेल मोम को आनहि

दो० पहिले लोहा लीजिये चार वन्द को खोल
पीछे औषधि की बा विधि सौं सब तोल।

मवको खरल करै धरध्यान ॥ मल्हम कीजै या विधजान
अग्वमंग की होजोधरै ॥ निश्चयजान वेलको हरै ॥

इलाज हड़ाजानवाकी विधि

दो० चारौं बंद दे दाग जो जानैयह रोग है ॥ १॥
चेतन चन्द सो लाग औषधि कीजे मासहै

औषधि चौपाई

मानस की खुपडी को लावै ॥ तप्त अग्नि सों ताहि जरावै
महिषी मेंढा सींगहिजारहि ॥ जोऔषधि समतामेडारहि
त्रिफला त्रिकुटासाजीराई ॥ जारिसुहागा सीलकराई ।
कालेष्वर और कारीजीरी ॥ अजवायनहल्दी और पीरी
गुड़सें गोली या विधि करै ॥ टंकटंक सबके थान धरै ॥
उलहत रोग मोरी रितु करै ॥ सकल रोग घोडा के हरै

अथ घोडाकेपेशाब बंदका इलाज

प्रथम सेरपानी को करै ॥ जाकी अमिली को अनुसरै
घोड़ाको दीजे भरि नारि ॥ तुरत देहिं पेशावहिडारि

दूसरी विधि

खीरा ककरि बीजमंगाई ॥ पीसि नीरमें देहि पिवाई
घर गडरिया के लैजाय ॥ सूंघत वायु तुरतखुलिजाय

तीसरी विधि

दोऊ करन सों मिरचैं पीसि ॥ डाले नौन संगदुइबीस
तापीछे यह बाती कीजे ॥ नारि मध्य घोड़ा को दीजे

मिर्च दकिखनी सांभरिनोंन॥ गरघोडा की विष्ठा तीन
बाती करिके देय चलाय॥ छूटहि मूत्र रोग घटिजाय

इलाज लीदबन्दपेशाबबातहरन

कारीजीरी मिर्च मंगावे॥ खील सुहागा की करवावे
सज्जी कुटकी राई लेय॥ हींग टकाभरि तामहिं देय।
अजवायन सम भाग कराई॥ अदरकरस सौं गोलावंधाई
एक छटांक अश्व कोदीजे॥ वाईरोग गुलम हरि लीजे

दो० सोंठि घीउ संग सानिकें गुदामध्यदे फार॥
लीद करै घडी एक में नाहि नलागै वार॥

इलाजघोड़ाको उदरसोधनजुलावविधि

दो० कड़ुवा नोन अोर सोंठ ले असंगधसहित मिलाय
काढ़ादीजे भाग सम उदर व्याधिवहि जाय॥

अथजुलाब

दो० राई खारी दही सम सेर अर्ध जो लेय॥
व्याधिउदरकी गिरपड़े सकल दोष हरिलेय

अथ इलाज प्रमेहको

दो० अश्व प्रमेह महाकठिन जो नितवीतेमेर॥
ताकी औषधि कहतहैं नीकोविश्रुकरेय॥

अथ औषधिचौपाई

नागवेलिकीजड़ को लावै॥ कदली जरसमभाग करावे
तवासीरसुरमाअदचीनी॥ मींगी बिनौरासमकरिलीनी

गायदूध द्वै सेर मंगावे ॥ सात दिनन दीजे नेहि खावे
नासै रोग दुष्ट बहु होई ॥ औषधि करै जो या विधि कोई
बैठहि उठहि लेट लैजाई ॥ मुख बोलै गरु ग्रास न खाई
मूल कुधा अनीता को नाम ॥ औषधि करो होय सुख आराम
छाली मकरा और पलास ॥ बीज करंजन हींग जवास
सेंधो सम करि देय मिलाय ॥ गोघृत संग देय पिलवाय
मूल मिटै दीजे दिन दोय ॥ नासै रोग भूष बहु होय ॥

अथ वाय मूल को लक्षण

दो॰ गिरै धरनि पर दम करै आंख मूंदि रहि जाय
वाय मूल वासों कहैं ता को यही उपाय ॥

खुरासान बच कूट मंगावे ॥ दंती छालि सम सेंधो लावे
हींग सुहागा सम करि लेउ ॥ पाषाण भेद लै तामे देऊ ॥
सकल कूटि करि मैदा कीजे ॥ माखन सानि सम्ब को दीजै
देतहि नीको होय बनाय ॥ सकल व्याधि वा की बहि जाय

अथ प्रवृत्ति मूल लक्षण

दो॰ हींसे झाकहिं फूंकहिं गति बोले बारम्बार
मूल प्रवृत्ति बखानिये ता को यह उपचार

इलाज चौपाई

वायविड़ंग हींग सम लेउ ॥ मद दारा खजराय के देउ
बच और सोंठि सुहागा लीजै ॥ नीर रेह के शान सों कीजै
नीको होय व्याधि बहि जाय ॥ यों या विधि सों करौ उपाय

अथ शिलह वृत मूल लक्षण

दो० सूंघै छाती अम्ब जो गिरहि धरनि बहु वार
मूल तासु पहिचानिये कीजे यह उपचार

हींग सोंठि सेंधो सम लेउ ॥ सिरका छानि दही में देउ
ताती नीरम्भूल लखि दीजे ॥ यह विचार पूरण सुनि लीजे
लंघन करहि हानि नहि होय ॥ दाना दिये व्याधि करै सोइ

अथ भ्रम मूल लक्षण

दो० भूंख घटै और लदै अति अरु चितवै चहुं ओर
भ्रम मूल तासों कहैं वाहि न दीजे खोर ॥

अथ औषधि चौपाई

हलदी हींगुल देवै साखी ॥ सोंठि सुहागा खील सुभाखी
बजन समान पीसिके देउ ॥ हींग सुहागा थोड़ा लेउ।
भूंख बढ़ै भ्रम भूलै नासै ॥ बलबीरज बहु ताहि प्रकासै

अथ ऊर्द्ध मूल लक्षण

मुख घोड़ा के पानी झरै ॥ अधिक पसीना बहु विधि करै
लोटै नहिं बैठे नहिं भूम ॥ नयन मूंदि रहै भूमे भूम
ताकी जो यह औषधि करै ॥ अष्टादश भूलन को हरै

अथ औषधि

सो० पीपल पीपला मूल बीजक सोंठी मिर्च लै
सोंठ बैतरा मूल गौ छीर सों दीजिये।१४४।

रोग नसहि जो दीजहि प्रात ॥ भूंख बढ़ै मोटो होय गात

दाना की तेहि नाम न लेइ ॥ तप्त नीर सीरो करि देइ

अथ इलाज घोडा के सुंम वा ऐड़ी फटे की

राल मोम गुड़ गूगल लेय ॥ लोध खास सेंधो सम देइ
पीपल गौ का घी मंगवावे ॥ सब की मैदा पीसि करावे

दो० काले तिल को तेल लै सब को इकतर आनि
आंच अनल सों तप्त करि सुंम में भरैं निदान
कपड़े सौं पग बांधिये ऊपर देइ के पात ॥ २ ॥
नीको होय जो सुंम महं मानहु सांची बात

अथ घोड़े की तत्य की विधि

वाय पित्त कफ़ की अधिकाई ॥ जो घोड़े को उठै विकाई
ताही दिन तुम औषधि करौ ॥ जो कछु साल होत्र मत्ति च्चरौ

दो० अरुन नैन धौंकी बजे टापे पानी होय ॥ ३ ॥
बित बिकार सो जानिये औषधि महं कहं दोय

मोथा पीपल और गिलोय ॥ मिर्च लौंग जायफल होय
अदरक पान सोंठि सम लेइ ॥ सात दिवस यह औषध देय
नीको होय व्याधि को हरै ॥ शाल होत्र यह बिधि उच्चरै
जो सत कार वो दाना दीजे ॥ सात दिवस महं नीको लीजे

अथ औषधि कफ ज्वर की

दो० भारी भयो होय अति नैन चुवै बहु नीर
पीरो कफ़ या कर बदन होय वाहि के पीर

खैर सार अरु गौ का घीउ ॥ अग्नि पांच सो तप्त कराउ

हाथ पांव घोड़ा के मले। तापाछे यह ओषधि करै
ओषधि सोंठि कटाइये संग॥ पीपला मूल कटाई संग।
सोंचर सेंधो हींग मिलाय॥ ओषधि वजन बराबर लाय
हींग सुहागा मासे चार॥ भूंजि अग्नि महं दीजे डार॥
टंक तीनि भरि दीजे हि रोज़॥ मेट हि अंग रोग के खोज

अथ काढ़े की दूसरी बिधि

दंती जरभारंगी आन॥ नागरमोथा कुटकी मान
नीव छाल अस गंध देवदार। चीता मिर्च लेउ पुनि ग्वार
अष्ट विशेषी काढ़ा करो॥ सहत टंक भरि तामें भरो
मानएक देवे नित वाहि॥ रोग हरै काढ़ो देय प्याय॥

अथ अश्लेष्मा ज्वर लक्षण

तप्त शरीर अश्व को होय॥ श्वासा सो जासुन दृग होय
कफ डारै मुख तें अधिकाय। कांखे बदन घास नहि खाय
पीपल सेंधो घीउ मिलाय॥ नास देय घोड़ा को आय
तापाछे यह काढ़ा करे॥ अश्व अंग की पीड़ा हरे।
वाय विडंग अंड जड़ लावे॥ सोंठि कचूर गुरु मिलावे
अष्ट विशेषी काढ़ा करे॥ सात दिवस महं देव निहरे

अथ सन्निपात ज्वर लक्षण

तप्त शरीर अश्व को होय॥ हींसे टापे घोडे सोय॥
स्याम मचाएड चले लेहि अंग॥ सन्निदोष ज्वर ताके संग

ओषधि चौपाई

वाय विडंग ज्वर और पोस्त ॥ जड़ अरंड कारे की दोस्त
अष्ट विशेष देहि तेहि काढ़ो ॥ सन्निपात ज्वर नासे काढ़ो
गुल्म अग्नि वाके जो परै ॥ तापाछे एक औषधि करै
सोंठि पीपरा मूल मंगावे ॥ सहल खाय गुड़ संग खवावे
वजन बराबर घोड़हि देउ ॥ गुल्म व्याधि वाकी हरि लेउ
वही बातज्वर की अनुसरै ॥ या सम ज्वर की औषधि करै

अथ दूसरी विधि

मोर पाल का और अंजीर ॥ खाड सहित मिश्री और क्षीर
वजन बराबर सब कुछ लेउ ॥ गाय दूध मह घोड़हि देउ ।
नासे रोग व्याधि सब हरै ॥ शाल होत्र या विधि अनुसरै

औषधि मस्तका शूल लक्षण

सो० लक्षण त्रिविधि विकार वात पित्त कफ जानिये
शाल होत्र अनुसार । औषधि कीजे देखि इमि

जो शीतल घोड़ा को पिवाई ॥ रुधिर चलै नकुवन में आई
पित्त दोष पहिचानो ताहि ॥ औषधि कीजे या विधि आहि
आस और उसीर मंगाई ॥ लेपन माथे पै जो कराई
नास देय त्रिफला के नीर ॥ मेटि लेउ या विधि जो पीर ।

अथ मस्तक शूल लक्षण

भोहन पर जो होय अभास ॥ देउ कराई कोनेहि नास
पीरो कफ पानी सो झरै ॥ जो या विधि सों औषधि करै
सोंठि सुहागा सोंचर नोन ॥ मिर्च पीपलै ता महि देउ ॥

वजन बराबरि दीजहि वाहि ॥ नासे रोग मूल वहि जाय

अथ मस्तका मूल वात लक्षण

भारी सिर अरु होय अमास ॥ त्रिकुटा कायफल को देनास
तापाछे यह औषधि करै । तो घोड़ा को वेदन हरै ॥
कुटकी वायविडंग कचूरा । सोंठि सुहागा पीपलमूल
वजन बराबर भेदा लेय ॥ मूंजहि आटा सब करि लेय
प्रात सांझ घोडा को देय ॥ सकल व्याधि वाकी हरि लेइ

अथ मुखरोग की विधि चौपाई

लेपन करै पकै मुख जासु ॥ मुख ते पारन आवै घास
कफ़ गिरै वाढ़ जासु होय ॥ स्यामा रंग मुख माही सोय
औषधि सुनि मोहि पाहिं
कुकरौंधा ताही को रंग ॥ साम्हरि सेंधा मिरचै संग
छाल फेरि मलै दोउ जोड़ ॥ नीको होय तुरतहिं घोड़
तालू मध्य दंत जो होय ॥ काम नाम भाषै सब कोय
वाहि निमित यह औषधि कीजै ॥ घोडा घास खात नहि बीजै
केहल्दी मिरचै अरु नोन ॥ के घृत गाय सहित समदेन
तुरी दंत मिल दीजै ताहि ॥ ततछिन नीको लीजै वाहि
जो सब मुंह सूजै घोड़ा को ॥ होत विकार वात जोरा को

इलाज चौपाई

जवाखार अजवायन राई ॥ सरसों सौंफ हरद मिलवाई
लहसन मिलै वजन सम करो ॥ जल सों पीसि अग्नि में धरो

गरम सीस मुख देउ चढ़ाई॥ सेंको नित रोगवहिजाई

अथ कर्ण रोग चौपाई

श्रोणित चुवे श्रवण जो जाके॥ के आमास होय ज्वर ताके
भारहिं से रुरू के कंपे अंग॥ ताहि जानिये वायप्रसंग
ताकी औषधि देय निधान॥ तिलहलदी सोंसेंके कान
लहसन हलदी हींग मिलाय॥ आकपत्र मांरू धरवाय
कपरौटी करिदीजे आग॥ कांचो रहे जरहि नहिलाग
ताहि कूटि करि अर्क निकारि॥ घीउ सहित दीजे मधिडारि
सानि सानि कानन में भरे॥ निश्चय पीरआर्त्तकी हरे॥

दूसरी विधि चौपाई

जो आमास होय अधिकारी॥ तौ दालमल्लर सो निकारी
सेंधो कांजी सोंचर आनि॥ ओलीजहि पानी में सानि॥
ताको पानी कान में भरे॥ सेंक करे पीड़ा सब हरे॥

नेत्ररोगहरण विधि

औषधि नाखूना की होय॥ नीको होय करहि जो कोय
हल्दी सोंठि सहित घृत सानि॥ बांधे ऊपर तें नेहिआनि
सीत वात तेहि दे हि उतार॥ मुंहजो कूटि बहे नहिवारि
हल्दी सोंठि सहित घृत सानि॥ बांधे ऊपर तें नेहिआनि
सीत वात तें देहि उतार॥ नीको नेत्र होय अधिकार

अथ नेत्रढरका की विधि चौपाई

सरसों पीली मूल अरंड॥ गोली बांधि करै जिमिपिंड

ताको अर्क खैंचि सब लेय॥ तामें दिरा औषधिसमदेय
हार पेर और ग्वारमिलाय॥ कनेर फूल सहित पिसवाय
सबको एक करि अर्क निकारै॥ सांझ भोर दृग छींटा पारै
नीके होय वायदे वन्द॥ ख्याल होत कहै चेतन चन्द

दूसरी रोग हरण

चन्दन सोंफ तगर को लावै॥ बकरा की पेशाव मिलावै
रस इनको जब लेइ निकार॥ तामें घीउ बसन मढ़ डारि
भरे नेत्र में रोग नसाय॥ घोड़ा नीको होय बनाय॥

अथ फुल्ली हरण

सोनामक्खी वन्दन कीजे॥ लेय फिटकडी तासमदीजे
सिरस बीज और चीन्ही लाय॥ मिर्च कच्चूर देय मिलवाय
मैदा करि अंजन दृग भरै॥ नीको होय फुल्ली को हरे

दूसरी फुल्ली हरण विधि

रस अंजन रत अंजन लाय॥ विष खपरा को रस मिलाय
मधु सों पीसि नयन में भरे॥ सात दिवस फुल्ला को करे

इलाज दृग सफेदी का

पीपल सेंधो सहित मिलाय॥ विष खपरा को रंग मिलाय
दैकरि मूंदि नयन दे ताहि॥ नीको लीज हितु रत हिं वाय

अथ दूसरी विधि

दो॰ सावन मिर्च मिलायकर लीद रंग सों सानि
घोड़ा के अंजन करो मिटै रतौंधी खानि॥

सबघोड़ा मैं कहौं जितने रोग बिचार ॥
तिनकी औषधि हौं कहौं शालहोत्रनिर्धार

सो० भाषत चेतन चंद शालहोत्र कीगति निरषि
सुषपावहिं मम वृन्दकुशलसिंह महराजप्रभु

घोड़ा की छाती होय भारी ॥ लहि नहिं दीजे जोअबटारी
हाफ तदाम खील पै तास ॥ करै सकल रोगन को नास
जो छाती तें लोहू लीजे ॥ सो विचारया विधिसों कीजे
प्रथमघड़ी यह राह चलावै ॥ तापाछें रंग छीरखुलावे
गरम मसाला दीजहि ताहि ॥ क्रम सों दानादीजे वाहि
उष्मनीरअचवन कोंदीजे ॥ छाती खुले जो मन यंलीजे

अथ मसाला चौ०।

हालम हलदी सोंठिसुहागा ॥ सोंचर सावन साजी पागा
राड़सौं मिले वजन समलेय ॥ छाती खुले मान यह लेय ॥
टंक सुहागा तामहिं दीजे ॥ वेलि गिरी की औषधि कीजे
बन्दवन्द जो करहु सही । यामें निश्चै है सवही ॥

प्रथम मसाला बिधि

दो० गूगल पैसा दोय भरि गोमूत्र सों देय ॥४॥
जकड़ो अम्ब खुलिजात है यह सांची सुनिलेय
साभरि लह सन भागकरि दीजे नित्त खवाय ॥
जकडो नीको होत है पै लंघन कर वाहि ॥
तप्तनीर नित दीजिये दाना दहि वताहि ॥

वह औषधिको नेम नीको लीजै पाहि

अथ इलाजवातमूलका

भूमि गिरै यह दम करै फिर उठहि मरोर॥
ताकी वह औषधि करो भगै रोग की खोर॥

त्रिकुटा हींग अरु कायफल खंड बराबर लेउ
गंधी मासे चार सो मँदिरा के संग देउ।१८४।

सो० करवावै परहेज़ दाना पानी घास सों॥
औषधि है यह तेज गात देखि के दीजिये

अथ दूसरी विधि

दो० पीपरि सोंठि जीरेणुका लावी कूटे आन॥
औषधि है यह तेज अरु महंदी में सानि॥

अथ दूसरी विधि

दो० जो घोड़ा कंपे अरु होंय जो नथने लाल
ताको दीजै नास यह रोग वहै तत्काल

गौ घृत ताको करै न दोष॥ तेल सिवाय नास देख
नीको होय पीर नहि करै॥ शालहोत्र याविधि उच्चरै

औषधि राक्षसमूलकी

उदर पीर घोड़ा के होय॥ उठै गिरहि वह पल पल खोय
हींसे टापे दृग होंय लाल॥ औषधि ताहि करो तत्काल

औषधि

पकी अमली को रस लेय॥ संधो तेल तिलन को देय

सिरसा को रस तासम करै ॥ इकतर करै नारि मैं भरै ॥
तीनि दिवस घोड़े को देउ ॥ हृष्ट पुष्ट तेहि नीको लेउ

औषधि और मूल सूल का लक्षण ॥

चौरंग हलदी को करै ॥ मुख में लार अधिकते गिरै ॥
सीतल बदन हलावै सीस ॥ वारि सूल तौ विस्वा बीस

अथ इलाज

सेंधो पीसि नयन में डारै ॥ मिर्च सहित नास अनुसारै
टहलावै और कोपा भले ॥ या औषधि सों घोड़ा खुले
जड़ स्वाती औस सम लीजै ॥ पीसि दूध मह घोड़ा दीजै
नीको होय ताक जो करै ॥ शालहोत्र या विधि अनुसरै

इलाज शिरवादर्त्त शूलका

कापुरा जो जर्द कराई ॥ निर्णय देवै पीवै जो पिवाई
हल्दी राई गुड सम लेई ॥ सिरका संग घोडहि देई ।
देतहि नीको होय बनाय ॥ तुरत व्याधि वाकी मिटजाय

इलाज म्रत्यु शूलका लक्षण

दाना खाय न जलसों नेह ॥ नित प्रति सूखै वाकी देह
हांफै झूमै गिर गिर पड़ै ॥ ताकी औषधि याविधि करै ।

अथ इलाज

अक्षम बादाम एकतें लेइ ॥ दशतें आगे कमि करि देइ
बहुरि मलाई या विधि करै ॥ जामैं रोग अश्व को हरै
हल्दी राई गुड़ सम लेय ॥ कूटि पीसि सिरका सम देय ॥

तप्त नीर पीवन कूं दीजे ॥ सप्त दिवस महं नीको लीजे
शीतल होय न एको गाढ़ो ॥ ताको रोग निन्न ही बाढ़ो
मल बतो ने रंग के होय । तेहि असाध्य लक्षण हैं सोय
ताको औषधि नहिं उपचार ॥ शालहोत्र भाषै निर्धार

अथ औषधि और सन्निपात शूल लक्षण

कांपै उछलै गिर गिर पड़े ॥ ताकी औषधि या विधि करै
अजवायन बच राई लेय ॥ भूंजि फिटकरी तामहिं देय
सौंफ़ सुहागा हींग मंगाय ॥ सिरका कै संग देहु पिवाय ॥
ता सिरका को डाले घीउ ॥ तातें सुस्त होय नहिं जीउ
सप्त एक जो औषधि करै ॥ सत्त मैं शूल अश्व को हरै

अथ दूसरी विधि

दोहा सोवत ज्वर के शूल यह ताकी औषधि एक
उपचारै लहै एक जो कष्ट न राखै एक ॥

घोड़ा के संग होय अमास ॥ पूरण लक्षण होइ न घास
उचकै चौंक धरनि पर गिरै ॥ औषधि वा की या विधि करै
प्रथम सहजना हींग मिलाय ॥ अजवायन कंचन रिपु लाइ
वायबिडंग सोंठि और सरसों ॥ आधूरा करि बद्ध धा करसों

अथ औषधि खवा की विधि । चौ० ॥

सोंठि अजवायन वायबिड़ंग ॥ वचन बराबर एक म संग
काढ़ो अश्व विशेषी देउ ॥ सात दिवस महं नीको लेउ ।

दो० बरस २ प्रति दीजिये गेहूं के रस वाय

रोगी अस्वन हेत हैं काहे को करै उपाय
विना चराई लोहू लेइ ॥ जा विधि देव जतन कर लेइ
तो घोड़ा की हुइ है हानि ॥ शालहोत्र कहि दीजै मानि
अथ लोहू हरण ॥

दोहा लोहू लीजे अस्व को जाको है विषवेल
जाय बिन्दु को पुष्ट है ताहि न दीजे झेल
जा घोड़ा को लोहू कढ़े ॥ तातें वीस गुनो नित बढ़े
लाल मोटे को मति करो ॥ सर सवैया लोहू हरो
रोग न हेग्य रहहि चालाक ॥ ज्यों लोहू लीजे न पाक

दो॰ नर घोड़ा एक गति शाल होत्र कहि भाष
ताके लक्षण भेद सब अंग २ सब भाष ॥
नर नारी तेहि भोग संयोगा ॥ ताके गुन लोहू जो देरोगा
घोडा वृन्द रहै औ रचरै ॥ ताके बाके बढ़ै न करै
जो कस्सी धा मांहि पहिचाने ॥ लोहू ले इन राखै जाने
विन जाने न स छेदै कोय ॥ कल्म करे कर ताके होय
खस रंग शाह रय वढ रंग होय ॥ हफ्ते दामा जानिये सोय
ऐसी तेरहि धाम निजानि ॥ जो जाही ताही सों मानि
मारग कीजे ते गुन कहो ॥ कस्सी लोहू तैसे कहो
नसना रहै हैने नने जोय ॥ जो डारै रोग न कोहोय

दो॰ नर को जो परहेज़ है है को साई जान
लोहू लीजे तासु को होय न जी की हान

अथ इलाज आमासोथजकरेको

जो घोड़ाको शोथ पकड़े॥ ग्रीवाकजहै औरस्तनजकेड़
ताको प्रथम करोउपचार॥सेंको ख्वारिसों सेंधोडारि
तापीछे यह सेंकन करै॥सकल व्याधिघोडा की हरै

दो० अजवायन अजमोद ले हींग सोंठ सम लेउ॥
कालीजीरी मिलायकर लेपवहीं करदेउ॥

सो० जब सोथा मिट जाय सूधी गर्दन होय जब
कीजे यही उपाय रगछाती की खोलिये

अथ औषधिलोहूबंदकी चौ०

घोडा की नकसीर जो फूटे॥ चहूं ओर सेधारा छूटे
कै लोहू कै पानी गिरै॥ ताकी औषधिपाविधकरै
सोफ धना जीरा मंगवाई॥ सोंठ सहितदीजे पिसवाई
भाल अग्र को लेपन कीजे॥ नास ताहियाविधसोंदीजे
संग ऊंटके लेडा लीजे॥ ताको अर्क छानि कर कीजे
तिन को गो घीव मंगवाई॥ दमड़ी भरि सेंधो मिलवाई
नासदेइ घोड़ा को जभी॥ श्रोणितबंदहोइहै तभी॥

दो० ऊंटकटेके बार वारि अग्निसोंधूप दे॥
औषधियही बिचारसेग हरण संशयनहीं

इलाज वारबंद चौपाई

प्रथम सेंक माथे पर करहि॥ हलदी पानी सों अनुसरै
तापीछे यह लेप कराय॥ सोंठ सुहागा पीपल लाय।

पीसि कूटि करि लेपन कीजै॥ सकल रोग घोड़ा का छीजै

अथ औषधि पेशाब बन्द चौपाई

मूत्र रोग घोड़ा के होय॥ जाको जतन करहि सब कोय
पीपल सोंठ देहु पिसवाय॥ नाज़ा मघ्य वन्नी चलवाय
रंचक नोन मिरच पिसवाय॥ देउ करण घोड़ा के नाय
छूटहि मूत्र धार अधिकार॥ मेटहि वाके सकल विकार

दो० रैवे वे को यह तीनि है मूली अमलीपान
कै कोरे के बीज हैं याते होय न हान

अथ इलाज लीदबन्द का चौ०।

राई मठा देहु पिसवाय॥ कै कारी अर्थ मठा को लाय
दधि खारी सो देहु खवाय॥ छूटे अश्व रोग वहि जाय

दूसरी विधि

दो० । हींग टका भरि लायके सेर दोय ले घीउ
दीवा करि के दीजिये कहि घोड़ा सों पीउ।

अथ इलाज कृमि रोग हरण॥

दो० जा घोड़ा के पेट में कृमि बहुत व्है जाय
गिरें पटेरे पेट सों दाना घास न षाय॥

राई हल्दी कायफल आनि॥ प्रात होत दीजे नित खान
नीको होय व्याध सब हरे॥ शालहोत्र याविधि उच्चरे

अथ इलाज प्रमेह का

दो० त्रिफला दीजहि खांड सों सात रोज परभात

मूत्र रोगनाशन करै मिटैरोगउत्पात

अथ दूसरी विधि

दो० राल खांड द्वै सेर भरि घोडहि देउखवाय
वीर्य बन्द ह्वै जाइगो जो यह करो उपाय

अथ षट ऋतु का उपचार

दो० ऋतु बसंत औरमासरा चैत्र और वैसाख
दाना दीजो चना को मनो मिश्री अरुदाख
ग्रीष्मजेठअषाढ़ है महाअग्नि को मूल ॥
सतुआ दीजे जवन को बनो रहैजो फूल ॥
श्रावणभांदोवेद नहि यह वर्षाऋतुजान
गेहूं को बजरा भलो घीउ खांडमें सान॥
अश्विन कार्तिक शरद ऋतु मोठमूंगअधिकाल
काचीदाना दीजिये हल्दी अरुगुड़ प्रात१२३
मार्ग पूस हेमंत है घीउ महेला जान॥
शिशिर माघ फागुन कहै दाना दीजै मोठ
गुड के साथ खवाइये मिर्च पीपले सोंठ।
त्रिफला दीजे खायजो ग्रीष्मअवर वसंत
त्रिकुटा दीजे गुड़ सहित शारद और हेमंत
हल्दी वर्षा । शिशिर में घोडहि दीजे नित्त
नित्र विचाला दीजिये रोगन करे निरत
मिर्च साथ सो दीजिये होइ महाबलवान

मुरग परहि वाती करहि जो घोड़ा को देय
बात बचावे अंग को सकल रोग हरि लेय

अथ वेजा मोत्तरा नासन विधि

दो॰ तारा माखी लाय करि सोना माखी साथ
नीबू का रस खरल करि मल्हम कीजे तात
पछना दे लेपन करै बांध बनाते हि देहि॥
अजा मूत्र सों भिजै करि त तछिन नीको लेय
सप्त दिवस पीछे खुले भीजत रहे हमेश
तापीछे जब खोलिये औषधि कीजे वेश

अथ इलाज

दो॰ डरपी सेंधो गौघृत मल्हम सो करि लेय॥
माखी चाय चबाय करि चुपरि तेहि को देय

अथ शिंगरफ गुटिका

दो॰ करष एक सुम्मल सो लेउ खरल करवाय॥
द्वै टंक भरि सबै लै औषधि दीजे डारि॥
सिंगरफ मिर्च सुहागा लीजै॥ गूगल मिर्चे ताहिं में दीजे
अदरक रस में खरल कराय॥ गोली चना प्रमाण धराय॥
सर्व रोग को दीजे कह्यो॥ शालहोत्र मति ऐसें लह्यो

अथ दूसरी विधि

दो॰ अमली और कचनार को नीम पत्र सम ताय
सिरका में सब औटि के वाफर देउ चढ़ाय।

उलहत बांधे सातदिन बङ्गरिन बेजा होय
नित्त निवाला दीजिये जो पहिचाने कोय
टेसू सुवन उसेय करि नित्त चढ़ावे कोय
उलहतही या विधि वादूषन नहि होय॥
घोड़ा को रंग एलटो चाहे। के चाहे के पेवनलाहे॥
वाल सफेद करे इहि रीति॥ पावहि मनमहं परतीति
प्रथम वाल वे दूर करावहि॥ तापर सावन घिस २ लावे॥
कूष्मांडरस धोवे ताहि॥ बङ्गरीफिटकरी तापहिंदेइ॥
रतरल करे सावन रसमाहि॥ मल्हम करि राखे तेहिछांह
लेपन कीजे फिर २ ताहि॥ या बिधि सोभौवे महं वाहि
एक मास में होय सफेद॥ विरले जाने वाको भेद॥

अथ सर्प काटे की विधि

दाना घास दुहू परिहरे॥ लीद करे खुलि के वहचरे॥
वाको जाने सुभग बिचार॥ २४०॥
दो० गरुड़ मंत्र पढ़ वांयके निरविष कीजे ताहि
ओषधि वाको सात दिन दीजे ताय मंगाय

अथ इलाज

दो० काना देरी अफ़ीजड़ मिर्चें सम लेय॥
संग नीर में पीसि के प्रात सांझ नित देय.
हय नर को जो दीजिये लीजै तुरत जिवाय
पुनि कीजै जो जथा गति विषविपध रहिजाय

अथ सपोला को जोखाय॥ घास मध्य घोड़ा पड़िजाय
ताके लक्षण कहौं बखान॥ जो नर को आवे पहिचान।
बारि वद्ल मुखतें अति छूट॥ ग्रीवा सूजि अंगते फूट॥

दो॰ किछुआ टंक सो पांच लेदीजे मिरचैं घीउ
घेर घीउ में बांटि के घोड़हि देय पिवाय॥

तापीछे यह औषधि करै॥ तुरत व्याध घोड़ा की हरै॥
चौराई जड़ अंड मिलाय॥ आक फूल ता सम लेजाय
मिर्च कसौदी अदरक पान॥ सब को करहु एक प्रमान।
संग घीउ के देउ खवाय॥ विषधर को विष निश्चै जाय

औषधि अञ्जन की सुजुम्म फुल्ली के है अरिल
अर्क दूध फिटकरी सम या विधि जानिये॥
बहुरि मिलवाय कनक में सानिये॥ ः॥
आनि अग्नि में धरहि जला बहि तासु को॥
सुरमा करि दृग देय रोग नास कों॥

अथ दूसरी विधि

दोहा मानुष की खुपड़ी तन अग्नि मध्य लेवारि
खील फिटकरी मिले करि सुरमा करै विचार
दूध घोलि के डालिये सात दिवस लौं नित्त
फुल्ली मुजम्मा काटिहै सांची मानहु मित्र

अथ औषधि उदर बंद फूल की

उदर होय घोड़ा को बंद॥ औषधि कीजे चेतनचंद

राई मठा में सोफ़ मिलाय॥ तुरत दीजिये वामिलाय
सोंठि मिर्च यह गोली बांध॥ मूल द्वार तहं देउ खवाय
टहलावे फेरे बहु वार॥ लीद करै याही उपचार॥

अथ औषधि पेशाबन्द की

चौपाई

मिर्च कचूरहि सावन आनि॥ खरल करहि पानीमें सान
वाती देइ नरामें कोइ॥ बहु पेशाव करहि है सोय

अथ इलाज कलावंद जीव सूखेका

चौपाई

सेंधो मिर्च दोऊ को लाय॥ करो दारसम खरल कराय
गोली करि सुख मेले तास॥ तापाछे यहदेउ प्रकाश

अथ लेप सोरठा

पीपल पीपला मूल सोंठि कुलींजन वैचलै
सबको कीजहि चूर कटुक तेल खरल करि॥

चौपाई

मल्हम सो करि वाको लीजे॥ लेपन करि कपड़ा में दीजे
वांधे गले अश्व के कोइ॥ जो सेंकहि सो नीको होय

अथ औषधि बायवंद की

दो॰ उदर अश्व के वाय जो बन्द होय अधिकार
शाल होत्र या विधि कहै वाहू को उपचार
प्रथम सोंठि अजवायन लावै॥ मैदा घृत में औ पावै

मलैउदरकोरवा बहुवार॥ तापीछे यह करहु बिचार
सोंठि सुहागा सोंचरवांध।सहजनेकेरसमें गोलवांध
सकलब्याधचौरासीवाय॥शालहोत्रकहिसवजाय
एक गोली क्षादामें देउ॥ सर्वरोग मारुतहरिलेउ॥

अथ हड़वाजान अनासन विधि

दो० उलहतहड़वाजवाजवजोयहजतन करै
शाल होत्र या विधि कहै दीरघरोग हरै।

चौपाई

चूनाकलीभटामें भरहि॥ कपरोटीकरिभुंनेधरहि
जबपरपक्क होयजरिजाय॥ तबयहम ठालेपवितसवाय
निवउरिकेपायनमें मरहि॥ सोरसरोगछिनकमेंहरै

अथ रसचोको उपचार

हल्दीसोंठिसुहागा लीजे॥ अघ सुंभपर लेपनकीजे
कड़वा तेलमिलायभरिवहरस रोग याविधिकीजे।

प्रथम प्रकृति घोड़ाकी गरमी शीतल स्वभाव विधि बिचार दोहा

शीतल गर्म स्वभावयह अरुनि हूदुजहोय
शाल होत्रयाविधि कहै जो पहिचाने कोय

चौपाई

कुमैत मुंशाकी कोर समंद॥ गरम प्रकृत होयसुनिचंद
सुरखासुरंगको हरोवोज॥ पञ्चाहूजकहियेलखसोज

नीला ग्रौर चीनी सबजाव ॥ सरद प्रकृति होय बेताव
खाकी रंग घोड़ा कहि जेते ॥ ग्ररून पीत व्है उदय है तेते
हैं प्रधान सबके ग्रंग पित्त ॥ वात पित्त मिल होय विचित्त
पहिचानै ग्रंग २ की रीति ॥ करि ग्रौषधि ग्रावै परतीत
नाड़ीनैन बतावहि देखि ॥ प्रकृत स्वभाव सबहि करेख
ग्रौषधि करहि रोग पहिचान ॥ ताके हाथन ग्रावहि हान
सुरहापा है गोपीनाथ ॥ कान कुब्जि में होय सनाथ
तिनके सुत चारौ ग्रधिकाई ॥ इन्द्रजीत लक्ष्मण यदुराई
चौथे ताराचंद कहायौ ॥ जेहि यह ग्रश्वविनोद बनायौ।
हरिपद चित्त नाम की ग्रासा ॥ शालिहोत्र बंद प्रकाशा
कुशलसिंह महराज ग्रनूप ॥ चिरंजीव भूपन के भूप।

सो० यह ग्रन्थ सुखसार चेतन चन्द कहौ नया।
लेउ सुधार विचार भूल चूक को क्षमा करि।

दो० संवत सोलह सौ ग्रधिक वार चौगुने ग्रान
ग्रन्थ कह्यौ कुशले शहित रक्षक श्रीभगवान
मास फाल्गुण शुक्ल पक्ष दुतिया शुभ तिथ नाम
चेतन चंद स्वभाषियत गुरू को कियो प्रनाम।
तेदस ग्रौर ग्राठ सौ इक्यावन पै सार॥
फागुन शुक्ल त्रयोदशी लिखी वार बुधवार
ग्रश्वविनोदी ग्रन्थ यह शालिहोत्र सरताल
प्रति देखी सो कही मैं खोर नहीं नंदलाल ॥

अथ घोड़ा केभेव

बकावरी मुंभकी मूटा जान आगेकुम्मेत वे हड्डी नर मेंआदि परै तो कफ़ गोरी जानिये पिछले पांव की मुंह पर होय है तुम पुस्तक तो जानिये घोटू की नस जवर परै तो मौं हाड़ाजानियौ पिछले पांव पै हाड़ा जवर परै तो पाटरी जानिये। बरसाती कमरी वामनी पूंछ में तो सह बारगिर परै नाभी अकरव में लालटी का होय के सो ऊरं ग होय सफेदी माथे पर होय अंगूठा सों दवे ताको सित रा पेशानी कहै। तिनतल टूटे ताको तिलक तोर माथे पर एक भौंरी तासों सिंहिनि कहवे हैं द्वै भौंरी मेढासिं गिनि स्याह तालू दन्मसरी आलमें एक भौंरी सौंसांपि न द्वै भौंरी दोऊ लगसों बांधे मटूपै भौंरी सों क्षत्रभंगाचू तर पर भौंरी सों खूंटाउपार। रकाब के बराबर पेटतर भौ री होय सो गूमा। अगले पांव में भौंरी होय सो खूंटाउपार। छाती में भौंरी होय सो हृदयावलि मनीजा केथनी टेढी पूंछ राखे सो कजदुमा। हिज सेहत में जिसके मस्तक में रोग़न गाव या रोग़न कुंजद सफ़ेद न लगाया जाया करै तो अंधा ग्राम मज़बूत या मुखद्धज होता है ऐसी खुधकी गालवरहती है कि अगर मस्तक पर इलाऐसा आकि ल हो चिथार है कि मावीनाई में भी मिस्ल बीना के चल ता है मगर वमुस्ती धारन की हमे ग्रा खिलाना इसका

इसतरह मुफीदहै वह दूसरे अमराज़ से महफ़ूज़ रहता है
सुहागा की खील गूगल हीरा हींग अजवायन कूट शीरीं
नरकचूर काला बिछुआ निरविसी पीपलामूल सांचर
नमक आद पाव असगंध अजवायनखुरासानी असगंध
गोरी सरराई सज्जी अजमोद कमीला आदि आदआद
पाव भरि सब को कूट छान कर सवा सेर चून उड़द का मि
लायकर साने पैसे २ भरि की गोली बनाकर मुखारके
उस के वाद एक गोली रातव के वक्त खिलाया करे यह
घोडे को निहायतमुफीदहै॥

दूसरी बिधि

वास्ते मिजाज वीमारियों के कभी तीन चार रोज़ बरा
वर खिलाया चाहिये मिलावाओ रकुचला सवा २ पा
व रोगन कुंजद स्याह डेढ पाव खूब भून कर निकाललेवे
वा आमा हल्दी पाव भरि और कुटकी पीपलामूल
हींग गूगल भुना सुहागा आध २ पाव को मिलाय
पीस लेवे और अढ़ाई सेर आक के पत्ते वारीक करके
सेर भर कुंजद स्याह में इन तीनों को खूब भूने जिस्में
कि पानी जलजावे उस सफ़ूफ़ को मिला राखे दो पैसा
भरि दवा आद पाव गुड़ में मिलाकर खिलाया करे घा
स्न कर सफरे में हर रोज़ खिलाना व मूजिब रफ़े मु
जनर आमवाह व दफ़ा अकस आदमी कावव है

दो दगल खन गूगल आद सेर बारूद एक छटांक गुड़ तीन पाव दून सब को पीस मिलाय मंजिल पर खिलाया करै कि हाथी कम उमर को हर महीने में पंद्रह रोज़ बराबर खिलाये उस का दू सलाह मिजाज के के रखता है हरतरह की खूबियां नमूदार करता है॥

इति शालहोत्र संपूरणम्

शुभम्

आगे जगह खाली रहने के कारण यह चूरण मनुष्यों के लिये लिखे जाते हैं

अथ मंदाग्नि अजीर्णादि विषूचिका उपचार

हड़ की छाल टंक दो या को महीन पीस टंक दश जल के साथ रोजीना लेय तो आमाजीर्ण जाय भूख बहुत बढ़ै अथवा हड़ की छाल सेंधो नून इन को सेवन रोजीना करै तो अजीरण ज्वर जाय॥ अथवा चित्रक अजमोद सेंधो नोन सोंठि काली मिर्च यह सब बराबर ले महीन पीस टंक दो गौ की छाछ के साथ २५ दिन लेय तो भूख बहुत बढ़ै मंदाग्नि और पांडुरोग बवासीर जाय॥ ३॥

असली

शालहोत्र

राजा नकुल कृत

इस ग्रन्थ में घोडों के वर्ण जाति और शुभ अशुभ के लक्षण तथा सर्व रोगों के निदान और चिकित्सा ग्रंथ कार ने ऐसी सुगमता से वर्णन करी है कि जिसके देखने से थोडा पढा भी मनुष्य घोडों के समस्त हालों को जान सक्ता है

इस्को

बाबू प्यारेलाल साहब जिमीदार मौजे बरौठा थाना हरदुआगंज जिले अलीगढ़ने रईस लोगों के या जो घोडे रखते हैं उनके उपकार के निमित्त छपवाया

मतबअ मगज़न तुल उलूम मौजे बरौठा में छपा सन् १८९७

प्रथम वार ५०० प्रति छपी

क़ीमत ७ आना

श्रीगणेशायनमः॥

अथ शालोत्र लिख्यते॥

नकुलोवाच

आदिलग्न जो कहत हों प्रथम संस्कृत सोइ
अब याकी भाषा करूं समझ लेइ सब कोइ॥
विनय करों कर जोरि कैं गणपति बुधि मोहि देउ
भाषत हों डाहि नाम कौं खोर मोर नाहिं होउ॥२॥

चौपाई

अहिपति एक रूपी सुर रहई॥ नितप्रति होम यज्ञ सो करई॥
यज्ञ धूम नैनन में लागी॥ अश्रुपात नाले अति जागी॥

दोहा

रोइ अश्रु सो पौछऊ धरनि परे अभिराम॥
वाम अंस घोडी भई दक्षिण अश्वाहि नाम॥
ताही की संतान बखानों॥ चार देश की सोई जानों॥

अथ उत्पत्ति देश देश की॥

चार देश की उपज है चातुर लेउ विचार॥
पश्चिम दक्षिण उत्तर पूरब कौ निरधार॥ ६

चौपई

दक्षिण को बल यत्न कहावै॥ पश्चिम कौ कविशुभाहि बतावै

उत्तर गौड कहो बल चन्त ॥ पूरब पानी हीन जु जन्त ॥
पोरि नछत्र अठारह जानि ॥ अब मैं तिन के करौं बखानि
सोहानभ मानपरवरान बनाई ॥ संप व्रतम सेंधक देवाजी गाई ॥
तिलंग कुर्ज आघी सुरमान ॥ अरबी अरु ईशानी जान ॥
तुरकी जंगल काबिल ऐसो ॥ कशमीरी कच्छी है तैसो ॥
ताजी अरबी कहों बखानि ॥ इन सौं कहे अठारह खानि

अथ अश्व की आरबल वर्णनम् ॥

दक्षिण अश्व की आरबल कहो बरस चालीस
पुरबी की पच्चीस कहे छीन होइ बल बीस ॥ १०
ऐराकी की आरबल एक सौ अरु पैंतीस ॥
ताजी की बरनन करी चले बरष चालीस ॥ ११
कच्छी की चालीस कहि काबली बरस पचास ॥
कसमीरी की तीस पुनि तुरकी साठि जु भाष ॥ १२
और अश्व की आरबल तीस बरस चालीस ॥
चातुर लेड विचारि कें गिन इनही के बीच ॥

अथ अश्व वर्ण वर्णन ॥

विप्र जु छत्री वैश्य पुनि और शूद्र कौं जानि ॥
जल पीवत हय कौं लखै बरण भेद पहिंचानि

अरल

विप्र वरण हय जानि पिये ‒ इ फोरि कें ॥ वैश्य वरण हय जा
नि अर्घ मुख बोरि कें ॥ छत्री न कूपा बोरि पानी पीवै हला

डूबैं ॥ ओठन मूं जल पियै सूद्र न जाय छिपाय कै ॥

दोहा

जा घोड़ा के अंग में होइ दूध की बास ॥
बिप्र वर्ण ताहि जानियें नीको नासुप्रकास ॥
अजा गंध छत्री कहो घृत को वैश्य बखानि ॥
मीन गंध शूद्राहि कहो कबहुं न नीको जानि ॥
विप्र वर्ण सु विशेषता छत्रीवरण सुतेज ॥
वैश्यवरण कपटी कहो शूद्र न कूदे नेज ॥

चौपाई

मंगल वार जाही दिन होइ ॥ विप्र वरण हय चढिये सोइ
जादिन पुष्प सीम करि पावैं ॥ छत्रि वर्ण हय तब चढि-
धावे ॥ जादिन कहुं ज्यो हारे चढ़े ॥ वैस तुरी ताही दिन च
ढै ॥ राज मिलाप करण कौं जाइ ॥ शूद्र वर्ण घोडा चढ धाइ

अथ अश्व दंत लक्षण ॥

चोपाई

जाके दांत दोखियत कारे ॥ तीन वरष ते नाहिं अधिकारे
हरे दांत पुनि जाके जानों ॥ पांच वरष हय ताहि बखानो
जाके दांत सेन पुनि देखो ॥ पंद्रह वर्ष हय ताहि विसेषी
जाके दांत निलाई आवे ॥ वीस वरस हय ताहि बतावे ॥
जाके दांत संख से संत ॥ वरस तीस को बुध कहि देत ।
दांतन छेद मखोची डारै ॥ ताहि वरष चालीस विचारै ॥

अथ कानलक्षण

दोहा

जासु श्रवण लोहू करै जाकूं जानों सोय ॥
सो घोड़ा शुभ जानिये कहत सुलक्षण जोय २३
आंव फेन चर पान से जा के कान दिखाय ॥
सो घोड़ा खोटा अधम छिपै छिपाये नाय ॥ २४

चौपाई

घोडा दौड लगाम न लेई ॥ छुवन रकेव चढन नहिं देई॥
अंडे दुरे और करै पिछारी ॥ इतने ऐव कांपिये भारी॥
पनरे पहुंचे सुंव न भार ॥ चढि कें लगें छूछ के बार ॥
मोरा की सी आवे भीव ॥ ता चढि चलो पराई सींव॥
कोने कटि और टंक पछार॥ उर परछूटै जाकी लार॥
सीस सुपारी ताकौं रहे ॥ अन मोलो सालोत्तर कहे॥

छप्पय

ऊंचो मुख करि रहे बुहे पुनि अश्व बनावे ॥ प्रथम दा हिनौ पाउं लाइ ऊंचौ जु उठावे ॥ करि हा तोरे रहे और निज पिछलो धर पुनि ॥ आंखे मूंद पुनि रहे कहे पुनि लेउ चतुर सुनि ॥ ऐसे ऐब घोडा निरखि छोड ताहि करना दरस ॥ सुखसंपति नासै सबै हय आवे अति ही निरस॥

अथ ऐब लक्षण॥

चौपाई

जो घोड़ा इक सूरो होइ ॥ ताकौं नाहिं लीजियो कोइ
दिन में घोड़ा आंसू डारै॥ निसा वारता कौं अनुसारै॥
शोरव वंत है ताको नाम॥ सदा धनी को बिगरे काम॥
छत्र भंग मद्दू विच होइ ॥ राज बिगारे छिन में सोइ।
गोम वार ज़ाल धरलयौ ॥ विंदा सो गलता छिन दयौ॥

दोहा

नंग नेरेकी भामरी तासु नाम काहे गोम ॥
पहिले तो स्वामी मरै पीछैं सबौ स्वौम ॥

चौपाई

डंग उज्यारि सूर्ज के काहिये ॥ सो सुख एक छिन कनाहिं लहिये
दल भंजन जो सविता लिया॥ ताको अपजस कविता किया।
थन अरवरव घोडाकैं होय॥रनमें मरै पराजै होय ॥
माथेमें अरवरव बह चौरे ॥ ऐसे को देखही छोरै ॥

दोहा

आरिवनके नारे निरखि सो औंजारी होय॥
भौंसमीप कीभामरी राज बिगारै सोय॥

चौपाई

दोऊ कानन भौंरी कारी ॥ अलक भंज नीनाम निहारी
ऐसो हयजो नल को भयो ॥ राज गयो अतिही दुख सह्यो

दोहा

मैंदासिंगिनभामरीजा माथे में होय ॥

अष्ट वर्ष में धन हरे स्वामी मारे सोय ॥

चौपाई

जासु रंग में भौंरी होई ॥ आप मरै कै नासे जोई ॥
दोऊ कानन भौंरी देखौ ॥ अहिनसली ता नाम विशेखौ ॥
दांत एक पुनि होइ जु स्याही ॥ करै कष्ट नहिं लीजे नाही ॥

दोहा

तीन सुम्म होंय एक रंग एक सुम्म होइ सेत ॥
पतनी मरै कि धन हरै प्रान धनी के लेत ॥

चौपाई

छाती जाकी भौंरी कारी ॥ अलक अंजनी नाम निहारी ॥
वाम कोख कन्या को मारै ॥ दाहिनी कोख पुत्र पै भारै ॥

दोहा

कांधे परी कि भामरी ताको नाम कधार ॥
भली बुरी वह ना करै तोल यहै इक सार ॥
मृग को सौ जाको उदर सो हिर नाग कहाइ ॥
वह घोड़ा जा फौज में सोई फौजं भजाइ ॥
अगले पग पहुंचौ बड़ौ ताको ऐब बखान ॥
सो घोड़ा खोटो महा कभी न सारे काम ॥ ३८

चौपाई

जाके भौंरी कांख के पास ॥ लेत धनी को खोवे नास ॥
तिलक नोरजस रथ नैं लियो ॥ पुत्र वियोह प्रान विन कियो

सार फी अश्व पारीक्षित लीयौ ॥ तक्षक डस्यौ प्रान विन भयौ
हिय को दोष असुर पति लयौ ॥ कुटम सहित राम न ह्वै गयौ ॥

दोहा

तालू में स्याही भई लयो राव हरि चंद ॥
ताके औगुन ते भयौ नीर नीच घर मंद ॥

चौपाई

जा की आंख न ताखो दीख ॥ ताको भूल सुनो मति हीस ।
डेरी वाल जुलह सन होइ ॥ मध्यम जानों ताकों सोइ ॥
कारी आंख एक आछी होय ॥ इक मंडलि कहावै सोय
इक मंडल जुरजो धन लयौ ॥ ताको राज विगर सब गयौ ।

दोहा

बुंडी भीतर अश्व के पडी सफेदी सोय ॥
अन्न दोष जासों कहैं कष्ट अन्न को होय ४२

अथ अश्व शुभ लक्षण

दोहा

लिंग मूल भौंरी जो होइ ॥ जातें शुभ करता नहिं कोइ
लेला भौंरी उत्तम राज ॥ जाके पास बंधे गज राज ॥+॥
जा घोडा के माथे टीका ॥ सो तो सब अश्वन ते नीका ॥
नकुआ वीच चौंरी जो परे ॥ दूर धनी की चिंता करै ॥

दोहा

घोंटू पर भौंरी परे नीचे कूं सुख होइ ॥

भुज बल ताहि बखानियें उत्तम लच्छिन सोइ

चौपाई

बीच पीठ पर भौंरी आवै ॥ सो वह राजस नाम कहावै ॥
बगल दाहिनी लहै सन होई ॥ बंधे प डूगा बगलत्रै सो ई ॥
मुह पर सेत गले पर सेत ॥ नाम अष्ट मंगल कहि देत ॥

दोहा

भौंरी होय जो कंठ मैं नाम कंठमनि सोइ ॥
ऐसा शुभ घोडा मिलै ऋद्ध सिद्ध धन होइ

चौपाई

रा तौ पाउं दाहिनो होइ ॥ शुभ मंगल जासौं कहै सोइ
कोष दाहिनी भौंरी जाके ॥ श्री धर नाम लच्छिमी ताके
सुम्मन वार जासु कें होई ॥ चिंतामनि शुभ जानों सोई

दोहा

हिरदै मैं भौंरी परी सो महिमान कहाइ ॥
अन्न अगम ताके रहै स्वामी सुक्ख कराइ

अथ घोडा व्यानेके लछिन

दोहा

राति ब्याइ सो निस कहावै ॥ दिवस व्याहि सो शुभ है
बतावै ॥

अथ घोडोंके इलाज

लिख्यते॥

अथ व्याधिलक्षण

चौपाई

साठि प्रकार कहत पुनि शूल॥ और अठारह जानौं भूल॥
वात सात रस कहिये चारि॥ सात दोष क्रम कहत विचारि
विनचेलिय चरम निदान॥ हड्डा डाडो ताछे जानि॥
फूकाजये षिस्त कहो होइ॥ क्रमते इनके व्याधि बताय॥

अथ शूललक्षण

सकोरे जो महा दुखलहै॥ वारवार पुनि लोटन रहै॥
कोपकरे चितवन अंत अंत॥ तासौं कहत शूलसतवंत
टंक चारि अजअजमाइनिशानि॥ टंक नी य घम
राजुवताइनि॥ औरजो घीव मेलिकैं खाय॥ देत शू
ल मल वंत नसाय॥

अथ मूत्रवंतशूलल०॥

दोहा

डांडो टोरै शूंठकी कररको षि पाहें जानि॥
मूत्र वंत यह शूल है भुमि सूंघे जो निदान

अौषधि चौपाई

गजपीपारपीपारमगवाय ॥ ॥ डेढसेरदारूमगवाय ॥
घीगुडसोंदिनसातकदीजे ॥ मूत्रवंतभूलहिहरिलीजे ॥५७॥

अथक्षुधावंतभूललक्षणन

कोषचोरछातीहूनेफिरफिरकेंषिजिदेख ॥
क्षुधावंतयहभूलकोलक्षणकहेंविसेख ॥
छालसहजनेकीमगाओरजोसेंधोनोन ॥
ताकोंतुरतमगायकेंनवपावेहयचैन ॥
घमराओरदमरीकरई ॥ वीजयांटि ताकोंमिलवाई ॥
लेओषधिसमभागवताई ॥ तेलमेलिसनचायखवावहु
क्षुधावंतयहभूलनसावहु ॥

अथवातभूललक्षण

टूटेवाधेआपुपुनिनषकेकहनवखानि ॥
वातभूललक्षणकहेंलीजिसोपहिंचानि ॥

अथओषधि

दोनोंवचओरकूठमगाई ॥ दीजेभेदपषानमिलाइ ॥
सबओषधिसमघीवजोलीजे ॥ टंकनोकभरिवामेंदीजे
राईमिसरीमिलवेजोई ॥ घातभूलफिरहयनाहिंहोई ॥

अथरक्तप्रमेहलक्षण

नकुवनेहैलोहूवहे लच्छननाहिविचार
रक्तप्रमेहयहजानिकेनवकीजेउपचार ॥
जुनरीकूटवदाइकेंगायदूधमेंसान ॥

नासदेयनवही मिटे रक्तप्रमेह कीहानि॥

अथक्रमभूललक्षण

नाभि ऐंचेसूंघन लगैचरैनहीं पुनि घास॥
मूलनास हय क्रमयहै काटतकीडामास॥

औषधिअरल्ल

त्रिकुटा कूट मिलायकु ताहिमगाइये॥ वचऔरदारू लेउमवे मिलवाइये॥ छनऔर गुडमें सानिटकानौकभर दीजिये॥ क्रमकौनासे भूलजानि सौलीजिये॥

अथभरमभूललक्षण

आंखि मूंदजो घोडा रहै॥ चारोचरैन आवुधिकरै ऐसा लक्षिण हय कौ जानै॥ भर्म भूलपुनिताहि पछानै

अथऔषधि

सौंठि हींग वच सेंधा नोन॥ गजपीपर पीपर है नोन॥ टका नौकभरि सम करिदीजे॥ घीवमेंप्याइनहिसोदीजे

दोहा

घीवतेलसौंमरदिये सोपुनि देत बताय॥
भिरमभूलनासैसवही हयआछोहैजाय॥

अथ मुखभूललक्षण

दोहा

दांतन सौंभुविटेक कैंजो घोडा रहिजाय॥
येलक्षिणभव भूल केमनमैं निरखेताय॥

औषधि

सों, मिरच पीपरि लहसन मग वाइये॥ वाय विडंग समा
न सभी मग वाइये॥ टका नौक भर घीव मैं ताहि मिलाइये
मुख को चचल भूल कौं हाल नसा इये॥

अथ रक्त वात भूल लक्षण

टूट वंधि लोहू पुनि रहै॥ दूखे पेट धांस अति सहै॥
ऐसो लक्षण लेउ विचारि॥ रक्तवात भूलन सिर दार॥

औषधि

अजमाइन पुनि हर्ड वखानी॥ वाय विडंग लेउ वुद्धआनी
बीज तुरैयां लावै औरे॥ नीबू पान कहै ना ठौरे॥+॥
सम करि भाग औषधी लीजे॥ टका पांच भर घी मैं दीजै
रक्तवात को भूल नसावे॥ फेरि विथाहय पास न आवे॥

अथ अजीरन भूल ल०

अंग छलीलो टतु रहै कोर अरिव भीतर मित
भूल अजीरन जानियें लक्षिण घर कें चित्त

औषधि

सोंधा सोंचरहींग वच पहलीजिये॥ अजमाइनि पु
नि लेय कि चूरन कीजिये॥ देय दही मैं सानि अथ यओ
षधि कही॥ परहाजी भूल अजीरन जाइ फेर उपजे नहीं

अथ अदरक भूल ल०॥

चौपाई

लोटतु रहै पुनि पांय पसारै ॥ रवांसी करै न श्रां रिवजारै
ऐसो लच्छिन देखे कोई ॥ साधि भूल कम जानैं सोई ॥

तोटक छंद ॥

अजमान छुहीर कहावे ॥ इनमधि कूट कैं आदौ नावे ॥
सब कों मेल दही मैं देवे ॥ रोग जाय निश्चै करि लेवे ॥

अथ असाधि भूल कम

कोष दोष फिर फिर लखै षांसी करै अपार ॥
रोग असाधि फिर जानियैं कहिये कम निरधार
गेरू और सहजने की जड लेय मगाय ॥+॥
अजमायने समतीसरी बाइबिडंग मगाय ॥
सब लीजे नो टका भरि गुड में सानि कें देय ॥
भूल कम जो अश्व कों तुरत दूर करि देय ॥

अथ ज्वर लक्षण ॥

घास चरै घरी देख कें तब पुनि करै विचारि ॥
निश्चै मन मे जानियें जुर को है अधिकार ॥

औषधि

घुंडी बाय बिडंग लेय मग वाइये ॥ त्रिफला भगर मोम न आइये ॥ निरगुंडी रस डेढ सेर करि सानियें ॥ देइ औषधि सब हि कि ज्वर हि नसाइये ॥ महाजुर अंकुस औषधि कीजिये ॥ कहै नकुल यों भाषि अश्व सुख दीजिये

॥+॥

अथ अथ वायज्वरलक्षण ॥

दांतवांधि इकठकर रहै सन्निपात अतिहोय ॥
इन बातन सोंजानियें वाइकजुर नव सोय ॥

औषधि

दशमूलजर हरडै कहो ॥ कदम कोरगुर डारे महीं ।
दारवमेलिजुत कादौप्यावै ॥ वाइकजुर नवतुरत नसावै ॥

अथ श्लेषमज्वरलक्षण

नोरईजर अरुमूसरी हरदसंक करि देइ ॥
हयकोज्वर असलेषमा तुरत दूरि करिदेइ

अथ पित्तज्वर लक्षण ॥

नकुवा डारैही रहे अंगजुताना होय ॥
पित्तज्वरलक्षणयहैचातुरजानेसोय ॥

औषधि

डेडसेर गऊ दूध मगावै ॥ पीपरि लाख समान मिलावै
औटि डारि फिर ताहि सेरावै ॥ प्यावतजुर कौंमार भगावै

अथ मूत्र भूलक्षण ॥

मूतकरत हयपनिरखिये पीरकरतहै ताइ ॥
गुरचूनालैदूधमैंसोईदेई पियाइ ॥+॥

अथ रसकंपवाइलक्षण

रसवाई पाइनि धुनिहोइ ॥ और गूमरीलागैसोइ ॥
छेदगूमरीमैं पहिंचानै ॥ वायजिहीरसकंप बखानै ॥

औषधि चौपाई॥

जवाखार और साजी लावे॥ और इमली की गिरी मगावे॥
इनको पीस लेप जो कीजे॥ पट्टी बांधि नाहि पै दीजे॥++॥
अजमाइन पुनि लहसन आने॥ दारु बिडंग सोंठ बच जाने।
गुड मिलाय कें औषधि दीजें॥ पूरे घाव यतन यह कीजै॥

अथ सूत्र त्रिभंगी भूल लक्षण॥

जा हय को सूजै महा चौरो थान बनाय॥++॥
छोरि देहि नाकौ बहुत सूल त्रिभंगी आय॥

औषधि अरल

भारे सौ निबू दरवा निये॥ लहसन और मिलाय सबै स
म ठानिये॥ पाव सेर ले घीव में तिनकौं सानियें॥ परिहां
मूत्र त्रिभंगी जाय सांच करि मानियें॥ ६७॥

अथ बिलबनरस॥

सुम्मन ऊपर लेवहे फैल फाटि रस सोइ॥
चिलंभनरस जानियें हय के लक्षण जोय

औषधि चौपाई

हरडे खैर सुपारी लावे॥ टंक नोय भारि सम पिसवावे॥
नोन तेल सौं लेपन कीजे॥ पारेसौं पहलें घिस लीजे॥
लाल फिटकिरी तोरी आनि॥ बेंगन मारू ताहि बखान
कारीजीरी सम करि जानों॥ ऐसें सब री औषधि ठानो॥

दोहा

अंइ पान करिवांधिये करिये यहउपचार ॥
सूरज उदे ते सात दिन तव थंभण रस टार ॥

अथ सुन्नवायलक्षण

वायें सुम आगे रहे अरु वाम पग नानि ॥
सुन्नवाय ऐसें कही लक्षण कहत वखाने

तोटक छन्द ॥

वच पीपरि पीपरा मूल जु लै ॥ अजमाइन वायविडंग जु दै ॥ सेंधा सौंफ ले चूरन करै ॥ नीबूरस पाउसेर लै करै ॥

दोहा

यह औषधि गुड घीव सौं सानि देइ दिन तीन
सुन्यवाय यासौं घटै तुरत हि डारे हीन ॥

अथ उचानवाइ जन ॥ दो०

आंखियन के तारे फिरैं ताते घास न खाय ॥
वाहि कहत उच्चान है इन लच्छिन ते आय

अरल

छालि सहजने की टंकनौक भरि लाइये ॥ वच घसरा घटवाय कि वाइ मिलाइये ॥

दोहा

टंकनौय भरि लीजिये दीजै तुरत खवाइ ॥
घीव अरु गुड अचमन करै वाय सवै मिटजाइ

अथ कपोटवायल० ॥

अंड सजि हय के रहैं लक्षण कहत विचार ॥
वाय कपोत वासौं कहैं तुरत करो उपचार ॥

औषधि ॥ दोहा ॥

घीव तेल सौं मर्दिये करै नहिं कछु और ॥
फिर खावै की कीजिये लावै औषधि और ॥

औषधि ॥ दोहा ॥

सोंठि कटाई दोनों लाई ॥ पीपरि बच तामें गिर वाई ॥
ऊमरि की जड़ खोद मगावै ॥ वाय कपोत को मार भगावै ॥

अथ मुख वाइ लक्षण ॥

मुख सूजे और आंखि को लच्छिन जानैं सोय ॥
मुख वाई यासों कहै करै विधाना जोय ॥ १

औषधि अरल

जवाखार और हर्ड दोऊ लै आनियें ॥ अजमाइनि और सर
सों दोनों जानियें ॥ सब कों करि एकत्र ये औषधि मानिये
मुख वाई मिट जाय तुरंग सुख पानिये ॥

अथ गुल्म वाय लक्षण

परें आंग सब गूमरी ताको भेद बताय ॥
देहै पानी सौ कढे गुलम वाय कहि जाय ॥
तेल लगाइ मिटाइये करै न और उपाय ॥
गुल्म वाय की औषधी यासों तुरत नसाय

॥५॥

अथ रसकुंडलीवाय॥

पौसा सी सव देह मैं परैं गूमरी जाइ॥ वाय कहत रस कुंडली नवहीताय वताय॥

औषधि अरल॥

त्रिफला त्रिकुटा औरजो हर्ड वनाइये॥ सज्जी नीवू पात जो घोट मिलाइये॥ छेरि दूधसों घोरि जु मरदन कीजिये परदा औषधि नाहिं यही काहि दीजिये॥

दोहा

अजमाय नि औरसौंफ समलह सनलेय वटाइ घीव डारि रसकुंडली दीजे तुरत खवाइ॥

अथगलग्रहलछ॥

आंखि मूंद मुख चाहन लगे न कुआ खैचे सो इ॥ गलग्रह वाइसो जानिये इनल छिनते होइ॥

औषधि चौपाई॥

मरदन ताने घीवसों करे॥ रवैवे कौ औषधि अनुसरे॥ महि घर सेतु जु जीरौ लेइ॥ वाय विरंग मिलाइ जु देइ॥

दोहा

घीव सौं सानि खवाइये यह औषधि सिरताज गलग्रह यासौं जायगी यह गजकौं मृगराज॥

अथ अतीसारल०॥

दोहा

अब जु नानो होय पुनि इन लच्छिन ते जानि॥
अतीसार हय कौ लषै बुध लक्षण उनमान॥

औषधि

प्रथम वेल कौ कवल कहि दूजै दाड़िम जानि॥ तीजे जाइ फल वांटि दही मैं सानि॥ देय खवाइ। डराइ अन मन मैं याकौ गुण कह्यो अतीसार कौ लेइ सुखाइ कैं॥ जो मुख डारे चेति कैं॥२२॥

अथ संकतानरी॥

नकु अन है खां सत रहै सो विचारि निरधार॥
सकल रोग की जर कही इह रस संकनार॥
हींग सौंठ कौ नास दै लहसन घीव मिलाइ॥
हय खाई संकनारि कौ फेरि नास नावाय॥

अथ कोल दोषादुतेआखरी

सेकि जु वांधे पट हरी वाटि जु पांचो नोन॥
या परवाय रहि जाय वो ओषधि कहिये तोन
साजी सैंधा फिटकरी राई मिरच अरु सोंठ।
घीव डारि कें यह करै कालि दोष की गांठ॥

अथ आछे दोपल०॥

सूजै अधवर आंग मैं छाती यो पुनि जानि॥
या लच्छिन ते जानिये आछ दोष पहिचानि॥
योरो सूजै सेंकिये बहुत होय तो दाग॥+

फिर ओषधि लै कापड़ा तासौं मूजन बांधि॥

अरल

में धासौं चर नौन लोन मगवाइये॥ इमली जड़ पुनि लेय
तीन दिन कीजिये॥ दोहा

लहसन और अजमोद लै घी संग देइ खवाय
नर निहचे करि जानियै मूजा पट कैं सुजाय॥

अथ असवारी चलत कौल॥

असवारी मैं मंद चलै मूंद रहे निज आंखि॥
भीतर रवै चैं नाभिको ओषधि कीजै साखि
दारुहरद हरदी कही सरसों राई खाय॥
घी और गुड सों तुरत ही हय नीको है जाय

अथ घाव लगे को लक्षण

पीव करै कलि केजु हय कसमसाय उनमान॥
घाव लगे के घाव कहि कहियो दिल मैं मान॥

चौपाई

धव धनियां मेथी लै आवे॥ हर्ड चिरोंजी ताहि मिलावे
पेड़ खिजूरा को रस डारे॥ आध सेर घृत में लै डारे॥

दोहा

ओषधि देइ खवाइकैं करै न कछू विचार॥
छांडि पीव पुरि आवही विकट हि घाव अपार

अथ घोडे कापेसावन थमैं॥

वार वार मूतन रहै निसि वासर हय सोय ॥
ताकौं औषधि कहत हौं सुनौं सयाने लोय॥
मिसरी सेर दो लायकैं वीज कांकरी दाख॥
मूत न लागे ठीक सो देखवाय पुनि साने॥

अथ मंदाग्निल०॥

खान न आवै कैसेउ निसि दिन कहत ट खानि
ताकी औषधि कहत अब सब नर लीजो मानि॥

सवैया

सोंठि चिरायतो पुनि अजमायन सोंघासुहागा जायव खानि॥ और पान नीचू के पौंछि आगि पैसे कें नेय जो आनि॥ वाय विडंग कूट ईहीय॥ कहत सबै ये लेइ समान॥ गुड घीसौं सानि कैं देइ॥ मंद अगिन दूर कारे देइ॥

अथ झोलामारे॥

झोला जा तन जानियें जो नर करै उपाय॥
मरा जे देषि औषधि करै नासौ झोला जाय

चौपाई

धना सौंटि जीरा घट चाय॥ वच दोऊ लीजे मगराय॥

दोहा

ये औषधि सब कीजिये सौरव लीजिये सान॥
और खुदवाय मगाइये झूल सहज ने जा नै॥

जेवटवायउरायके कीजें कुवय अमोल ॥
हयकों देइ पिवायकें झोला को देय ठोलि

अथ खरीटकेल०॥

लीजे तिल्ल न पिसायकें देयतेल मिलयाय ॥
फिरि हंडियामें डारिकें लीजे तुरन उदाय ॥
फिर घूरेमें गाढिये हंडियाको दिन पाँच ॥
छठे दिनालग वाइये तेल वने गुन सांच ॥
तेल लगावे आग सों यही प्रकार खवाय ॥
फेर लेय अन वायकें खाज महा वल जाइ ॥

चौपाई

पांचो खारी नोन मंगावे ॥ आद सेर तिल तेल वनावे ॥
सोलि वनाय पांचौं सुधि वावे ॥ दूध आक नौ टंक मगावे
यह औषधि वटवाय मगाई ॥ दही में डारिये फेरि कढवाई ॥ पहर एक मरदन कर कही ॥ फिर घोडा अन वावे सही ॥
पीरी माटी सों मल वांवे ॥ नव अन वाय खाज मिटजावे ॥

अथ गंठनरोगल०कुंडलिया ॥

काटिकाटि पीवके वचाइ लेइ लोहूके नीबू मगायका
गदी पकेजायकें देय मिलायजु चूना छापिको छानि-
कें ताको सोले इ वनाय लेपन कराय दीजै नीको होय
तेरो रोग गंठन निकारिकें ॥

अथचकवामारेकोल ॥

सीसे पत्र वनायकें पायनमें वंध वाय ॥
ताऊपर तेदागिये रोगजु चकवाजाय ॥

अथचांदनी
मोलकवाकहै

प्रथम एकजाय फललावे ॥ तामें मिरचैं फारिभरावे
चिरवा पेटजायफरभरे ॥ मुरगापेटमैं चिरवा धरे ॥
दूधसेरदशफेरमगावै ॥ तामैं मुरगा कों चढवावे ॥
मुरगा कादिलेइजोतवही ॥ नैनीतेहिवि लोइकढवा
ही॥ वोनैनी हय आंखिन आंजे ॥ अंजन अंजन
चांदनी भाजे ॥

अथघोरीसहरानी

मुरगाकेपेटतेजायफल निकास मिरचैंनौनो कोअंज
नदीजे ॥ दोहा

घोडीसहरानीहोयतौकीजेयहैउपाय॥
नीवूखायपसोसवदाजियेसैनसिकाय ॥

अथवेलकूंचौपाई॥

कारोजीरो पाहिलेंलावे ॥ चारपैसाभरजो वतावे ॥
भूंजगोखरू पांचटकाभर ॥ लेउवीज पुनि वीनसुक्कर
भरकर हींसकीजरलावे ॥ माजूफल तहां औरमिलावे
इनमैं मिरचैं कहींपखान ॥ तीनतीनपैसा परमान ॥

असरे सेर चार सो आने ॥ काहिये औषधि तिन में माने ॥
चौदह गोली कर उनमाने ॥ एकजु दीजे गोली पाने ॥

दोहा

गोली एक खवाय कें ऊपर दूध पियाइ ॥
सेर भरो जो मात ही जाय सु वेलि सुखाइ ॥

चौपाई

लावे खोद इंदरानी कीजर ॥ देखो वाजले सोवे सुन्दर ॥
ये दोनों औषधि वटवावे ॥ पानी वासे संग खवावे ॥

दोहा

ऐसे घाउ सुखाय कें सुनो सयाने लोय ॥
वेलि सुखिये तुरत हीं फेर न कवहू होय ॥

हडाको

पत्थर सम वकुची संग वावे ॥ दोऊ कूट में हई मिलावे ॥
मनसल और सुहागा डारे ॥ जवा खार सर सों निर धारे ॥

दोहा

राई साजी चोख लें सम करि सवै वटाइ ॥
मूसरी के संग एक की वांधे हडा जाय ॥

अथ घोडकी दारक

गूगल १ सुहागो फूला १ सावुन १ हरद १ पोस्त के डोडा १ सोठ के चूनमें मांहि गोला वांध सांझ सवारे देइ सरदी जाय रोज तीन देउ ॥

अथ घोड़े के छानी बंद की दवा

गूगरद का एक भर ।। गाय के दूध में घोर नाहिं सो पिवाइ छा
ती खुलै आगु खुलि जाय सान दिना देय ।। ६४ ।।

अथ बाहे की का रोग

जीरो कुचिला लेइ सोंठ चूरन ताहि पुनि देहि लेपन वा
द यहे को नासे ।। ६५ ।।

अथ खाज की दवा

बाकुची मनसिल गंधक आनि ।। बायबिडंग चोख
जो मानि ।। पीस कूट कैं इकनक कीजै ।। पानी संग सब
को धरि दीजै ।। प्रात मथैले करुओ तेल ।। घोड़ा अंग
लगावै मेलि ।। घड़ी तीन घाम मैं राखै ।। पानी मैं धोवैह
रि भाषै ।। रोग नसै जो घीव लगावै ।। खाज खारिस्त कौं तुर
त नसावै ।।

अथ विसवेल की दवा

पहिलें लो हलीजे ये चार ।। बंद खोल पीछें उपचार ।।

मल्हम विधि ।।

एक एक बद चून सो लेइ ।। सो चौरें घृत कौं धोलेय ।। + ।।
पात बमूर नीम के लीजै ।। गांठ सींगिया सहित जो कीजै ।
मुरदा संग सुहागा लीजै ।। इनको पीस मिहीन करीजै ।।
छेरी छीर मैं घीव मिलावै ।। खैर सुपारी सिंगरफ लावै ।।
करुओ तेल मोम लै आवै ।। या विधि सब की मल्हम ठानैं ।।
अम्ब अंग फोहा तहां धरै ।। निश्चै सो विसवेल हरे ।।

अथ अन्नबंद कौ दवा

सीरा प्रथम घान को करै ॥ फका गमोरोस अन्न भरे ॥
घोड़ा कौं दीजे भर नार ॥ खुलन देइ पेसा वाहि डारि ॥

अथ बस्तीदवाई कौदवा

कीरी जीरी मिरच मगावै ॥ स्यौन सुहागकौ कर बावै ॥
सज्जी कुटकी राई लेय ॥ सबको एक मिला करदेय ॥

अथ मसालो घोड़ाके पाचनकौ

सोंठ सेर ऽ॥ मिरच कारी सेर ऽ॥ पीपर सेर ऽ। पीपरा मूल से र ऽ॥ हर्ई का बक्कल सेर ऽ॥ बहेडे का बक्कल सेर ऽ॥ कंजा की मींगी सेर ऽ। घुडबच सेर ऽ। कालेसर सेर ऽ। आंबा हरदी सेर ऽ। गूगर सेर ऽ। हींग टका १ भर। बिसखपरे की जड सेर ऽ। नोंन पांचों सेर ऽ॥ अजमायन सेर ऽ॥ राई सेर ऽ॥ साजी सेर ऽ। सुहागा फूला १। कारी पंदा ल ऽ॥ फिटकरी सेर ऽ। गूलर की छाल सेर ऽ। इन सबका चूरन कार चून मैं मिलाय देय तो बादी जाय सूल जाय सरदी जाय जहर जाय भूख खुले मोटा होय गांठि स ूजन परक जाय ॥

अथ बायगुल्म कौ दवा

हींग टका भरि तामैं देय ॥ जवाखार और बायबिडंग ॥
सांचर सोंट और गंधक गंध ॥ अजमायनि सम भाग कराइ
इन सबकों लीजे पिसवाय ॥ अदरक रस मैं गोली-

बांधै।रोगनैसबऔषधीकूंसाधै॥गोली।कज्जु घोडादी
जे॥वायगुल्मरोगहैहारलीजे॥

अथघोड़ेकेमोटेहोनेकीदवा॥

चारसेरमहुआमगवावै॥औसीलेसोभरसुजावै॥
मेथीअजमायानेसमभाग॥टकाएकभरखीलसुहाग
गुडसोंसानेलेपसोधरै॥मोटोहोयजसुसुखभरै॥
नकुलकृतप्रपमोहेसः॥

अथबत्तीसामसालोसर्ववायपर॥

हर्ड ३भर।बहेडे१भर।आमरे१एकटकेभर।बडीहर्डै
१टकेभर।सोंठ१एकटकेभर।कालीमिरच१एकटके
भर।पीपर१टकाभर।पापरामूल१टकेभर।पोहकर
मूल१टकेभर।कुटकी१टकेभर।कीरीजीरी१टकेभर
जीरास्याह१टकेजीरासफेद१टके॰हलदी१टके॰
दारुहलदी१टके॰चीतेकीछाल१टके॰कुचिला१ट
के॰वायविडंग१टके॰वायसुरई१टके॰वापधुम्मा१
टके॰अजमोद१टके॰कायफल१हींग१बच१देवदारु१
सज्जी१सुहागा१सेंधानोन१एटकेभर·कालानोन१ट
के·सांभरनोन१टके·खारीनोन१टके·घुडवच१टके॰
मेथीकेबीज१टके·कचरिया१टके·तेजबल१टके॰
वायतुमरा१टके॰इनसबकोपीसचूरनकरएकटके
नित्यदेयतौसर्ववायुजाय॥

अथ मुहांकी दवा ॥

घोडेके मुहमैं छाले पड़जाय ताकौं मुहां कहते हैं ॥ घास न चरीजाय तव मालूम पडे तव मुखमैं देखलेय फलक इलायची छोटी १ तवाखीर १ खैर पापरी १ मउघसौं मिलाय मुख के भीतर लगावे दिन ८ तौ फलक मिटे ॥

अथ वायशूलकी पीरकौं सो दवा

अंडीको तेल १ सरसोंका तेल १ तिलका तेल १ गायकाघी १ दूध १ सेर सवको मिलाय नालिमैं करिकें प्यायदेतौ शूलजाय ॥

अथ कलेजा फटेकी दवा ॥

फेफनेडारे लालसफेद तौ करेजा फटो जानियें ॥ गायका घी ऽ॥ सेर काली मिरच १ टका भर पीस घीमैं- मिलाय नालसौं प्यावै तौ रामकरै तौ आराम होय ॥

अथ ठंडो मसालौ

जेठमासमैं वा चौमासेमैं देयलीद वासूं करै सोनकरैलीद कौ संगो पानीवासूं करन है सो पानी वंद होयवासंनकरै घासदानोंपचै हरदीतीन पाव ऽ॥ हाल्यौं ऽ॥ कुटकी ऽ॥ कारीजीरी ऽ॥ राईमकरा ऽ॥ सज्जी लोदन ऽ॥ सोयाके वीज ऽ॥ पमारके वीज ऽ॥ पीपरामूल ऽ- वाय विडंग ऽ। मिरचैंद षिनी ऽ। चूरनसवको करे अदककौ रस सेर १ मैं सानिकैं देय तौ मसालो गरमन करै सवरितुमैं षवावै अैवन करै गरमीन करै॥ इति

قدر گوہر شاہ داند یا بداند جوہری

نئی کتابین - آجتک دیکہی نہ سُنی - عجائبات دنیا کا آئینہ - ترقی کا زینہ - اور معلومات کا خزینہ - ہر ایک اپنے مضمون مین کامل معتبر تجربہ سے اور کار آمد - ہر ایک کتاب مین اتنا مضمون کہ اور دس کتابون مین نہ ملے - عبارت مختصر تحریر گنجان - اسیواسطے اسقدر سستی اور چہوٹی - ایک صفحہ مین دس نئی بات معلوم ہون - انکو ہندوستان کے علاوہ برہما بلوچستان تک کے ہر قوم اور ہر پیشے کے صاحب برابر شوق سے خریدتے ہین - ایکساتہ سبکے منگانیمین محصول کی کفایت - آخر منگانی سب پڑیگی - تنی ہمت نہو تو ایک بطور نمونہ منگا کر دیکہو -

دیکہیے ہماری صفائی معاملہ - تعداد صفحات بہی بتلادی - اب خوب سوچ کر کتاب منگائیے -

اشتہار کے موافق نہون تو ہم واپس لینے کے ذمہ دار

تمام کتابین پہینک دو اور صرف ہماری کتابین پڑہ کر ہر فن مولا بنجاؤ - مگر سب کتابین منگاؤ کسیکو مت چہوڑو ورنہ اوسیقدر کمی رہیگی - دوستون کو تحفہ اور طلبا کو انعام دو تو ہماری کتابین - الماریون مین سجاؤ بچونکو پڑہاؤ - اور ہمیشہ پاکٹ مین رکہو تو ہماری کتابین -

انکے ذریعے سے ہزار ہا روپیہ کمالو - یا اپنا صرف بیجا بچالو

ہمکو دہوکے باز سوداگر نہ سمجہیے - ایک دفعہ ضرور آزمائیے -

کچھ تو خوبی ہے جب - ان کتابون کی تہوڑے عرصہ مین ولایت تک دہوم مچگئی بڑے معزز افسرون اور عالمون نے انکی بڑی تعریف کی - اور راجہ نواب وزیر ڈپٹی کلکٹر ڈاکٹر ساہوکار رئیس سے لیکر پٹواری اور چوکیدار سبکے ہاتہون مین پہیل گئین -

یہ کیا بیچنے کے قابل ہین مگر آپکی خاطر - اور زمانہ کی خوبی

ہماری کتابون کی قیمت بیشک زیادہ ہے مگر مال بہی ویسا ہی عمدہ ہے - اگر ہم بہی فضول باتونسے ورق سیاہ کرتے تہوڑا دودہ اور بہت سا پانی ملاتے خراب چہپواتے موٹا لکہاتے تو سستی بیچتے اور آپکے وقت اور روپیہ کا خون کرتے - یہ کتابین تو ہزار ہا روپیہ کہو کر صد ہا جلدین پڑہ کر اور اپنی عمر اسمین برباد کرکے تیار کرپائی ہین -

قیمت بہی کچھ زیادہ نہین - غنیمت ہے جو دو ایک روپیہ کے خرچ مین کسی مضمون سے واقفیت کامل ہوجاوے

نمونہ نمبر ۱۵ - ماہ نومبر ۱۸۹۶ء - پیارے لال زمیندار بروتہا ڈاکخانہ ہر دواگنج ضلع علیگڈہ

हमारे कुतुबखाने में

एक प्राचीन हाथ की लिखी पुस्तक शालहोत्र की धरी थी उसको देख कर जिस घोडे का इलाज किया उसी को तुरंत आराम हुआ इस पुस्तक पर नकुलउवाच: लिखा था इस्से और भी निश्चय हुआ कि यह ग्रंथ प्रमाणीक है परंतु इस पुस्तक के पन्ने खंडित और कीड़ों के खाये थे इस लिये बड़े श्रम और व्यय से देश के उपकारार्थ हमने खोज कर बड़े जमींदारों और घोड़े के शालोत्रियों से पूछ पूछ कर विध मिलाई तब यह पुस्तक तय्यार कर पाई इसमें ऐसे नुसखे लिखे हैं जिनको बहुत कम लोग जानते हैं

इस की रजस्टरी हस्ब कानून करा ली है कोई साहब इसके छापने का इरादा न करै—

हमारे कारखाने में और भी अनेक प्रकार की पुस्तकें छपी हैं जो देखने लायक हैं

बाबू प्यारेलाल जिमींदार मौजे बरौठा
थाना हरदुआगंज जिला
अलीगढ

शालिहोत्रतंत्र

अर्थात्

जिस को बहुत परिश्रम से ठाकुर केदार
सिंह निवासी माधौ नगर परगनै तालिग्राम
ज़िलै फ़र्रुख़ाबाद ने
बनाया
कि जिसमैं हर मनुष्य कौ कुल घोड़ा घोड़ी
का हाल मय ऐब हुनर के मालूम होवैं
यानी
जितनी बीमारियां घोड़ा घोड़ी को होती हैं
उन के लक्षण और दवाइयां भी
ठीक ठीक तौरपर
लिखी हैं

मतबै दिलकुशा वाक़ै कम्प फ़तेहगढ़ मैं ब
एहतमाम बाबू विश्नु स्वरूप के छापा गया
पहिलीबार ८०० जिल्द | सन् १८९१ ई० | मूल्य प्रति पुस्तक =) आ०

सुद्धासुद्धपत्रम्

पृष्ठ	पंक्ति	असुद्ध	सुद्ध
३	११	कहाये	कहायो
४	१५	तत्र स्वृम्व	तत्र मरव म्व
८	२३	उत्तम है सोइ	उत्तम है सोउ
९	१०	चौरी	भौरी
१०	२३	षाजी देखि	वाजी देखि
११	१९	अंगल वेद	अंगुल वेद
११	२३	विसखौ	विसेखौ
१२	१५	उर भानु	उर मानु
१२	२१	जंचा जगुल	जंघा जुगुल
१४	१७	पष्टी	षष्टी
१५	२१	अथ स्वगति	अथ अस्व गति
२३	१९	राजनी	रजनी
२४	२५	सीलवात	सलिवंत
३२	२५	भिजव	भिजवै

श्री गणेशाय नमः

अथ शालिहोत्र प्रारंभः

छप्पै—गवरि नंद सुखकंद फंद दुख द्वंद निवारन॥ एक रदन गज बदन सरण भव भय के टारन॥ विघन हरन विघनेश शेष गुण ज्ञान उजागर॥ ध्यावत देव अदेव शिवासुत सो अति आगर॥ है लाल लाडिलो शंभु को सुंडा दंड उदंड वर॥ केदारसिंह गंणेश जै गण नायक आनंद कर॥१॥ कवित्त॥ सदा सुख राशी तड़ित तड़ दम्बराशी शशि पूरण प्रभासी बुद्धि सागर सुधा सी है॥ कारण कलासी करुण कारण कृपा सी कर कमलासी सिद्धि साहस विलासी है॥ दीनन दया सी मंद मंद स्मितासी मं डन मया सी नित्य हर्षित ड्डलासी है॥ काम तरु विभासी किधौं चिंता मणिरासी पट तरिनतासी मातु कशमीर वासी है॥२॥ मत्त मयंद॥ मूरति स्याम सी मो मन मैं बसिये निसि वासर बांके विहारी मोर के पंख धरे सिर भार लसौ कच मेचक घूंघुर वारी॥ कुंडल लोल कपोल अमोल सुमारु अहो मुरली अधरारी॥ बैस किदार कहे मुख चंद पै डारिये कोटि मनो भव वारी॥३॥ पुनः॥ कुंद कपूर से अंग मनोहर गंग तरंग जटा सिर धारी॥ भाल लसै शुभ चंद कि खौरि कपालन माल विसाल सुधारी॥ नैन निकन्द हरैं दुख द्वंद सु दीनन पै ममता अधिकारी॥ बैस किदार के आय बसौ उर पार बती पति श्री त्रपुरारी॥४॥ कुंडलिया॥ शालिहोत्र मुनि वर सुनौ बिनती यह चित लाय॥ बरणौ अश्व चिकित्सिका दीजे युक्ति बताय॥ दीजे युक्ति बताय लिखौं भेषज अनुसारी॥ उपकारी यह ग्रंथ नाथ तुव मतो निहारी॥ जाते रहैं

वलिष्ठ तुरंग जाति सै सुख पावैं ॥ रोग व्याधि नहिं निकट कबहूं सो तिन के आवें ॥५॥ मत्त मयंद ॥ भेरवज अम्ब कहावत हौ तुमही तौ भये मघवा हितकारी ॥ पच्छन ते जु करे हैं निपच्छ करी तब अम्बन वीनती भारी ॥ गुण दोष विभाग कहे उनके भलि भांति चिकित्स कि रीति विचारी ॥ देहु बताय दया करि के वह युक्ति जो ग्रंथ बनै सुभकारी ॥६॥ दोहा ॥ मघवा सौं जा विधि कही शालि होत्र मुनि भाखि ॥ नकुलेक ही सहदेव सौं यथा तथ्य अविलाखि ॥७॥ औरौ बहुतक विन ने कीन्हो यथा विचार ॥ सो सम्मत अब मैं कहौं निज बुधि के अनुसार ॥८॥ बहुतक को मत देखि के कीन्हों मतो एकंत ॥ अब भाषा वरनन करौं शालि होत्र को तंत ॥९॥ छंद चकोर ॥ एक समय सुर नायक जू गुरु देव सौं आय कही कर जोर ॥ दानव दुष्ट वलिष्ठ भये सु लखे उनके सु पराक्रम घोर देहु बताय सो नाथ उपाय हनै रण मांहि तिन्हे वर जोर ॥ या विधि से रिपु जीति लहैं सुख देव सबै यह वीनती मोर ॥१०॥ सोरठा ॥ सुनि सुरपति की बात वाचस पति अस भाष्यो ॥ छिन्न पच्छ करि तात बाजिन निज वस कीजिये ॥११॥ सुनि सम्मत गुरुदेव शालिहोत्र मुनि सौं कह्यो ॥ तुम जानत सब भेव करौ काज नि बुद्धि वल ॥१२॥ मत्त मयंद ॥ काटिके पच्छ करे जो निपच्छ मुनीस ने लाय सुरेस कौ दीन्हे ॥ सूरय पुत्र वलिष्ठ हुते मघवा वस आप न सो करि लीन्हे ॥ उच्च पराक्रम जाति के उच्च कहे पशु नाहि हैं देवन चीन्हे ॥ वाहन ऐरावत नागि तवे सुरनायक के बहु कारज कीन्हे ॥

॥१३॥ दोहा ॥ संप्त अब्धि ऊपर लखौ नन्द इन्दु परमान ॥ कहिये विक्रम राजको एह शाको सुख दान

माघ शुक्ल पूर्णा तिथी शशि दिन मघा नक्षत्र ॥ कुंभ अर्क लखि मै कह्यो शालि होत्र के तंत्र ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ ग्रंथ हेत उपचार सज्जन मम विनती सुनौ ॥ निसु दिन करौ विचार निज वुधि बल्ल हि भरोस नहिं ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ तेहि ते विनय करौं सब पा हीं ॥ साधु कृपा कछु दुर्लभ नाहीं ॥ अनुचित लखि जनि कीजै कोहू ॥ किंकर जानि धरौ उर छोहू ॥ १८ ॥ भूल चूक जो ग्रंथ निहारैं ॥ कृपा द्रष्टि करि ताहि सुधारैं ॥ १९ ॥ दोहा ॥ पता सकल अपनो कहौं सुमिरि उमा वृष केतु ॥ माधव नग्र निवासु मम सालिग्राम निकेतु ॥ २० ॥ ज़िला फ़र्रुखा बाद है अति पुनीत शुभधाम ॥ सुर सरि पावनि जहं वहीं पूरण जनमनकाम ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ क्षत्रि वंस कुल वैस कहाये ॥ वधिक करि कर्मकांस तेहि जायो ॥ २२ ॥ नहि कीन्हे कछु मैं शुभ कर्मा ॥ नाम केदार सिंह है वर्मा ॥ २३ ॥ पिता जवाहर सिंह वखाने ॥ जग जाहर द्विज गुरु सनमाने ॥ २४ ॥ तिनको सुत मै अति मति मन्दा सज्जन हसौ न करि कछु निन्दा ॥ २५ ॥ हंसिवे योग वात अधिकाई ग्रंथ हेत मै करौं ढिठाई ॥ २६ ॥ कुंडलिया ॥ सज्जन जन विनती सुनौ कहौं उभै कर जोरि ॥ पर उपकारी ग्रंथ लखि दीजे मोहि न खोरि दीजे मोहि न खोरि भूल औ चूक सुधारौ ॥ उपकारी लखि ग्रंथ सदा उर कृपा विचारौ ॥ कह केदार कवि वैस होउ विद्वज्जन वरदा याते होय प्रचार ग्रंथ जग एह सो सुभदा ॥ २७ ॥ दोहा ॥ ग्रंथ भूमिका मै कही निज बुधि के अनुसार ॥ अब आगे बरनन करौं यथा योग उपचार ॥ अथ औषधि विचार कथनं ॥ मत्तगयंद- जहं चंदन है जु कह्यो पुनि सो तहं रक्त सो चंदन कौं परमानौ ॥ मिर्च कही पुनि है जो जहां तहं कारी मरीचिहि कौ करि मानौ ॥ दूधद्री घृत मूत्र कह्यो तह केवल गाइहि को करि जानौ ॥ लोनु कह्यो

जहँ है सु तहाँ वङ्क सेंधव लौनक्रु कौं सो वखानो ॥ २९ ॥ पुनः काल कहो है नाहि जहाँ तहँ प्रात समय सोइ काल गनीजे ॥ भाग है नाही कहो सो जहाँ तहँ तुल्य समान सो ता विधि लीजै ॥ अंग है नाहि कहो जहँ द्रव्य सो मूल मगाय कि ताहि कि दीजे ॥ गीली कही पुनि दूनी सो द्रव्य औ सूखी सो भाग बराबर कीजै ॥ ३० ॥ अथ अश्व जाति वरनने ॥ दोहा ॥ उत्तम मध्यम नीच लघु औ कनीय पहिचानि ॥ चारि जाति के तुरंग हैं मुनि वर कहे वखानि ॥ ३१ ॥ दंडक ॥ ताजी और तुरकी खुरासानी तीनि उत्तम करि मुनि वर वखाने अश्व एते लखि आइये ॥ गोरि कांण कोकण गौड़ हार देसन के मध्यम तुरंय सबै सो तौ बताइये ॥ और एक जाति राज सूली पुनि कहा वसिष्ठे याही तरह मानि फेरि तेउ पुनि गनाइये ॥ ऐसे सो विचारि परखि बाजी खेत खेतन के मुनि मत अनकूल यथा तथ्य करि जताइये ॥ ३२ ॥ अथ नीच ॥ दोहा ॥ माड़वार कश्मीर के उत्तर दिशि के अश्व ॥ नीच कहावत नकुल मत तुरंग तद् खस्व ॥ ३३ ॥ अथ लघु ॥ दोहा ॥ परवत कंदर सावरो सिंधु देस के पार ॥ और देश के जानिये सोक नीय निरधार ॥ ३४ ॥ अथ वरण वरननं ॥ दोहा ॥ चारि तरह के होत हैं चारि वरण के अश्व ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैस्य पुनि सूद्र कहत हैं दश्व ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ अश्व जाति दरियाई जानो ॥ ब्राह्मण वरण पुनीत सो मानो ॥ ३६ ॥ वाहि जाति के अर्व्वि कहावें ॥ क्षत्री जाति सदा मन भावे ॥ ३७ ॥ सूर समीर जे तुरंग एराकी ॥ करस वरन पुनि करे चलांकी ॥ ३८ ॥ मुगल उलूरु के परवत चारी ॥ अलपज वरण कहे निरधारी ॥ ३९ ॥ सुमन सुगंध जासु तनही के विप्र वरण जानों तेहि नीके ॥ ४० ॥ दोहा ॥ रण मे तेज उदेत ऊड़ जल पैरे समुहाय ॥ सूक्ष्म रूप अनूप छवि विप्र वरणके भाय

॥ ४१॥ चौपाई ॥ अगर वासु युत क्षत्री जानो ॥ धीर चपल चातुर पहिचानो ॥ ४२॥ रण लखि क्रोध धरै अति आतुर॥ बल पौरुष जनु तेज़ दिवाकर॥ ४३॥ दोहा॥ क्षत्री रण अति बांकुरो रवि कुल तेज प्रचंड॥ चिबुक नोय ताड़ित करै पीवै तोय अखंड ॥ ४४॥ चौपाई॥ घृत सुगंध ते वैस्य बखानो॥ शालिहोत्र मुनि मत अनुमानो॥ ४५॥ सुस्त चुस्त गति उभय सदाई॥ वैस्य जाति लक्षण अधिकाई॥ ४६॥ दोहा॥ सुद्ध सुगम मारग रहैं रहै सदा आधीन॥ डरपै देषत भीति भय वैस्य जाति परवीन ४७ चौपाई॥ मीन वासु जेहि के तन होई॥ जानौ अश्व सूद्र च-रुतोई॥ ४८॥ दोहा॥ मंद मंद भोजन करै पानी देखि डराय मारे पै सूधो चलै जानौ सूद्र सुभाय॥ ४९॥ सोरठा॥ विप्रहि सरल सुभाय क्षत्रि सूर क्रोधी अमित॥ वैस्यस दोष बताय सूद्र जाति निरबल सदा॥ ५०॥ चौपाई॥ विप्र बरण चारौ अधिकारी क्षत्री जाति सो लेहु निहारी॥ ५१॥ वैस्य बरण दुइ कर आरू-ढ़ा॥ सूद्र सहाई जानिय गूढ़ा॥ ५२॥ दोहा॥ नृप के सुभ चारो बरण वाजी वाहन योग॥ शालि होत्र मुनियों किये भू-तल प्रघट प्रयोग॥ ५३॥ सकल काज कहँ द्विज सुभग रणहि-त क्षत्री जाति॥ वणिज काज हित वैस्य पुनि सूद्र अपर बहु भांति॥ ५४॥ चौपाई॥ सोवै सदा जगै रण माहीं॥ कै दाना मै कंकर जाहीं॥ ५५॥ दोहा॥ ऊरध मुख देखत करै अग्र पाय लिखि भूमि॥ हींसत जस दै स्वामि कौ रहै सदा सुख चूमि॥ ५६॥ साजत अश्व जे लीदि करि लक सका करि देइ अनरथ स्वामिहि हेत सो तुरत जताये देइ॥ ५७॥ थिरकावै जो पुच्छ को बार बार निदान॥ सो भूपति भूलोक से तुरै करै पया-न॥ ५८॥ पुच्छमांहि चिनगा झरैं जो वाजी निसि देख॥ नास

करै धन धाम सो रण भाषै अवरेख ॥ ५९ ॥ इति जाति ॥ अथ रंग ॥ दोहा ॥ सात रंग बाजी कहे तिन के भेद अनेक रंग रंग मिश्रत भये बरणत बुद्धि विवेक ॥ ६० ॥ सेत रक्त अरु पीत कहि पुनि सारंग बखानि ॥ पिंगल नील औ कृष्ण कहि बरणत हैं सज्ञान ॥ ६१ ॥ चौपाई ॥ सब ते अधिक सेत कहें ज्ञानो ॥ राज तिलक सिर मौर बखानो ॥ ६२ ॥ सवैया ॥ सेतु तुखारस मान कहैं नित भूपति को सुख दायक ही को ॥ रक्त सो कुंकुम रंग कहैं पुनि पीतल सै रंग है रजनी को ॥ सारंग सेत असेत मिले अरु पिंगल पिंगलगै रंगु फीको ॥ नील तुरी रंग पंनग के कहि स्याम सो रंग है नील मणी को ॥ ६३ ॥ चौपाई ॥ सेत चरण तन पीत सुहाई ॥ अच्छ सेत भूपति मन भाई ॥ चरु वाक सो तुरी कहावै ॥ भले भाग जाके घर आवै ॥ ६५ ॥ स्याम सरीर चरण सित चारौ ॥ भाल तिलक विधि सम निर धारौ ॥ ६६ ॥ मल्ल कच्छ सो बाजि कहावै ॥ पूरण पुण्य जासु घर आवै ॥ ६७ दोहा ॥ असित गोल मंडल बदन मल्लि कथ्य अनुमान ॥ सेतचरण चारो लखै सो यम दूत समान ॥ ६८ ॥ चौपाई ॥ चारो चरण सेत शुभ जाके ॥ मुख पुच्छरु वच्छ सो सेतहि वाके ॥ ६९ ॥ मंगल अरु एक नाम कहावै ॥ दिन प्रति मंगल मोद बढ़ावै ॥ ७० ॥ दोहा भस्म रंग जेहि अश्व को तजौ दूरि ते ताहि ॥ कूर कहावत नकुल मत सेति न लीजे बाहि ॥ ७१ ॥ रंग न जेहि को समुझिये बाजी है य विशाल ॥ और अश्व को भय करै ताहि तजो ततकाल ॥ ७२ ॥ चौपाई ॥ अश्व अवनि बहु रंग गुण होवा ॥ वरणत विबुध पाप मत चोवा ॥ ७३ ॥ शालि होत्र मत नकुल निहारी ॥ मै संक्षेपहि कहौं विचारी ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ चारौ चरण जु सेत हैं सेत बरण मुख चंद पच कल्याण सुजानि ये दिन दिन करत अनंद ॥ ७५ ॥ मिले रंग न

औरौ सुभग अब लाव कहौं विचारि ॥ स्याम नील अवलाद सुभग नकुल मते निरधार ॥७६॥ बाल अवस्था नील है दिन दिन बाढै स्याम ॥ तेहि वाजी को परि हरौ भूलिन राखौ धाम ॥ **छंद गीता**- संदली संजाव कहिये समुद अक्षर गा लाल ॥ दोंनाद पायक जरद जानौ चपल चंचल चाल ॥ दोंलया कुम्मैत सुरखा ची नी औ चंपाल ॥ स्यामो कारण उच्छो अवा सुभग नौ वाजि विसाल ॥७७॥ **छंद नाराच** ॥ अश्व जाति रंग लगि॥ कहां लौ लखानिये भिन्न२ भाय निरखि जहां लौ प्रमानिये ॥ वाद जाइ ग्रंथ कहतपा र नाहि पाइये ॥ सूक्ष्म रीति ताहि हेत अवतौ सो गनाइये ॥७८॥ इ **अथ अश्व जन्म फल**-। **दोहा**। अब घोरा के जन्म फल सकल कहौं समुझाय ॥ शालि होत्र मत निरखि कर शुभ औ अशुभ ग नाय ॥७९॥ **चौपाई**॥ प्रथम पहर निसि अति शुभ कारी ॥ जन्मत तुरंग हरत दुख भारी ॥८०॥ शत्रु नासि धन धान्य बढावै शालि होत्र मुनि मत अस गावै ॥८१॥ द्वितिये पहर जन्म फल चोरी ॥ निधनी के धन करति बहोरी ॥८२॥ त्रतिये कछु चिं- ता दरसावै ॥ है करि अरणी बहुरि सुख पावै ॥८३॥ पहर च तुर्थिक मध्यम कहिये ॥ शालि होत्र मत या विधि लहिये ॥८४॥ **अथ दिवा जन्म विचार**॥ **चौपाई** ॥ जन्मत प्रथम पहर दिन घोरी ॥ देति आप दातहि घनेरी ॥८५॥ द्वितिये पहर फल अति भय दायक ॥ बरणत शालि होत्र मुनि नायक ॥८६॥ संकट ना हि परै अति भारी ॥ चिन कुटुंब विनासन हारी ॥८७॥ पहर ती सरो अधम बखानौ ॥ महा निषिद्ध चतुर्थक जानौ ॥८८॥ **दोहा** उत्तरायन के जन्म फल महा पुनीत बखान ॥ दक्षिण मध्यम कह त हैं श्रावण अति दुख खानि ॥८९॥ **अथ रदन विचार**॥ दो प्रथम दंत स्फटिक सम वेद होत परमान ॥ बहुरि पीत दुई के भये

टूटत रदन निदान ॥९०॥ तीस महीना मै सदा दंत होय दुइ दूरि
दुइ दुइ षब्द प्रमान पुनि गिरत ऊगत भरि पूरि ॥ ९१ ॥ सप्तम
ब्द पर अंत पुनि स्याही रदन समान ॥ द्वादस ते स्याही नजत मुनि
वर करत बखान ॥ ९२ ॥ बत्तिस वर्ष प्रमान करि आयु अश्व है लेख
उत्तम जाति जो अश्व है तिन की आयु विशेष ॥ ९३ ॥ खुरासानि अर
बी कहे वाजको और बखानि ॥ तिनकी नैसी आयु है रदन रदन प
हिचानि ॥ ९४ ॥ **अथ आवर्त वरननं ॥ दोहा ॥** आवर्तहि
सुभ असुभ जे तिन के तस फल जानि ॥ शालि होत्र अनुसार मत
विधिवत कहौं बखानि ॥ ९५ ॥ **चौपाई ॥** मध्य भाल भौंरी जो
लहिये ॥ एक निरखि अति शुभ सो कहिये ॥ ९६ ॥ कंध तरे चौरी
निरधारे ॥ शुभ दायक पुनि ताहि विचारे ॥ ९७ ॥ दुइ सुभ दक्ष कपो
ल सुहाई ॥ शिव संज्ञिक तेहि नाम गनाई ॥ ९८ ॥ ग्रीवा ऊपर तीनि
निहारे ॥ नृप घर योग ताहि निर्धारे ॥ ९९ ॥ **दोहा ॥** अष्टा वर्त जो
कंठ मैं जा तुरंग के होय ॥ मंगल अष्टक नाम है नृप घर लायक
सोइ ॥ १०० ॥ कंठ माहिं भौंरी सुभग एकै होय निदान ॥ तासौं चिं
ता मणि कहै मन इच्छित फल दान ॥ १०१ ॥ चिंतामणि जौ देउ मणि
ग्रीवा मध्य लखेहु ॥ पुनि गौ मणि कौ आदि दै सब उत्तम कहि दे
हु ॥ १०२ ॥ भाल जुगुल आवर्त्त पुनि जा तुरंग के होइ ॥ चंद्र अर्क तेहि
कहत हैं सबै सयाने लोइ ॥ १०३ ॥ एक नासिका वंस मे उजै भौंरी
जोय ॥ अति शुभ तासौं कहत हैं नृप गृह लायक सोइ ॥ १०४ ॥ चौ
पाई ॥ अरु माथे पर भौंरीं दोय ॥ सीधी पेंच कुंभ कहैं सोइ ॥ १०५ ॥
दोहा ॥ पछिले पाय न अश्व के पिंडुरिन नीचे दोइ ॥ विजय करण भौं
री लखौ अति उत्तम हैं सोइ ॥ १०६ ॥ द्वै द्वै दुहू कपोल पर उजै भौंरी अ
श्व ॥ इन्द्र नाम तेहि कहत हैं विजय करै सर वश्व ॥ १०७ ॥ नराचं ॥
लखो सुकान मूल मे कि कान पै परेखिये ॥ करै विजै सु जुद्ध मै विजै सु नाम

लीखिये ॥ परे परेखि नाक मध्य एक तीनि के जहाँ ॥ करे सु चक्र वर्ति वाहि राज्य भोग है तहाँ ॥ १०८ ॥ अथ असुभ भौंरी ॥ चौपाई ॥ अब भौंरी पुनि असुभ बखानो ॥ जो कछु शालि होत्र अनुमानो ॥ १०९ ॥ भौंरी तीनि लिलाट परेखो ॥ त्रकुटा तासु नाम अब रेखो ॥ ११० ॥ भय दायक सो अश्व विचारो ॥ भाल तीनि आवर्त निहारो ॥ १११ ॥ दोहा ॥ बायें दिशि जो भाल पर भौंरी लखिये मित्त ॥ महा असुभ तेहि कहत हैं करे नृपति भय चित्त ॥ पुनि द्वै भौंरी भाल पर मिली होय जेहि अश्व ॥ मेढ़ा सिंगी कहत हैं नासु करे सरवस्व ॥ ११३ ॥ चौपाई ॥ नथुनाकु पर भौंरी जोई ॥ महा निषिद्धि कहत हैं सोई ॥ ११४ ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ भुजे कच्छ पुच्छे भल द्वार माहीं ॥ ललाटे नया जानु मध्ये तु याही ॥ लखो गुह्य के पुच्छ तीरे सुगाही ॥ कहौ ठौर नागा करे सिद्धि नाहीं ॥ ११५ ॥ दोहा ॥ जाके भौंरी पीठि पर धूम केतु तेहि नाम ॥ सो परि हरिये दूरि ते जो सुखु चाहो धाम ॥ ११६ ॥ चौपाई ॥ जाके भौंरी त्रिवली माही ॥ ताको भूलि लेत नृप नाहीं ॥ ११७ ॥ तंग तरे भौंरी है सोई ॥ गोम नाम तेहि कह सब कोई ॥ एक दोय के तीनि निहारो ॥ अति दूखित सब गोम विचारो ॥ नाभि प्रजंत तंग तट जोई ॥ काल समान परेखिये सोई ॥ १२० ॥ दोहा ॥ और एक आवर्त पुनि नाभी तट जो होय ॥ यनी कहत हैं ताहि सों अति दूखित है सोइ ॥ १२१ ॥ चौपाई ॥ आंखिन नीचे भौंरी लहिये ॥ आंसू ढार नाम तेहि कहिये ॥ पलकन ऊपर भौंरी जोऊ ॥ ताविधि दूखित है पुनि सोऊ ॥ मूल करण भौंरी जो होई ॥ एक होइ तो असुभय सोई ॥ व्याल रूप जो भौंरी होइ ॥ व्याली नाम कहै सब कोइ ॥ भौंरी दोऊ ओर लखाई ॥ ताहू मध्यम कहत जनाई ॥ भौंरी होइ जंघ जुग जाके ॥ संपति भवन न आवे ताके ॥ भौंरी एक लिंग के पास

से वाजी जानि असुभ निदान॥ अंड कोस पर भौरी होई॥ मेटि देइ स्वामी की सोई॥ बिचि भौरी जो नथी लखाई॥ काहू और परै जो आई॥ महा असुभ परि हरो सु तेही॥ जो चाहौ सुख संपति गेही॥१३१॥ दोहा॥ जेहि वाजी के हृदय महँ दुदावली लसंत तीनि पृष्टि की संपदा नासति देखि तुरंत॥१३२॥ कोखा पर जो पुच्छ पै और वगल के मध्य॥ भय दायक सब जानिये भौरी होइ निखिध्य॥ कच्छ मध्य आवर्त दुइ जेहि वाजी के जानि॥ निज स्वामी की नीर ते मृत्यु कहै एह मानि॥ जो वाजी द्वौ ओठ को संपुट बाधत नाहिं॥ सो वर्जित है गेह मै यम किंकर गनि ताहि॥ भाल टिकुलिका सेत लखि काल बरावरि अश्व॥ खंड खंड है अंग सब नासु करै सर वश्व॥ एक अक्ष कंजा लखौ दूजी नाहि सुपेद॥ ताकी तासौ कहत हैं भय दायक युत खेद॥१३७॥ नाराच छन्द॥ विहीन एक दंत है कै बढ़ि कै एक दंत सो॥ कराल कृष्ण तालु की कि मूस लील संत सो॥ तुरीय एक जानिये सुजाति अंड मैं कसो सुहीन अंग वाढ़ि अंग जानिये सो यों लसो॥१३८॥ चौपाई॥ अधिक दंत कै हीन निहारौ॥ भय दायक सो अश्व विचारौ॥ तालू कृष्ण मूसली देखौ॥ कै शृंगी पुनि अश्व परेखौ॥ चखहीन अरु अरजल जोई॥ एबर अश्व भयानक सोई॥ रोमन मध्य बुंद छद जो है॥ कै फूलत पुनि अश्व जु सोहै॥ शत्रु जानि निज ताको दीजै भूलि के तासु नाम नहिं लीजै॥१४३॥ तोमर छंद॥ है स्याम तालू जानि॥ सो कृष्ण तालू मानि॥ जेहि अश्व के पुनि भाल॥ है तिलक बुंदिन चाल॥ दल भंज ताहि बखानि॥ एह मन नो नकुलीहि मानि॥ एक अंड बाजी देखि॥ एक अंड गनौ विशेखि॥१४४॥ दोहा॥ एक अंड जाके लखण के लघु दीरघ होय॥ ते दूरिहि ते परि हरै जस चाहौं जो कोइ॥ हीन दंत स्वामिनि हनै अधिक दंत

दुख खानि ॥ रुषा तालु अति भय करै दल भंजन कुल हानि १४६ आंसू बहैं जो अश्व के दिन प्रति आठो जाम ॥ महा निरिखध्य बखानिये गनो रोग को धाम ॥ १४७ ॥ अश्व स्वरूप ॥ छप्पै ॥ दीरघ ग्रीवा नैन भाल जाके बिसाल अति ॥ पीन उरस्थल त्रिकुट परें सुंम सूधे सुभ गति ॥ उच्च कंध सुख बड़ो ग्रीव ताही सम पुनि गनि ॥ सुच्छ केस सुभ चारु करण लघु पुच्छ अधर सनि ॥ अति गोल जंघ अरु जानुगन सम सेत दंत बखानिये ॥ इति अंग शुद्ध बाजीन के भूपति के मन मानिये ॥ १४८ ॥ सोरठा ॥ ऐसो बाजी पाय भूपति सुखु मानत महा ॥ समर संघारैं जाय शत्रु घाले सो सदा ॥ १४९ ॥ दोहा ॥ अब बरनौ सब नकुल मत बुध जन लीजो जानि ॥ जो भाखो सारंगधर सो सब कहौं बखानि ॥ १५० ॥ छंद मत्तगयंद ॥ दीरघ आनन पीन पयोधर उच्च सु कंधर ग्रीव निहारौ रोमस चिक्कन ग्रंथित केस सुचामर के सम पुच्छ बिचारौ ॥ घूल भुजा दृढ़ पुष्ट कटी दृग आमिष पूरित सो निरधारौ ॥ अंग बलिष्ठ सबै नहि भांति औ चक्र समान लखो खुर चारौ ॥ १५१ ॥ दोहा ॥ असमान छाती लखौ अति लघु जाके कान ॥ रक्त सु चिक्कन तालु लखि पसुरी सूक्ष्म मान ॥ १५२ ॥ सोरठा ॥ शुद्ध फटिक सम दंत षट अंगुल करणों लखैं ॥ अंग लवेद प्रयंत तालू बरणत अति सुभग ॥ १५३ ॥ चौपाई ॥ एह प्रकार को रूप निहारो ॥ सो बाजी नृप योग बिचारो ॥ अब प्रमाण सो बिधिवत कैहौं ॥ जो कछु नकुल मतो अब गैहौं ॥ १५५ ॥ छंद मत्तगयंद ॥ अंगुल चालिस को गनि कंध कटी तट अंगुल चौबिस लेखौ ॥ पीठि को यह है परमान औ पुच्छ सुचिक्कन द्वादस देखौ ॥ काय प्रमान कहें धजकौं अष्ट अंगुल चारि को अंड बिसखौ ॥ सोलिस अंगुल कोमल द्वारह दो पुनि सोरह को अब रेखो ॥ १५६ ॥ चौपाई ॥ अब प्रमान सों

विधिवत भाखौं ॥ जो कुछ नकुल मतो अभिलाखौं ॥१५७॥ छंद मदिरा ॥ चालिस अंगुल लों गनियै कटि ते अौ पुच्छ लों वीचु जितो ॥ ह्वौ मणिबंध गनौ पुनि ता विधि वैस किदार प्रमाण तितो ॥ याहि प्रकार सों उच्च प्रमान कहौं लघु एकु सौ बीस इतो ॥ अंगुर चारि गनो खुर उच्च मुनीश्वर ही को विचारि मतो ॥१५८॥ पुनः बत्तिस लक्षन और कहे सुविचारि मुनीश्वर के मत सों ॥ दीरघ चारि अौ उत्तम चारि सु सूक्षम चारि गनो चित सों ॥ उन्नत चारि मसीनिनु चार लघु पुनि चारि कहौं हित सों ॥ रक्त सु चारि सुपारसु चारि लखो सब और न हे तित सों ॥१५९॥ दोहा ॥ अब के हौं पुनि अंग सब ठौर ठौर भांति भाखि ॥ नकुल कही सहदेव सों यथा न ध्य अभिलाखि ॥१६०॥ तोमर छंद ॥ मुख केश दीरघ जान ॥ भुज ग्रीव सो परमान ॥ पग नासिका पुट यूथ ॥ अरु भाल उन्नत यूथ ॥ गनि अोठ जीभ सुतालु ॥ ध्वज रक्त नैन विसालु ॥ लघु रंध्र काहु त सुदेहु ॥ कटि वंस पुच्छ सुजेहु ॥ लघु चारि मानौ मित्त ॥ सो वाजि चंचल चित्त ॥ कहि चारि चौड़े जानु ॥ मणि कंध अौ उर भानु ॥ द्वौ कर्ण मध्य विशेखि ॥ है ह्रस्वता विधि लेखि ॥ पारसु सुहोत समान ॥ ह्वमि काह्नत सो परमानु ॥१६१॥ सोरठा ॥ पारसु ह्वत सो होइ सुख कांधे द्वौ जानु नी ॥ लखो वाजि सुभ सोइ ए लक्षन पहि चानि के ॥१६२॥ उदर बीच सुभ होइ द्वौ कपरी के मध्य मंह लक्षण लीजे सोइ जानु सहित ए ठौर सुभ ॥१६३॥ दोहा ॥ वक्षस्थल जंघा जुगुल सिखा धनस्थल चारि ॥ पुष्ट मसील जानिये ए सब सुखद विचारि ॥१६४॥ शालिहोत्र मुनि नकुल मत लक्षण वरण वतीस ॥ ऐसे वाजी सुभ गनो चाहत जिन्हे महीस ॥१६५॥ अथ वाहक विधान छंद मदिरा ॥ आसन बांधि भली विधि सों कटि डालें नहीं थिर ता करि के ॥ धारि जो दृष्टि सुकानन मध्य

गहै पुनि रासि हिता करि कै ॥ घालै न चाबुक ठौर कुठौर सु क्रोध तजै समिता करि कै ॥ वाजि विधान भले समुझै तन सुद्ध रहैं दृढ़ता करि कै ॥१६६॥ **तोमर छंद** ॥ जो जान अश्व विधान ॥ आरूढ़ गति पहिचान ॥ विद्या वगाही रूप ॥ पूजित सभा ते भूप ॥ १६७॥ **दोहा** ॥ जे नहिं जानें अश्व गति आरूढ़न के भेद ॥ बोद्धा द्रष्टा ते बूझ्य ये उपजत देखत खेद ॥ १६८॥ **छप्पै** ॥ धीरज बुद्धि विवेक अंग निर्मल अति राखै ॥ दृढ़ता चित मैं धारि झूठ नहि भूलि के भाखै ॥ साहस सरस विचार सदा उत्साह बढ़ावत इंद्रिन निज वस राखि असन की चास नसावत ॥ कठिन काल सम प्रवृति जेहि सत्व योग समुझै सकल ॥ वेस बंस केसर कहु अश्व वाह एहि भांति भल ॥ १६९ ॥ **छंद नरिंद्र** ॥ संग्रह ईंधन अन्न जल राखै तीर सदाहीं ॥ परसै ना अब लोकि डरै नहिं धीर धरै मनमाहीं ॥ रिपु के सैन प्रवेस समय पुनि निर्गमेष रह सोई अछु चार संचार सुजानै अस्त्र विधानै जोई ॥ अपने अस्त्रन काटि जो जानै रिपु के अस्त्र निवारी ॥ शक्ति चक्र भाला भले फेरै दृढ़ता उर मैं धारी ॥ अस्त्र शस्त्र नाना विधि छांडै रिपु नासक दुखदाई ॥ करै सीघ्र ता विविधि भांति सो रिपु तेहि लखत सकाई अपने अस्त्र शस्त्र जो कहिये विधिवत भले चलावै ॥ रिपुआयुध आवत लखि सो पुनि बीचहि काटि नसावै ॥ अस्त्र शस्त्र खंडन करि जानै अपने अस्त्र चलाई ॥ निपुन युद्ध विद्या मैं सो पुनि जानै ब्यूह बनाई ॥ कंध कंठ मुख ग्रीव पृष्ठ पै करै समान प्रहारै ॥ चाबुक चालन कौ करि जानै जा विधि समुझि विचारै ॥ अश्व वाह ताको पुनि कहिये जामैं ए गुरा होई ॥ ते पूजित नृप द्वार मध्य महँ जानत चतुर जु कोई ॥ १७० ॥ **छंद नरेंद्र** ॥ अश्व वाह विद्या इसि भाखत ताड़न तुरग जते हौं ॥ जा विधि ताड़न उचित

अंग जेहि ता विधि सबै वतै हौं॥हींसत जानि अश्व के चाबुक कांधे ताडन कीजै ॥ अंघन मध्य हनो तब चाबुक सुक ध्वजा जो छीजै ॥ छाती मध्य हनो तब चाबुक डरपत अश्वहि जानी॥ उन्मारग अब लोकत लखि के मुख के मध्याहि हानी॥ कोधित जानि अश्व कौं ताविधि पूंछ मध्य सो डाटै ॥ ताविधि चकित बिलोकि भ्रमित सो जंघन मध्ये सांटे ॥ १७१॥ छंद ग्रति॥एह और कहे पुनि जोई॥ निज धारि हिये बिच सोई ॥ कर धारि के चाबुक ही को॥ नहिं ताड़िय और कुठी को ॥ १७२॥ दोहा ॥बिन जाने जे अश्व के चाबुक करैं प्रहार॥ अश्व कोप तिन पै करै आ यु प्रजंत अपार॥१७३॥ अश्व फेरि वे की क्रिया अब कछु कहौं जनाय ॥ सज्जन अपने चित्त मैं लीजै समुझि बनाय ॥ १७४॥ भूमि समान बिलोकि के तहां चलावे अश्व ॥ फेरै बाघ सुधा रि के जै कांछी सर वश्व॥१७५॥ चालि चलावे अश्व को धार तेहि कर नाम॥ लघु दीरघ अरु मध्य गति हांकै दक्षिन बाम ॥१७६॥ बिक्रम पुलिका ताड़िता पूरन कंठी होय॥ प्रथम दुती या तीसरी क्रम करि जानौ सोइ॥१७७॥ पंचई चौथी नाम सम सञ्चान लेड बिसारि॥ निरलंबा षष्ठी कही ग्रंथ माहि निरधारि॥ १७८॥ बिप्र बरण हय पर चढ़े प्रथम पहर शुभ होय॥ पहर दूसरे छत्रि पै यह जानौ सब कोइ॥ १७९॥ पहर चतुर्थे वैस्य कौ सूद्र हि रात्रि गनाय ॥ यहि प्रकार सब वरण के वाहन कहत जनाय॥ १८०॥ अथ सुगति दोहा॥ पहिली कही मयूर की तीतुर दूजि प्रमान॥ तीजी कही मराल की तुर्य चतुष्पद जान॥ छंद दुमिला ॥ अति वेग सौं चालि मयूर लखौ पुनि कांपत पुच्छ जो चींन्ह सही॥ थिरता करि पुच्छ उनायल चालि सु तीतुर की पहिचानि यही॥ हालै हन्नौ पसुरी जौ धुनै सिरमंद चलै

गति हंस सही ॥ चारौ पांय चलै चलता युत चालि चतुष्पद
की सो कही ॥ १८२॥ दोहा॥ चालि चतुर्विधि जो कही सो सब
उत्तम जानि ॥ तामैं जो अति चपल है सो बहु सुखद बखान
॥१८३॥ अथ वाहक निंदक। छंद किरीट ॥ चंचल चित्त
सदाई रहै अरु थूल सरीर सु चंचल आसन ॥ क्रूर सो मूरख जा-
नि लखौ बिन कारण चाबुक घालत त्रासन॥ कुंडल रूप तुरंगम
कौ नहिं फेरि सो जानत ताविधि नासन॥ निंदित वाहक वैस के
दार कहे यहि भांति सो ग्रंथ प्रकाशन॥ १८४ ॥ दोहा॥ बल पं
र्जित जो सत्व मत शंकर वरण कहाइ ॥ तिन कौ कहा सराहिये
अति निंदित अधिकाइ॥ १८५॥ रितु पर्जा जानै सबै बोलै बानी
सुद्ध॥ भक्ष्या भक्ष्य विचारि के अन्न न खाइ निषिद्ध ॥१८६॥तीस
पैग की दौर मैं फेरै अश्व वहोर॥ पाछे आनि तुरंग को लहरि
दार ता तौर॥ १८७॥ बिनि फेरे बांधे रहैं ते नर होंय न सूर॥ सि-
थिल होय अंग अंग सो काज परे ते कूर॥ १८८॥ मर्यादा ते अधि-
क करि अश्व फेरिये नाहि॥ तन दुर्बल अरु व्याधि युत निश्चै
गनिये ताहि ॥१८९॥ श्रावण भादौं मास मैं होत अश्व बल ही-
न॥ असवारी सहि ना सकत भार धरे अति दीन ॥१९०॥ पित्त
कोप अति होत है अग्नि तुल्य दोउ मास ॥ असवारी के जोग सौ
लहैं तुरंगम त्रास ॥१९१॥ हिम अरु शिशिर बसंत मै वाजी व-
ल सरसात॥ असवारी कित कौ करौं तनक न मन अरसात॥१९२
होइ विरेचन अश्व कौं के अति दुर्बल होइ॥ गर्भवती जो अश्वनी
तापर चढै न कोइ॥१९३॥ उच्च पदारथ कौ लखे हींसत हैं ह-
य जोय॥ अति उत्तम करि मानिये शालि होत्र मत सोइ॥१९४॥
अथ शाला वर्णनम् ॥ दोहा ॥ अब शाला वरनन करौं
नकुल मते अनुसार॥ जाहि जानि के नृप सबै पावत सुक्ख अपार॥१९५

छप्पै छंद॥ राज धाम के वाम रुचिर शाला सुभ रचिये॥ योतिष
मत अनुकूल सुद्ध सायति कहँ संधिये॥ उच्च होय दस हस्त
सप्तघट वा पुनि सोई॥ यथाउचित विस्तार वाजि सुख पावैं जोई
होइ पाठ जहँ रुद्र को विप्र वेद नित उच्चरैं॥ सुभ धाम अश्व
आराम कंह जहां होम आहुति परैं॥१९६॥ सोरठा॥ छत्रबना-
वै आय मधु मक्खी जेहि धाम महँ॥ निंदित कहैं गनाय अ-
श्व योग सो धाम नहिं॥१९७॥ यथा शक्ति करि दान धूप दीप
करि विविधि विधि॥ उत्तर मुख करि थानसुभ सायति बांधै तुरं
ग॥१९८॥ अश्व पाल चातुर तरुण राखै बुद्धि विसाल॥ पालै
वाजी विविधि विधि सो कहिये महिपाल॥१९९॥ मरकट बां-
धै लाय हय साला के द्वार सों॥ प्रतिमा रुचिर बनाय कै थापै
तहँ बुद्धि बर॥२००॥ दोहा॥ दक्षिण मुख करि तुरंग को
भूलि न कीजे थान॥ दिन प्रति विप्रन पूजिये यथा शक्ति करि दान
॥२०१॥ अथ शिरा मोक्षण॥ दोहा॥ सात शुक्र गत धातु हैं तिन
को करौं बखान॥ जेहि जाने ते जानिये अश्व रोग परमान॥२०२
हय के रुधिर विकार ते होत अधिक विधिरोग॥ ताते रुधिर वि
कार को प्रथमहि कीन्ह प्रयोग॥२०३॥ चौपाई॥ द्वै सहस्र
सब सिरा बखानो॥ ता ऊपर दुइ सप्तति आनो॥ तिन के गत हैं
रुधिर जु सोई॥ ताहि परीक्षा जानत जोई॥२०५॥ दोहा॥ कु-
त्सित रुधिर विचारि कै करत चिकित्सा जोइ॥ ते नर जस कौं ल-
हत हैं चतुर वैद्य पुनि सोइ॥२०६॥ सोरठा॥ मुख नासा पुट
दोय वक्षस्थल औ कंठ मैं॥ पासु दोनो सोइ भाल अंग जुग प-
ग गनौ॥२०७॥ दोहा॥ फस्त खोलिवे के सबै लीजै अस्त्र मं-
गाय॥ देस काल कौं देखि कै रुधिर स्राव सुखु पाय॥२०८॥
छंद मदिरा॥ सत्रह और कहे पुनि ठौर विचारि तिन्हे तस लौ

जिये जू ॥ नस्तर कर्म करै जो विजक्षन लक्षन ते रग जानिये जू ॥ रक्त विकार श्रवै जबहीं तब श्रश्व महा सुख पैयै जू ॥ ते सब ठौर गनाय कहौं धरि धीर अहो चित धारियेजू ॥ २०९ ॥ छंद दुमिला ॥ धुज के अरु कच्छ के मध्य महा पुनि गुल्फ चहू पग के जुन सै ॥ गुद पुच्छ ललाट गरे चहु जंघन जा विधिसों जेहि भांति लसैं ॥ बस्तिस्थान गनौ इतने अव संधिस्थान सुनौं सुति सैं ॥ जिव्हा और द्रु कान के मूल सु मर्मस्थान लखो गति सैं ॥ २१० ॥ दोहा ॥ संधिस्थान गनाय के कहे नकुल मत भाखि रक्त श्राव के जानिये ठौर सबै मुनि साखि ॥ २११ ॥ विधिवत सो पहिचानि के रग खोलै सज्ञान ॥ विनि परखे अज्ञान युत होत श्रानि की श्रान ॥ २१२ ॥ रूप परीक्षा रगन की बुधियुत करै विचार ॥ सो कहिये शुभ वैद्य वर ताकी बुद्धि अपार ॥ २१३ ॥ श्राम कोप ते होति है रुधिर विकार अनंत ॥ तिरजग गति श्रोणित लखो वाजि व्याधि जो वंत ॥ २१४ ॥ कुपच अन्न ते जानिये श्राम दोष बढ़ि जाय ॥ बंधे रहत ते तुरग नित तिन की थिति ठहराय ॥ २१५ ॥ छंद नरेंद्र ॥ जो तन पुष्टि वलिष्ट तुरग वर रुधिर विशेषै जानो ॥ जे दुर्वल बहु अंग लखो न-हिं तिन की अस गति मानो ॥ उत्तम मध्यम हीन यथा जोतिन कहं तस निरधारो ॥ प्रथम एक औ अर्द्ध तुर्य पुनि श्रोणित भाव विचारो ॥ २१६ ॥ दोहा ॥ सूक्षम रीति मैं यह कही कहि हौं श्रौर विसेष ॥ जैसी विधि जा ठौर जो शालि होत्र मत लेख ॥ २१७ ॥ छन्द छप्पै ॥ सौ सौ शिरनि बास गनौ मुख औ कपोल महं ॥ दंतन मध्य मैं वास लखो कण्ठमें सो न-हैं ॥ दस मेह मध्य दस पुच्छ समुझि ता विधि सो लीजै ॥ औ मंडन द्वौ जंघ पचिस पच्चिस कहि दीजै ॥ बाहस कंठमेंसुक

मैं ता विधि के सस्थान तब ॥ सो धन हित है रक्त के यहै कहे परमान अब ॥ २१८ ॥ छंद मत्तमयंद ॥ पित्त करेजि लखौ रंग सो अरु बात विकार को स्याम बखानौ ॥ के पुनि लाल सुरंगित शोणित पांडु सो रंग कफै पहिचानौ ॥ पिच्छल ताकै कहैं मुनि सो कै रंग कषायल ताहि प्रमानै ॥ याहि प्रकार विकार तिहू कहैं रंगति रक्त परीक्षहि जानौ ॥ २१९ ॥ दोहा ॥ तीनौ दोषन के कहे जो रंग तीनि प्रकार ॥ सब लक्षण जो पै मिलैं सन्निपात निर्धार ॥ २२० ॥ सन्निपात के दोष ते रोग असाध्य हि जानि ॥ भिन्नि भिन्नि के भेद से होति त्रविधि पहिचानि २२१ कुंडलिया ॥ उदर शुद्ध करि अश्व को दीजे अभया ताय ॥ पांच २ पल दिवस प्रति सुरभी मूत भिजाय ॥ सुरभी मूत भिजाय ताहि अभे यासो दीजे ॥ ग्रंथ रीति अनुसार चिकित्सा या विधि कीजै ॥ पांच २ पल देउ दिवस इकइस लगि ताई ॥ उदर शुद्ध इडू जाय व्याधि सब अश्वन साई ॥ अथ ऋतु प्रचार दोहा ॥ लागत वर्षा काल के अश्व चढ़े नहिं कोय ॥ और ऋतुन सब छाड़ि कै यह अति दूषित होय ॥ २२३ ॥ जहां पवन हो शुद्ध अति बांधे थान पुनीत ॥ कूप नीर दे पान कहुं रक्षा करै विनीत ॥ २२४ ॥ तेल लगावैं तिक्त जो अश्व अंग के मांह ॥ देइ विरेचन चतुर नर पुष्टि हेत तेहि वांह ॥ २२५ ॥ रक्त स्राव अति शुभ कहो तेहि ऋतु मैं ऋषि राय ॥ करै चिकित्सा बुद्धि बर अश्व व्याधि बहि जाय ॥ २२६ ॥ एक अंतर दिन युक्त सौं सिंधु लवण कहं देइ ॥ रका इड्क परमान करि सुख जहता हरि लेइ २२७ छंद मत्त मयंद ॥ वर्जित तोइ कहो बर्षा तेहि मध्यतुरंग प्र को वल छीजे ॥ भीजत पीठि सो व्याधि बढ़े जुरु खाजु तुरंते सो गनि लीजे ॥ उत्तम नीर सुपान कराय औ थान भलो सुभ ता विधि

कीजै ॥ सुद्ध जो भोजन हेत कही तब दूब नवीन मगाय के दीजै ॥२२८॥ अथ सरद ऋतु ॥ दोहा ॥ सरद काल में है कहो भातु सर करा छीर ॥ भाग बराबर दीजिये आवत रोग न नीर ॥ २२९॥ मधुर असन औरौ सुभग दीजे दिन प्रति ताहि ॥ नदी नीर अतिसुद्ध लखि पान करावै वाहि ॥ २३०॥ मोंठि महेला दीजिये घृत युत बुद्धि प्रवीन ॥ शालि होत्र उच्चरै पोरुस होति नवीन ॥ २३१॥ अथ हेमंत ॥ छंद छप्पै ॥ ऋतु आये हेमंत यहै मत नकुलज गावत ॥ जहां पवन नहिं लगै तहां सुभ तुरंग बंधावत ॥ घी उत्तम कै तैल तिक्त नित अश्व पिआवत ॥ काची दाना देत हरिद गुड़ ताहि खवावत ॥ कह वैस केदार सु भाखि अस वाजी पालत बुद्धि वर ॥ उत्तम थान सो बांधि के ऋतु हेमंत विचारि कर ॥ २३२॥ अथ सिसिर- छंद त्रिभंगी ॥ सिसिर जु आवै तेलु पिआवै अठ रुका परमान मनौ ॥ दिन इकइस दीजै पुनि गनि लीजै खुइदि खवावै भाति भनौ ॥ दिन बीस प्रमानौ यह अनुमानौ जौं के अंकुर जानि लहै ॥ वाजी अनुरागै बाउ न लागै शालि होत्र मत यहै कहै ॥ दाना जो दीजे एह मतलीजै अपि महा परि पाक करौ जब जौं नहिं होई चणक सो लेई सुद्ध सकल तेहि भाति धरै ॥ जब चना न पावै मसूरि लावै पीसि मिलावै तेलु तहीं ॥ इहि भाति न पालै वाजि बिसालै घातुन घालत देर नहीं ॥ २३३ ॥ दोहा ॥ दाना वरने जे सकल तामै मोंठि विशेषि ॥ जानि लीजिये चतुर नर शालि होत्र मत देखि ॥ २३४॥ दाना कौं अति शुभ कहे ऋतु वसंत चणा भाखि ॥ ग्रीषम सतुआ जौन के मुनिके मत अभिलाखि ॥ २३५॥ वर्षा आदि जे ऋतु कहीं सिसिर प्रयंत गनीय ॥ तामै सिसिर विधान अति जानौ हेतु तुरीय ॥ २३६॥ रोग ग्रसित जे अश्व हैं जौं वर्जित तिन हेत ॥ समुझि जानि कर

चतुर नर तिन कौं दाना देति॥ २३७॥ रक्षा कीजे सरवदा तामैं सिसिर विसेष॥ शालिहोत्र मुनि मत कह्यो ताहि लीजिये देखि॥२३८॥ जो स्नेह विधान है वर्षा ऋतु मैं जानि॥ जौं भक्षन ता- विधि गनो सिसिर मध्य परमान॥२३९॥ तेलु पिआवै अश्व कौं जौं भक्षन कौं देइ॥ सिसिर मध्य जो चतुर नर सकल व्याधि हरि लेइ॥२४०॥ निज इच्छा सौं सुक्ख जौं जो कछु खाय तुरंग॥ ताकौ कबहूं जानिये व्याधि न व्यापै अंग॥२४१॥ छंद मत्त मयंद मोठि कही हित दायक सो बड़ पुष्टि बीलष्ट तुरंगमही को॥ मूंग- उ तुल्य गनो तेहि के पुनि तेलु मिलाय के भक्षन नीको॥ छिक्कल हीन कहो चण सो सब कालन मै सुभ दायक ही को॥ होति बड़ो उत्साह दिये नहि व्यापति व्याधि कछू है जी को॥२४२॥ दोहा॥ अन्न अपलकु जानि के घृत दीजे सब काल॥ शालि होत्र मत अस कहै समुझै बुद्धि विशाल॥२४३॥ भक्षन विधि जो अन्न की उत्तम दई बताय॥ वातव्याधि के रोग मैं लंघन मुख्य उपाय॥ २४४॥ चौपाई॥ कर्क सिंह वर्षा ऋतु अहई॥ कन्या तुला सो सर्द कहाई॥ वृश्चिक धन हेमंतहि जानो॥ मकर कुंभ पुनि सिसिर बखानो॥ मीन मिथुन संक्रम है जोई॥ ऋतु वसंत सो कह सब कोई॥२४७॥ दोहा॥ वृष अरु मेख तपत रवि मारतंड अखंड॥ ऋतु ग्रीषम पहिचानिये ज्वाला बढ़ति अखंड॥२४८॥ सब ऋतु एक समान नहिं भिन्न प्रकृति दरशाय॥ जानि चिकित्सा कीजिये देश काल बल पाय॥२४९॥ अथ धातु परीक्षा दोहा॥ धातु परीक्षा कौं कहत नकुल मते अनुसार॥ जाके जाने ते सबै करत सु वैद्य विचार॥२५०॥ चौपाई॥ रक्त अधिक जाके जब होई॥ विधिवत अन्न खाइ नहिं सोई॥ बाढ़त रक्त पित्त बढ़ि आवै॥ कफ को कोप तहाँ दरसावै॥२५१॥ छंद नराच

जहां रक्त औ पित्त को कोप जानौ ॥ तहां खाजु की व्याधि तुरते प्रमानौ ॥ चढ़ै पित्त को कोंप जबही तुरंगै ॥ चलै राह नाहीं तजै चैन अंगै ॥ स्रवै नासिका तोय अति से जु भारी ॥ गनो पित्त को कोंप ताको धिकारी ॥ कढ़ै रक्त को कोंप औरो निहारौ ॥ जु होवै तबै सोइ लच्छन विचारौ ॥ २५२ ॥ चौपाई ॥ रक्त वलासलखे कफ दोषै ॥ फुल कित रोम सो गनौ विशेषै ॥ कोइ न परैं बुंद जेहि केरे ॥ व्याधिवन्त सो गनौ घनेरे ॥ रक्त बाद दोषै अधिकाई ॥ बार बार तुरंगहि हनाई ॥ २५३ ॥ दोहा ॥ बात रक्त जेहि अश्व के कोंप करे जेहि काल ॥ तब हूं दुर्वलता बढ़ै नयन होयं द्वै लाल ॥ २५४ ॥ रक्त संग इइ दोष त्रिय कांपत अधिक तुरंग ॥ निद्रा बाढ़ै अधिक सो बहु पीड़ित करि अंग ॥ २५५ ॥ नयन होयं गंधक सदृश कोइ न मैन निहारि ॥ स्याम बुंद हों जीभ में सो असाध्य निरधारि ॥ २५६ ॥ पीत बुंद लखि जीभ में रक्त बुंद पुनि जासु आकृत जाके वज्र सम पुनि असाध्य कहि तासु ॥ २५७ ॥ सबै धातु एक ठौर इइ कोंप करै जब आनि ॥ विविधि बरण सो लखिपरै नयन परीक्षा जानि ॥ २५८ ॥ बात पित्त अरु कफ गनौ कहे जो तीनि प्रकार ॥ तीनौं दोषन के मिले होत त्रिदोष अपार ॥ २५९ ॥ द्वौ दोखन के मिले ते द्विंदिज जानौ सोइ ॥ लच्छन ते पहिचानिये दोष परीक्षा जोइ ॥ २६० ॥ मनुज हेत जैसे जतन करि निदान बुधवंत ॥ ता विधि भाषत हैं सकल सालि होत्र को तंत ॥ २६१ ॥ जो प्रचार परहेज के ग्रंथन कहे गनाय ॥ नर को ता विधि हैं कहत तुरंग हेत मुनि राय ॥ २६२ ॥ मानुष ते चौगुन कहो औषदि को परमानु ॥ तुरंग हेत सो जानिये नकुल मतो अनुमान ॥ २६३ पसु करि इन्हैं न जानि ये हैं देवन में देव ॥ सालि होत्र मुनि के बचन यथा तथ्य गनि लेव ॥ २६४ ॥ रुधिर स्त्रवन विधि । दोहा ॥

अश्व विरेचन विधि कहों जो है जैसे भाय ॥ जानि चिकित्सा कीजिये देस काल बल पाय ॥ २६५ ॥ चौपाई ॥ कर वारो अरु सोंठि लियावै ॥ अस गंध पुनि सम भाग मिलावै ॥ काढ़ा करि घोड़ा कौं दीजे ॥ उदर व्याधि ताकी हरि लीजे ॥ २६६ ॥ दोहा ॥ गंधक साबुन सम करी घृत मैं देउ प्याइ ॥ रोग नसावै अश्व को उदर व्याधि गिरि जाइ ॥ राई खारी सम करौ तक्र सेर परमान ॥ अति रेचन है अश्व कौ मुनिवर करत बखान ॥ विंदारक एक भूंजि कर दधि युत देइ खवाय ॥ तीनि दिवस उपचार ते उदर व्याधि गिरि जाय ॥ कारा जीरी टंक नौ तप्त नीर के संग ॥ शालि होत्र मत देखिकर रेचन कही तुरंग ॥ २६७ ॥ अथ ज्वराधिकार तत्र आदौ पित्त ज्वर ॥ दोहा ॥ अरुन नयन धौ कीस हित स्वांस लखो अधिकाइ हांपे पानी देखि कै पित्त दोष ठहराय ॥ २६८ ॥ मोथा पीपरि लौंग लिजे फर मिर्च गिलोय ॥ अदरख पान सो भाग सम जानो ता विधि सोइ ॥ २६९ ॥ अष्ट विशेषी अश्व कहँ दीजे क्वाथ बनाय ॥ सप्त दिवस उपचार ते पित्त विथा टरि जाय ॥ २७० ॥ छंद मेदा ॥ वाय विरंग लेउ पुनि त्रिफला दामर लै मन मानो ॥ निर्गुंडी को डेढ़ सेर रस लेकर तामें सानो ॥ देइ खवाय अश्व कौ तब सो निहचै रोगु नसाइ ॥ अति उत्तम औषधि यह कहिये नकुल मते अधिकाई ॥ २७१ ॥ दोहा ॥ डेढ़ सेर गौ दूध में पीपरि लाख मिलाय ॥ औटि देउ तो तुरतही पित्त दोष मिटि जाय ॥ २७२ ॥ अथ बात ज्वर । दोहा ॥ भारी लखियै भौंह कौ नयन द्रवै बहु नीर ॥ पीरो रंग कण को लखो गनो वात ज्वर पीर ॥ २७३ ॥ चौपाई गो घृत खैर सार लै भ्रावै ॥ अग्नि आंच सौं तप्त करावै ॥ लेप हाथ अरु पाय कराई ॥ पीड़ा अंग तुरंग नसाई ॥ पुनः ॥ सोंठि कटाई वाय विरंग ॥ पिपरा मूरि सोंचरहि संग ॥ हींग सुहागा

भूंजि सो लेइ ॥ सेंधो भाग बराबरि देइ ॥ टंक तीनि नित घोरहि दीजै ॥ मेटै रोग व्याधि सब छीजै ॥ २७४ ॥ अथ श्लेषम ज्वर । चौपाई ॥ लघु सरीर अम्ब को देखौ ॥ पुनि आमासु नैन पर लेखो ॥ २७५ ॥ दोहा ॥ कफ डारै मुख ते अधिक कांखे घास न खाय ॥ कफ को ज्वर तेहि जानिये शाल होत मत पाय ॥ २७६ ॥ चौपाई । पीपरि सेंधव गो घृत आनौ ॥ नष्ध रोग हर उत्तम जानौ ॥ ता पाछे यह क्वाथ बनावै ॥ अंग अम्ब की व्याधि नसावै ॥ २७७ ॥ वाय विरंग अंड जर लेहू ॥ सोंठि कचूर गुर्च सम येहू ॥ अष्ट विसेखी काढ़ा दीजै ॥ सात दिवस महं नीको कीजै ॥ अथ द्विंदिज ज्वर ॥ दोहा ॥ बात पित्त कफ पित्त पुनि कफ अरु बात गनाय ॥ द्वै दोषन लच्छन मिले द्वंदिज कहौं जनाय ॥ २७८ ॥ अथ बात पित्त ज्वर क्वाथ ॥ दोहा ॥ कुटकी गुर्च चिरायता नागर मोथा लेइ ॥ सुंठी फ़फुला पाठ अरु सम करि काढ़ देइ ॥ २७९ ॥ अथ कफ पित्त क्वाथ ॥ दो० ॥ गुर्च कटाई इंद्र जौ रूसा और जवास ॥ भारंगी जर पान की करै पित्त कफ नास ॥ २८० ॥ अष्ट विशोषी क्वाथ सो घोटे देइ प्याय ॥ कफ अरु पित्त की व्याधि जो तुरतै सो बहि जाय ॥ अथ बात कफ ज्वर । दोहा ॥ अजवाइनि औ सोंठि लै राजनी पीपरि लेइ ॥ रींठा जीरो इन्द्र जौं मिर्च निसो ती तेइ ॥ २८२ भारंगी पुनि भाग सम औषदि कहौं गनाय ॥ बीज सम्हारू क्वाथ से वात कफ़ज्वर जाय ॥ २८३ ॥ अथ सुख ज्वर ॥ दो० ॥ होइ भ्रमित अति अम्ब सो दौ राय ते जोइ ॥ नैन बहै संसा करै सूखै मुख पुनि सोइ ॥ २८४ ॥ वेल गुदा नरकुल जरैहि खस पटोल सम भाग अष्ट मास काढ़ा दिये आवै नहीं सो लाग ॥ २८५ ॥ अथ मनमथ ज्वर ॥ दोहा ॥ वार वार मूतै तुरंग हींसै औ डराय ॥ पंडित ज्वर की व्याधि सौं सो मन मथ ठहराय ॥ २८६ ॥ जीरो जेठ

मस्तगी भाग जो केसरि एड्ड ॥ गाय दूध मिसरी सहित मनमथ को हरि लेइ ॥ २८७॥ अथ गलही ज्वर ॥ दोहा ॥ ढीले रहैं जो करण जेहि अफरो उदर लखाय। गलही ज्वर पीड़ित तुरंग दाना घास न खाय ॥ २८८॥ कटाई जर को अरक पुनि त्यों अजमोदहि लेइ ॥ आरंगी खारिका सहित अरहर चूनहिं देइ ॥ २८९॥ गलही ज्वर के नास कौं है यह सहज उपाउ ॥ ऊपर ते तब तुरत ही आध सेर घी प्याउ ॥ २९०॥ अथ सरदी गरमी ज्वर ॥ दोहा पानी पीकर अश्व कौं दौरावै जो कोइ ॥ सरदी गरमी युक्त करि ताहि ताप तब होइ ॥ २९१॥ गज पीपरि वच हींग लै सोंठ चून सम भाइ ॥ अष्टमास काढ़ा दिये दीजे ज्वरहि बहाय ॥ २९२॥ अथ सन्निपात ज्वर ॥ चौपाई ॥ तन सरीर अश्व को होइ हींसै रापै चौकै सोइ ॥ स्वास प्रचंड अश्व कहँ देखौ ॥ सन्निपात ज्वर ताकहँ लेखौ ॥ वाय विरंग खंड जर लावै ॥ तोरि गुर्च फल पोस्त मिलावै ॥ अष्ट विशेखो काढ़ा करै ॥ सन्निपात घोड़ा को हरै ॥ दोहा ॥ सन्निपात हय को हरै मिर्च सो पिपला मूल ॥ ककरा सिंघी हर्र बच देइ नासु सम तूल ॥ सोरठा ॥ लाख सुपारी आन पथ्या और इलायची ॥ देइ नासु पर मान सन्निपात हय को हरै ॥ लहसनु पिपरा मूरि सज्जी सेंधौ सोंठि वच करै सन्न की चूरि अजवाइनि विड़ साम्हरियो ॥ दोहा ॥ गुड़ युत पिंड बनाय के देउ खवाय तुरंग ॥ सन्निपात नासै सकल वढ़ै सुखु पावै अंग ॥ अथ सूलोप चार ॥ सलिवंत सूल चौपाई ॥ स्वासा करै महा दुख भरै ॥ बार बार पुनि लोटै गिरै कोखै अरु चितवै अति वंत ॥ तासौ कहैं सूल सलि वंत ॥ स्याह चारि अजवाइनि लाई ॥ टंक नौक दामरि सो बताई ॥ गो घृत सहित सो घोरहि दीजै ॥ तुरत सूल सलि बातहि छीजै ॥ ३०२॥

अथ मूत्र बंत सूल ॥ दोहा ॥ देही डोलै पूंछ सोय है ता-
ही पहिचानि ॥ मूत्र बंत लक्षन सकल मुहं संधै जु निदान ॥
सीतल बदन तुरंग को सीस हलावै जोय ॥ मूत्र बंत वह सू-
ल है यह भाखत सब कोइ ॥ सेंधौ नून औ मिर्च लै मक्खन
सहित मिलाय ॥ तासु दीजिये तुरंग को मूत्र बंत हरि जाय ॥
चौपाई ॥ गज पीपरि पीपरिहि मिलाय ॥ डेढ़ सेर जल में औ-
टाय ॥ घी गुरु सहित सात दिन दीजै ॥ मूत्र बंत को विदा सो
कीजे ॥ अथ कृष्ण बंत शूल ॥ दोहा ॥ कोंख चढ़ाय छाती हनै
फिरि २ कोख दीख ॥ कृष बंत वह शूल है लक्षन कहें बिसेखि
छंद अरिल्ल ॥ कालि सैंजने की लै पुनि सेंधव नून मंगाइये
बीज तोमरी करुई लेकर दामर खोजि लियाइये ॥ परिहा बा-
रि के तेल में पिंड बनाइयै ॥ टंक नौक भरि देतहि शूल भगा-
इये ॥ अथ वायशूल ॥ दोहा ॥ गिरै धरनि औ दुम करै
आंखैं मूंदे जोय ॥ वाय शूल तासों कहैं यह जानो सब कोय ॥
चौपाई ॥ पाषाण बेद बच कूट हिलावै ॥ सेंधव सम करि ताहि
मिलावै ॥ दोहा ॥ दई के अनुपान मैं दीजे पिंड बनाय ॥ वा-
य शूल सो तुरंग को तुरतै देत नसाय ॥ पुनः ॥ खुरासानि बच
कूटहि लीजे ॥ सेंधव दंति कालि सम कीजे ॥ भुंजि सुहागा गंधी
लेऊ ॥ पाषाण बेद लै तामें देऊ ॥ दोहा ॥ ए सब औषदि भा-
सम मक्खन लेइ मिलाय ॥ दे तै मी को होइ सो सर्व ब्याधि
वहि जाय ॥ अथ गुल्म शूल ॥ दोहा ॥ गोला उठै सो उदर
में पीड़ित होय तुरंग ॥ सूंघि कोंख गिरि गिरि परै बड़ दुख
पावै अंग ॥ गोरोचन ववई सहित पीपरि लेइ पिसाइ ॥
बीज पूर रस सानि के बाजिहि देइ खवाय ॥ सोरठा ॥ ज्वर
गुल्म नसि जाय यह पिंडा के देत ही ॥ मुनि मत कहो जताय

समुझि धरो उर चतुर नर ॥ अथ छिन्न मस्त काम्मूल । दोहा ॥
नथुनन में लोहू बहै लक्षन यहै विचार ॥ रक्त भ्रमेही शूल जीत
फिरि कीजै उपचार ॥ जुनरी वहिंगो दुग्ध में तुरतहि दीजे नासु
रक्त भ्रमेही शूल को यासे होइ विनासु ॥ चौपाई ॥ जीरो और
उसीर मगाय ॥ लेपन माथे तासु कराय ॥ नासु देइ त्रिफलाकेनी
र ॥ या विधि हरै अश्व की पीर ॥ अथ वात मस्तका शूल ॥
दोहा ॥ सिर भारी सूजनि लखौ वातमस्तका शूल ॥ त्रकुटा के
फल नासु ते दोष होय निरमूल ॥ सोरठा ॥ वाय विरंग कचूर
कुटकी सोंठि सुहाग युत ॥ सम करि पिपरए मूर भूजे आटा दीजि
ये ॥ दोहा ॥ प्रात सांझ दोऊ वखत पिंडा देउ खवाय ॥ रोगु
नसावै तुरंग को सकल विथा बहि जाय ॥ अथ कफ मस्त-
का शूल ॥ दोहा ॥ भौ हैं सूजें अश्व की पीत झरै कफ जोय
नासु कटाई दीजिये लखि कफ दोषै होइ ॥ सोंठि सुहागा सों
चरइ मिर्च करण सम लाय ॥ पिंड देतही तुरंग की शूलविथा
मिटि जाय ॥ अथ क्रम शूल लच्छनं ॥ दोहा ॥ नांक ऐंचि
सूंघन लगै चरै नहीं फिरि घास ॥ गिरैं परेरे पेट तें निसुदिन रहै
उदास ॥ राई हल्दी कायफल तीनौं वस्तैं आनि ॥ प्रात होतजो
दीजिये भूजे आटा सानि ॥ व्याधि नसावै अश्व की भाषि कहो
मुनि राय ॥ पुनि पाछे से कीजिये या विधि और उपाय ॥ अरिल्ल-
त्रिकुटा कूट मगाय सो ताहि बटाइये ॥ बच दामर पुनि भागव
एवर आनि मिलाइये ॥ घी गुरु सौ लै सानि टंक नौ दीजिये
परिहा क्रम मिटिजाय सो शूल नसाइये ॥ अथ भ्रम शूल दो
हा ॥ चितवै संभ्रम चहू दिसि अरु डबरो हय होय ॥ भूख घटे
पहिचानिये यह भ्रम शूल जु सोय ॥ चौपाई ॥ सोंठि वचा
गज पीपरि लावै ॥ पीपरि हींग औ लोनु मिलावै ॥ टंक नौक

सम भाग सो कीजे ॥ घी में सानि अश्व को दीजे ॥ तुरतै भागै सकल विकार ॥ नकुल मते शुभ यह उपचार ॥ पुनः हर्दी राई हर्र मंगावै ॥ सोंठ सुहागा खील करावै ॥ हींग भूंजि के तामें देऊ ॥ सम करि भाग ओखदी लेऊ ॥ दोहा ॥ भूंजे आटा सानि के घोड़ै देऊ खवाय ॥ भूख बढ़ै बल बीर्य युत नीको होय बनाय ॥ अथ मुख शूल दोहा ॥ दातन सौं भुई टेकि के जब घोरा रहि जाय ॥ निश्चै करि मुख शूल है कीजे ताहि उपाय ॥ चौपाई सोंठ मिर्च अरु पीपरि लावैं ॥ लहसनु बाय बिरंग मिलावै ॥ घृत में सानि अश्व कौं दीजे ॥ रोगु हरै नीको पुनि लीजे ॥ अथ राक्षिस शूल ॥ दोहा ॥ उपजे शूल तुरंग के उदर माहिं जेहि वार ॥ उठै गिरै बहु धरनि मै हींसै टापि अपार ॥ द्रगन मध्य लाली लखौ राक्षिस शूल विशेषि ॥ दवा करौ ततकाल सो शालिहोत्र मति देखि ॥ पक्की अमिली तेलु लै सेंधव लोनु मिलाय ॥ सिरका के संग देतही सकल विथा हरि जाय ॥ अथ रसवंत शूल चौपाई ॥ टूटै बैठै लटि पुनि रहै ॥ ऐसे पेट दुःख पुनि सहै ऐसे लक्षन लेऊ विचारी ॥ सो रसवंत शूल अधिकारी ॥ अजवाइनि अरु हर्र वखानौ ॥ बाय विरंग सो ताकौ जानौ ॥ बीजतुरैया के लै औरी ॥ निबुआ पात कहत तेहि ठौरी ॥ सम करि भाग सो औषदि लीजे ॥ टंक नौक करि घीमें दीजे ॥ दोहा ॥ नकुटा गंधी कायफल खंड बराबरि लेऊ ॥ ए औषदि सब जतन से मदिरा के संग देऊ ॥ सोरठा ॥ कर बावै परहेज दाना पानी घास सो ॥ औषदि है यह तेज गात देखि के कीजिये ॥ अथ अजीर्ण शूल ॥ दोहा ॥ अंगु घालि लोटत रहै करै सोस अति नित ॥ शूल अजीरन जानिये ए लक्षन धरि चित्त ॥ अरिल्ल- सेंधो सोंचर हींग वच लीजिये ॥ अजवाइनि पुनि आनि सो चूरण

पोजिये ॥ देइ दही मैं सानि औषदि सम करि येही ॥ परिहा
मूल अजीरन कोरि न उपजै तेही ॥ अथ धात क्रम मूल ॥
दोहा ॥ घोरी देखै फेरि कै श्वास अधिक अपार ॥ रोग अ-
साध्य सो जानि के कहिये क्रम निर्धार ॥ छंद नरेंद्र ॥ ग्वा-
री और हैंजन की जर सोऊ छलि मंगाई ॥ अजवाइन अरु
वाय विरंगे सम करि ताहि पिलाई ॥ टंक नौक लै गुर मे दीजे
तुरते रोग नसाई ॥ बेस बेस केदार सिंह यह नकुल मतो स-
मिकाई ॥ दोहा ॥ लै सेहुंड़ के दूध मैं ननक कपूर मिलाय
देत उदर व्रण जंतु जे ते सब जात नसाय ॥ अथ सभू क्रम
मूल ॥ चौपाई ॥ तुरी रहै पुनि पाउं पसारे ॥ श्वासा ढीले
सो अधिकारे ॥ ए लक्षन देखौ जो कोई ॥ मूल सभू क्रम जानौ
सोई ॥ कर हारि अरु अजवाइनि दोऊ ॥ निर्गुंडी कहिये पुनि
सोऊ ॥ इंद्रोयनि जर और कटाई ॥ सम सब भाग सो कहौं ज-
नाई ॥ दोहा ॥ सब औषधि चूरन करौ देउ दही मैं सानि ॥ लै
गुर सौं पुनि दीजिये करै रोग की हानि ॥ अथ मन्नति मूल
॥ दोहा ॥ हींसै झांकै रुकै अति बोलै बारंबार ॥ मूल मन्नति
बखानिये ताको यह उपचार ॥ चौपाई ॥ वाय बिरंग हींग स-
न आनौ ॥ नमदा राख सो ताहि बखानौ ॥ वच अरु सोंठि सु-
हागा लीजे ॥ नीर रेह के सानि सो दीजे ॥ दोहा ॥ सात दिवस
परमान करि औषदि कीजे मित्त ॥ मूल मन्नति नसाइ सो नि-
श्चै जानौं चित्त ॥ अथ धिल्ला ब्रत मूल ॥ चौपाई ॥ गिरै
धरनि अरु सूंघै छाती ॥ मूल धिल्ला ब्रत सो उतपाती ॥ हींग
सोंठि सेंधव निर्धार ॥ सिर का सानि करै उपचार ॥ तप्त नीर पी
वे को दीजै ॥ जब लगि मूल व्याधि नहिं छीजै ॥ लंघन करे
हानि नहिं होई ॥ दाना दिये व्याधि सब सोई ॥ ऊर्ध मूल॰

चौपाई ॥ मुख घोड़ा के पानी झरै ॥ अधिक पसीना बहु विधि गिरै
लोटै नहिं बैठे नहिं भूमैं ॥ नयन मूंदि सो स्रति झुकि झूमैं ॥ पीपरि
पिपरा मूरि मंगावै ॥ बीज कसौंधी मिर्च मिलावै ॥ सोंठ वेतरा
मूरि सुहाई ॥ गाय छीर में देइ खवाई ॥ दाना को तेहि नाम
न लीजै ॥ तप्त नीर पीवे को दीजै ॥ अथ सन्निपात शूल ॥ दो-
हा ॥ कांपै तुरंग सभीत अति उछलि गिरै भुइं माहि ॥ सन्निपात
सो शूल है यामें संसै नाहि ॥ चौपाई ॥ अजवाइनि वच राई
लावै ॥ भूंजि फ़रकरी खील बनावै ॥ सेर का गो घृत हींग सुहा
गा ॥ घोड़ै देइ हरै दुख नागा ॥ सप्त दिवस यह औषधि करै ॥
सकल शूल घोड़ा के हरै ॥ पुनः प्रथम सेजना हींग मंगावै ॥ अ-
जवाइनि फटकरी फुलावै ॥ दोहा ॥ वाय विरंग सोंठि लै धूरा
करौ बनाय ॥ मरदन कीन्हे अंग में सकल व्याधि वहि जाय
पुनः सुंठी वायविरंग लै अजवाइनि सम सोइ ॥ सप्त दिवस का-
ढ़ा दिये सकल व्याधि है खोइ ॥ बर्ष दोइ प्रति लीजिये लोहू
सो घवाउ ॥ रोगी जम्ब न होइ तेहि काहिक करै उपाउ ॥ बिनो
चराइ अम्ब के लोहू लीजै नाहिं ॥ बिन जाने जतने करै बहु दु
ख वाढ़ै ताहि ॥ अथ वाय वरननं ॥ विकट वाय ॥ दोहा ॥
हाथं अंग सब भूमते ना पावै हय चैन ॥ निरखि जानि लच्छन
यहै विकट वाय है सैन ॥ बच निबुआ को रस मिलै करै लेप
तेहि अंग ॥ कीजै औषधि खान की बहु सुख लहै तुरंग ॥ वाय
विरंग जु हर्र लै घी गुरु सो सन वाय ॥ यह औषधि के खात ही
विकट वाइ हटिजाय ॥ अथ समान वाय ॥ रोग बात लागे
रहै आगिले को तन तान ॥ तासों वाय समान कहि लच्छन कह-
त वखान ॥ तोटक छन्द ॥ बच पीपरि पिपरा मूरि सुलै ॥ अ-
ज वाइनि वाय बिरंग मिलै ॥ सेभो सोफ सो चूरन करी ॥ निंबु

को रस तामैं भरि ॥ दोहा ॥ घी गुरु सौं पुनि सानि के दीजै ताहि खवाय ॥ तीनि दिवस परमान ते वाय समान नसाय ॥ अथ उचान वाय ॥ दोहा ॥ आंखिन की पुतरीं फिरैं ताते चारो पाय ॥ इन लच्छन ते जानिये सोई उचानक वाय ॥ छंद नरेंद्र ॥ कालि सैंजने की सुभ लहसनु निर्गुंडी लै आई ॥ वच दामरि सम भाग सबै सो लेइ तबै औटाय ॥ टंक नौक भरि सो पुनि लै करि दीजै ताहि खवाई ॥ गो घृत अनूपान गुड़ के संग वाय उचानक जाई ॥ अथ अंड वायः दोहा ॥ अंड कोस सू जेर हैं लच्छन कहौं विचार ॥ अंड वाय तातैं कहैं करौ तासु उपचार ॥ चौपाई ॥ घी अरु तेल से मर्दन कीजे ॥ ता पाछे यह औषदि दीजै ॥ सोंठि कटाई दोनों लेउ ॥ पीपरि वच पुनि तामैं देउ ॥ ऊमरि की जरखोदि मंगावो ॥ क्वाथ देइ सब रोग नसावै ॥ दोहा ॥ गेरू सोंठि कचूर ले कारा जीरी आनि ॥ मथि लीजे सो छीर मैं गोबर के रस सानि ॥ करि के गर्म लगाइये वैजा पर यह सोइ ॥ या औषदि उपचार ते वैजा रोग न होइ ॥ अथ मुख वाय ॥ दोहा ॥ मुख सूजे जा अश्व को लच्छन जानौ सोइ ॥ मुख सो वाय विचारि कै कहत सियाने लोय ॥ अरिल्ल छंद ॥ जवाखार औ हर्र लै सेंधव आनिये ॥ अजवाइनि औ सोफ़ सो सरसों सानिये ॥ चारि दिवस भरि ताहि पिंड यह दीजिये ॥ परिहा मुख वाय नसाय तुरी सुख मानिये ॥ अथ रस कुंडली वाय ॥ दोहा ॥ परै गूमरी अश्व के पैसा सी लखि जौन ॥ वाय कहत रस कुंडली इन लच्छन ते तौन ॥ अरिल्ल छंद ॥ त्रफला औरु अरूसो बताइये ॥ सज्जी निर्गुंडी पात सो लैके मिलाइये ॥ सिरका के रस सानि सो मर्दन कीजिये ॥ परिहा औ रूसो औषदि या विधि दीजिये ॥ दोहा ॥ अजवाइनि अरु सोंठि पुनि लहसन सहित बराय ॥ घी गुरु सौं

रस कुंडली देइ खवाय भजाय ॥ अथ गल्ल ग्रह वाय ॥ दोहा ॥ आंखि मूंदि मुख भौं लगैं नकुआ खैंचै जाय ॥ वाय गल ग्रह जानिये इस लच्छन से सोइ ॥ चौपाई ॥ मर्दन ताते घी सों करै खैवे कौं औखदि अनुसरै ॥ रसौति मञ्जुआ जीरो लेई ॥ वाय विरंग भाग सम देई ॥ दोहा ॥ घी सौं सानि खवाइये यह औषदि सिर ताज ॥ वाय गल्लग्रह कौं हरै जैसे गज मृग राज ॥ अथ कंप वाय ॥ दोहा ॥ कांपति देखि तुरंग कौ कंप वाय पहिचानि ॥ जो विकार कछु और नहिं औषदि या विधि आनि ॥ दीजे दूध मिलाय करि सेत सर करा लाय ॥ पान करावे अश्व कौं कंप वाय वहि जाय ॥ वर्षा जल औ पवन ते पीड़ित होइ तुरंग ॥ तिनहूं को उपचार यह पुष्टि करै सब अंग ॥ गोघृत औ गो दुग्ध लै मिसिरी सहित मिलाय ॥ तनक कपूरहि संग दै कंप वाय वहि जाय ॥ अथ अधंग वाय ॥ दोहा ॥ आधो धर जा अश्व को जकड़ि वाय रहि जाय ॥ उठै न आधो अंग पुनि ताकौ करै उपाय ॥ सेमर छालि मंगाय के निर्गुंडी घी संग ॥ लहसन अमिली भाग सम देउ खवाय तुरंग ॥ मालिश कीजे तेल घृत ता तो करि ता वार ॥ अर्द्ध जकड़ खुलि जाय सो कीन्हे यह उपचार ॥ अथ अग्नि वाय ॥ दोहा ॥ परैं पपोरा देह मैं अग्नि दग्ध के ढंग ॥ अग्नि वायु तासें कहत जानि परीक्षा रंग ॥ चौपाई ॥ सेर एक नैनू लै आवै ॥ मद मुल्लतानि औ मिर्च मंगावै ॥ मधुयुत कड़ुये तेल मिलाय ॥ अंग अश्व के देइ लगाय ॥ पोंछि अंग यह औषदि करै ॥ उर्द उसेय नीर मथि धरै ॥ दोहा ॥ अंग अश्व के मर्दिये नीर यहै ता वार ॥ पालि होत मत देखि कै उत्तम यह उपचार ॥ अहि कारे की केंचुली मांसे चारि मंगाय ॥ रोटी करि घृत सानि के घोड़हि देइ खवाय ॥ पुनः फफुला लै दस सेर सो

खंड खंड कर वाय ॥ मठा मेलि दिन सात लौं घूरे देउ गड़ाय ॥ दिवस आठवें काढ़ि के सेर सेर प्रति नित्त ॥ दीजे खान तुरंगकौ हरे रोग निहचिन्त ॥ काई ले कर ताल की जौं के आंटा सानि ॥ सात दिवस के खातही आपै वायु की हानि ॥ अथ साकन रोग. नकुष्णा वहि खांसत रहे सोक हार निर्धार ॥ सकल दोष की जर यहे करै ताहि उपचार ॥ हींग सोंठि को नासु दै जतन सहित जो कोइ ॥ या प्रयोग के करत ही साकन डारै खोइ ॥ पीपरि सिंधु हजीर लै सोचर सहित मिलाय ॥ पीसि छानि सम भाग करि दीजे नासु बनाय ॥ सोरठा ॥ फल विभीत सुभ लेइ मिलवै फलनी राजिका ॥ सिंधु लवन युत देइ कांस श्वांस नासै सकल ॥ सहदोई बच चारु इन्द्र वारुनी कूट युत ॥ मधुयुत कै उपचारु हरै कांस संसै नहीं ॥ अथ कुब्बक ॥ दोहा ॥ पीवा तर गुम्मरी परै सोथ अधिक उहराय ॥ बलगम बिगरै अश्व के कुब्बक कहै जताय ॥ हरै रक्त कारि जतन सौं घृत देवै नित प्रात ॥ पुनि लेपन यह करतही बड़ सुख पावै गात ॥ चौपाई ॥ मस्तन अरनी सुंठी लीजे ॥ रजनी दारु हर्दि सम कीजे ॥ चीतोल्वंग जरा युत लेइ ॥ सोथ ध्वंस लेपन करि देइ ॥ दोहा ॥ रजनी पत्र पलास के तक्र सानि दै आंच ॥ सीर गर्म लेपन करै नासै कुब्बक सांच ॥ अथ खारिश ॥ दोहा ॥ कारे तिल कुट वाय के वामैं तेलु मिलाय ॥ पुनि हाडी मैं डारि के ताहि लेइ औटाय ॥ हांडी गाडै पांच दिन घूरे मैं फिरि जाय ॥ छठे दिवस कढ़वाय के आलसि करै बनाय ॥ पहर बादि हन वाइये पांच दिवस कै सात ॥ या विधि के उपचार ते खारिस रोग नसात पुनः बकुची गंधक मैन सिल वाय विंगड़ु चोख ॥ कूटि पीसि जल कूप मै निसि भिजव निर्दोष ॥ तिक्त तेल युत मर्दि करि तीनि

चरी दै घाम ॥ फिरि पाछे हनवाइये रहै न खारिश नाम ॥ पुनः पाषाण वेद गंधक कह्यो दोऊ निसा समेत ॥ और मनो ह्वासर पिषा मक्खन मैं मथि लेत ॥ यह औषदि नित मर्दिये और खवावै मित्त ॥ खाजु नसावै अश्व की निश्चय जानो चित्त ॥

औषदि चांदनी मारे की ॥ दोहा ॥ दधि सुत रवि सुतको हनै है यह रोग निखेद ॥ तदपि औषदी कीजिये पालिहोत्र लहि भेद ॥ चौपाई ॥ प्रथम एक मुर्गी मंगवावै ॥ जायफर मिर्च सो ताहि लियावै ॥ दोहा ॥ चीरो मुर्गी पेट सो लैकर ता मैं देड ॥ सेर दसक गो दुग्ध मैं औटावन करि लेउ ॥ पांचसेर जब दूध सो औरत ते रहिजाय ॥ मुर्गी काढ़ि के फेरि तब लीजै दही जमाय ॥ घृत निकारि दधि मथि तवै कीजै यह उपचार ॥ मुर्ग पेट ज़ेफर वसी मिर्च लेइ ता वार ॥ मिर्चै नैनू बांटि सो द्रग घोड़ा के देय ॥ रोग चांदनी प्रवल सो ताको बड़ हरि लेइ चौपाई ॥ पीपरि मिर्च सोंठि सम आनो ॥ पुनि मेथी अरु पानहिं जानो ॥ लहसनु औरु सैजने छालि ॥ कंज मैन फल तामैं घालि ॥ पैसा भरि को पिंड बनावौ ॥ घोड़ै एकु सो प्रात खवावौ ॥ दोहा ॥ अजिया चर्म मगाय के झांपे बदनु तुरंग ॥ फिरि औषदि या विधि करै विथा न व्यापै अंग ॥ चौपाई ॥ लहसनु हींग सुहागा लीजे ॥ कालजीरी तामैं दीजे ॥ सेंधव सोंचर सज्जी लावो ॥ भारंगी अरु सोंठि मिलावौ ॥ पीपरि मिर्च सो मूल जवासा लेउ कथाई अतीस अरूसा ॥ विसखपरा अरु अदरख पान ॥ सम सब औषदि एक प्रमान ॥ दोहा ॥ सींगु जरवौ भैंसि को रख ताहि करि लेड ॥ पिंड टंक परमान नौ भूजे आटा देऊ ॥ तप्तनीर दै पान कौ पहर डुइक उपरांत ॥ धूरा कीजे अश्व के होय रोग की सांति ॥ अथ धूरा-चौपाई- आक धतूरा सेंड़ड़ जारो

अजवाइनि हर्दी निरधारै॥ राख छानि सो मर्दन कीजै॥ यावि॰ रोगु अश्व को छीजै॥ अथ मांस वृद्धि॥ दोहा॥ मांस वृद्धि लखि अश्व की रग खोले ता बार॥ फिरि पाछे से कीजिये ना॰ कौ यह उपचार॥ चौपाई॥ नीला थोथा सुम्मल खार॥ अजै पाल सज्जी एक तार॥ दोहा॥ नौवपात टिकिया करौ वटिके नौ के भाय॥ तिल्ली तेल मैं डारिके ताकौ देउ जराय॥ फिरि टिकिया सो काढ़ि के औषधि तामैं देउ॥ ताइ फेरि सो औषदी खरलता॰ हि करि लेउ॥ लेपन कीजै अश्व के मास वृद्धि वहि जाय॥ शालि होत्र अनुसार सो सुन्दर यहै उपाय॥ अथ आम सोथ॥ दोहा॥ जा घोड़ा के सोथ अरु ग्रीवा तन जकि जाय॥ ताकौ तुरतै कीजि ये या विधि सहज उपाय॥ सेंडड़ु ग्वारि मिलाय के सेक करै ता बार॥ फिरि पाछे से कीजिये ताकौ यह उपचार॥ अजवाइनि अजमोद लै हींग सोठि सम भाग॥ कारा जीरौ और पुनि लेप करत नहिं लाग॥ रग छाती की खोलिये कीजै यहै उपाय॥ सूधी गरदनि होय सो सोय सकल मिटि जाय॥ अथ जहर बाद॥ दोहा॥ मिर्च कसौंधी पान सम अदरख लेउ मिलाय॥ या प्रयोग के योग ते जहर बाद मिटि जाय॥ अकर करा औ लौंग लै पिपरा मूरि मिलाय॥ अफू हींग सुहाग युत सोंठि लेउ तेहि भाय॥ सोरठा॥ दूने भाग विशाल राई मिर्चै पीपरै॥ अर्क सैजने छा॰ ल औरा सम गुटिका करौ॥ देइ सांझ अरु प्रात गुटिका एक तुरं ग कौ॥ जहर बाद नसि जात शालि होत्र मुनिवर कह्यो॥ अथ ब्राह्मणी रोग दोहा॥ परसन जारि जुलाब करि साम्हरि की पु॰ नि लेउ॥ सिरका मैं मोय अश्व के केसन मैं मलि देउ॥ घरी चारि के बाद सो फिरि अन्हवावै ताहि॥ या प्रयोग से सहजही ब॰ म्हनी रोग नसाहि॥ अथ बरसाती रोग॥ चौपाई॥ बर्षा

ऋतु जबही सो आवै ॥ तब यह रोग अधिक दर सावै ॥ दोहा॥ अंग अश्व के देखिये चरसी जो परि जाय ॥ लोहू आवैं जब तन्न क मलिये मोमु लगाय ॥ मोम तेलु कडुये सहित सेंदुर लेउ मिलाय ॥ पुनि थोरी बारूद लै अग्नि आंच सौ ताइ ॥ करि के मलि हम सो नवै मालसि कीजै अंग ॥ बरसाती नासै सकल वड्ड सुख लहै तुरंग ॥ अथ औषदि पेशाव वंद ॥ दोहा॥ पक्की आमि ली लीजिये पन्नो करै बनाय ॥ नारि एक घोड़ै दिये मूतहि देइ वहाय ॥ खीरा ककरी वीज लै पीसि नीर मैं सोइ ॥ देइ पिआइ तुरंग कौं तुरतै मूतै सोइ ॥ कारे मिर्चहि पीसिये सेंधव लोन के संग ॥ करला मध्य सो डारतै मूतै तुरत तुरंग ॥ गर गोटा को वीरि लै मिर्चैं साबुनु और ॥ बत्ती करि शक्कर सहित देइ मूत्र के ठौर पीपरि सोंठि पिसाइ के बत्ती लेइ बनाइ ॥ नाजा मै सो देतही मूतै देइ वहाय ॥ कै शक्कर की सो करै पुटरी एक बनाय ॥ वो सोरा के देतही मूत्र तुरत बहिजाय ॥ साबुन मिर्च कपूर कौ पानी खरल कराय ॥ नरा मध्य बाती दिये मूत्र वंध खुलि जाइ ॥ अथ लीदि बंध चौपाई ॥ कारा जीरी मिर्च सुकारी ॥ सज्जी लै कुद की पुनि डारी ॥ हींग टका भरि खील सुहागा ॥ अजवाइनि लै करि सम भागा ॥ खारी सोंचरु सोंठि प्रसंग ॥ जवा खारु अरु वाय बिरंग ॥ दोहा ॥ छदरख के रंग बांधिये गोली टंक प्रमान दुइ गोली के देतही डारै लीदि निदान ॥ पुनः ॥ सोंठ घीव मैं सानि के गुदा मध्य दै सोइ ॥ डारैं लीदि तुरंतही तहाँ न संसौ होइ ॥ मठा मेलि खारी नमक राई लेइ पिसाय ॥ नारि दुइक सो तुरंग को दीजे ताहि पिआइ ॥ लीदि करै संसै नही वाय दोष खुलि जाय ॥ पाव सेर घी गाय को हींग टका भरि लेउ ॥ लीदि बद्ध खोलै कठिन यह औषदि जो देउ ॥ पीपर डारि मंगाइ ये दुइ

सिर जल औषाद ।। अथ विरोधी काय करि देत लीदि खुलि अह चौपाई ।। टका एक भरि गंधक लीजे ।। ग्वाटा सानि अश्व कौं दीजै ।। निश्चै लीदि बंध खुलि जाई ।। यादी मुख्य तुरंत अधिकाई ।। अथ वाय बंध-दोहा ।। उदर बंध जइ जासु को वायु सरै नहि अश्व ।। शालिहोत्र मत देखि के यह औषदि सर बस्व ।। चौपाई। अजवाइनि अरु सोंठि पिसावे ।। घृतलंग औटि के कोखि मलावे ता पाछे कंचन रिपु लीजे ।। सेंचर सोंरि हींग सम कीजे ।। दोहा कूटि सैंजना अर्क मैं गोली करै बनाय ।। भूजे आटा दीजिये-वायु तुरत खुलि जाय ।। अथ प्रमेह ।। दोहा ।। त्रिफला दीजै खांड़ संग सात रोज उठि प्रात ।। सब प्रमेह नासन करै मिटै रोग उत्पात ।। नाग वेलि जड़ कदलि रस शक्कर लेइ मिलाइ ।। सिगी विनौरा भाग सम तवा खीर तेहि भाय।। देश काल वल पाय के सुरभि दूध के संग ।। सात दिवस के देतही वड़ सुख लहै तुरंग ।। अथ मूत्र कृच्छ्र-दोहा ।। सेंचर हर्दी पीपरी इन्द्राइनि फल लेहु ।। मूत्र कृच्छ्र हय की मिटै पिंडी सम करि देहु ।। अथ रक्त मूत्र उपाय दोहा ।। शोणित मूतै अश्व जो ताकौ एहै उपाय ।। वच मधु गाडर घास लै सक्तु भलात खवाउ ।। अथ अतीसार दोहा वराहरोह अरु निंब त्वक आरसी पच मिलाय ।। अतीसार सब अश्व के नाश करै अधिकाय ।। कवित्त ।। मागधि मजीठ हरि सुर तरु समेत कै लीजै पुनि घास जो सुगंधित सुहावनी ।। रुधिर मल मिलो गिरत देखि कै तुरगम के पिंडी एह देइ ताहि तुरतै सु पावनी ।। मुस्ता अरु धाय लै पटोल गिरि करणी सो इनहूं की करौ वटी मन की जो भावनी ।। रक्त अतीसार हरै आंव को विनास करै और सकल दोष उदर के तौ सो हैं दावनी ।। अथ जकड़ा औषदि-दोहा- लेउ छुहारे चीरि के डारो मिंगी निकारि ।। ताके

विच आफू धरौ संपुट करौ सुधारि॥ भूजि अग्नि तें तासु कौ आ-
धो नित्त खवाइ॥ दाना दीजे ताहि नहिं पानी तप्त पिआउ॥ पुनः
बोड़ी पोस्त मंगाय के सज्जी साम्हरि डारु॥ सालिब साबुन सम
करौ टका टका एक तारु॥ पाउ सेर गुड़ युक्त करि भूजे आटा देउ॥
सांझ प्रातही नित्त सो घोड़ा नीको लेउ॥ पुनः-सोरठा-॥ लहस
नु टंक पचीस ता सम साम्हरि लीजिये॥ दीजे सो दिन बीस ज-
कड़ बंध तुरतै मिटे॥ पुनः दोहा॥ हर्दी सालिब गुड़ मिले सां-
झ प्रात नित देउ॥ घड़ी चारि कै जो करी घोड़ा नीको लेउ॥ तप्त-
नीर इस रोग मैं आधौ प्यास पिआउ॥ सिंघ नाउ तेहि दीजिये दा-
ना नाहिं खवाउ॥ अथ सिंह नाउ-कुंडलिया- ईंट पुरानी खो-
जि कै लीजे ताहि मंगाय॥ थंभ तरे सो अश्व के धरै अग्नि मैं ताय
धरै अग्नि मैं ताइ तक्र तापर पुनि डारै॥ उठै वाफ तब फेरि फेरि
सोइ युक्ति विचारै॥ चारौ पाइन तरे जतन तेहि भांति सो कीजे॥
सिंह नाउ सो कहैं अश्व को याविधि दीजे॥ अथ छाती बंद-
छंद दुमिला- अब छातीबंद विधान सुनौ मुनि के मत पर्म
प्रधान यहै॥ रिपु कांचन सो अरु गूगुरु हींग सु सोंचरु लोनुडं
कौ जुल है॥ अजवाइनि एक टका भरि लै एद्रव्य सबै सम भाग
कहै॥ नित प्रात जो देत तुरंगम कौ तब छाती बन्द विकार दहै॥
दोहा॥ गूगुरु पैसा द्वैक भरि गाय मूत्र संग देइ॥ छातीजक
खुलि जात है तहां न संसौ कोइ॥ लोहू लीजे अश्व को रग वि-
धिवत् पहिचान॥ जकड़ बंद चौबंद अरु छाती बंदहि जान॥
जतन सहित जो लीजिये लोहू हरै विकार॥ विन जाने नहिं की
जिये कठिन प्रयोग अपार॥ अथ करण रोग चौपाई॥ श्रो
णित श्रवन अश्व के बहई॥ कै ज्वर युत आभास दिखाई॥ का
पै अंग हलावै सीस॥ करण वायु सो विश्वा वीस॥ ताकी

औखधि या विधि कीजे ॥ तिल हर्दी सौं सेंकु सो दीजै ॥ कुंडलिया- लहसनु हर्दी बांटि कै अर्क पात पुनि लाय ॥ ता पर लेप लगाइ करि आगी लेइ तचाय ॥ आगी लेइ तचाय कूटि फिरि अर्क निकारै ॥ घी युत सो वड़ अर्क अम्ब के करौंहि डारै कह केदार कवि वैस सुनौ यह पर्म प्रयोगा ॥ निश्चय नीको होय करण के भागैं रोगा ॥ दोहा ॥ जो आमास होय अति नस्तर देइ लगाय ॥ जेतो रुधिर विकार को सो सब देइ बहाय ॥ सेंधौ साजी सोचरौ लै पानी मैं सानि ॥ तब पानी सो जतन सौं भरै करण मैं आनि ॥ सेंक करै सो चतुर नर या प्रयोग के संग ॥ रोग नसावै करण को वड़ सुखु लहै तुरंग ॥ अथ मुख रोग- दोहा- मुख ते डारै लार वड़ के कफ़ स्यामल रंग ॥ सेंक करत तेहि वार सो वड़ सुखु लहै तुरंग ॥ चौपाई ॥ रुकरौंधा को रंग निकारै ॥ सेंधव साम्हरि मिर्चै डारै ॥ सो रंग ताके वदन लगावै ॥ निश्चै करि मुख रोग नसावै ॥ उपजै दंत जो तालू माहीं ॥ काम नाम कहिये तेहि ठाहीं ॥ दंत तोरि औषदि यह कीजे ॥ घोड़े घास खान नहिं दीजे ॥ दोहा ॥ ले हर्दी अरु मिर्च सो घृत पुनि शहत मिलाय ॥ तनक लोनु दै ताहि मैं लेपन करै बनाय ॥ उपजै वात विकार जो मुख सूजै तब अम्ब ॥ तत छन सो पुनि कीजिये यह औषदि सर वम्ब ॥ चौपाई ॥ जवाखार अजवाइनि लई ॥ सरसौं सौंफ़ हर्दि पिसवाई ॥ लहसनु मिले वजनु सम करौ ॥ जल मैं सानि आग्नि मैं धरौ ॥ गर्म सीर मुख देउ लगाई ॥ सेकैं तुरत रोगु वहि जाई ॥ अथ नेत्र रोग हरण विधि- दोहा- जातु रंग के नेत्र मैं नाखूना उपजाय ॥ चतुर वैद्य सत्तान सो या विधि करै उपाय ॥ डारि सएड़ मर्दि सो ऊपर को करि लेइ ॥ लोहू मांस राह सो सब वहाय पुनि देइ ॥ चौपाई- भूंजि

फटकरी खील सो कीजे ॥ सोंहि चाहत घृत तामें दीजे ॥ दोहा-
टिकिया करि सो जतन सौं बांधे ऊपर ताहि ॥ सीत वात नहिं व्या
पई नीको होइ उमाहि ॥ अथ नेत्र ढरका- सोरठा- सतौं पि
परा मूल बकला मूल अंड को ॥ पुनि कड़इल के फूल हाऊ
बेर सो ग्वारि लैअलीजे अर्क निकारि कूटि छानि एक तार करि॥
ढरका हरै प्रचारि छींटा दीने दृगन मे ॥ पुनः दोहा-चंदन
सोफ तगर लै गो घृत लेइ मंगाय ॥ बकरा की पेशाव युत अं
जन करै बनाय ॥ आलि होइ मत देखि के उत्तम यहै उपाय॥
भरिये दृग जो तीनि दिन ढरका रोग नसाउ ॥ अथ फुली हर
ण विधि- दोहा- सोना मक्खी फटकरी चंदन मिर्च कचूर ॥
सिरस बीज युत आंजि दृग करै फुली कौं दूरि ॥ पीपरि सेंधो स
हत लय विस खपरा रस सानि ॥ अंजन दीन्हे दृगन मैं करै फुली
की हानि ॥ अथ रतौंधी-दोहा- साबुन मिर्च मिलाय कर
लीदि रंग मे सानि ॥ घोड़ा के अंजन करे करे रत्योंधी हानि॥
अथ नकसीर उपाय- दोहा- फूटै नकुआ अम्ब के पित्त कोप
ठहराय ॥ सोंफ धना जीरो सहित लीजै सोंहि मंगाय ॥ या की
विधि सों बांटि के माथे देइ लगाय ॥ लीजे लेड़ी ऊंट की अर्क
काढ़ि ता बार ॥ गो घृत रंचक नमक लै दीजे नासु विचारि॥ सं
खाहुली के फूल लै गाय दूध मैं सानि ॥ नासु दीजिये अम्ब को
करै रक्त की हानि॥ अथ विष उपचार- दोहा- तीनि तरह
के विष कहे सोई तीनि प्रमान ॥ स्थावर जंगम सुनो कृत्तमओ
र बखान ॥ धातु वृक्ष ते जानिये स्थावर विष होय ॥ सर्प कीट
को आदि दै जंगम जानो सोइ ॥ मंत्रादिक के योग ते कृत्तम वि-
ष निर्धार॥ यथा योग पहिचानि के कीजे ताहि प्रचार॥ स्थावर
विष कैसे हूं खाय तुरंगम कोइ॥ कीजे ताहि उपाय सो नकुल मनो

है जोइ ॥ छंद मत्त मयंद - लै गडुरी वदरी फल सो पुनि पंकज नाल औ तक्र मिलावै ॥ देइ खवाय तुरंगम कौ तब थावर कोविष दूरिहि जावौ ॥ ताहि प्रकार सु कांस कुसौ अर केसरि नाग कुसुंमहि लावै ॥ और हनी सरसौं असगंध सो जंगम कोविष देत भगावै ॥ दोहा ॥ सो परी कंकोल लय गो घृत साथ मिलाय ॥ जंगम के विष नाश कौ दीजे ताहि खवाय ॥ नल कुस कांस तिहून की लीजे मूल मंगाय ॥ विष कत्यम के नाश कौ कीजे यहै उपाय ॥ कुसम नाग केसरि सहित तामै लाव मिलाय ॥ खान पान अरु नस्यकौं घृत सौं देइ मिलाय ॥ अथ हड्डा मोतरा इत्यादि रोग कथनं - दोहा - अब आगे संक्षेप से सुनियें यह उपचार ॥ हड्डा जानू मोतरा ये सब रोग अपार ॥ पुस्तक हड्डी वेर जो और चकावल होइ ॥ रसो आदि ये रोग सब महाभयानक सोइ ॥ एगवंदी दै आदि मै कीजे यहै प्रयोग ॥ बहुत कहा अब भाखिये महा कठिन ए रोग ॥ इति ॥ अथ अग्नि दग्ध चिकित्सा कथनम् ॥ दोहा ॥ सेत दूर्वा अगरु पुनि एला सहित मिलाय ॥ सिता सहित दग्धेतु रंग तुरतै देइ खवाय ॥ पुनि अलसी को तेल लै सेत दूर्वा लेइ ॥ आमिली छालि जराय करि सो लेपन करिदेइ ॥ अथ शस्त्र घात चिकित्सा - दोहा - शस्त्र घात पीड़ित अधिक वाजी लखिये जोय ॥ तिन कौ तुरत खवाइ ये यह औषदि तब सोइ जवाखार औ सोचरऊ सेंधव वाय विरंग ॥ मधु युत पिंडी दीजिये घायल देखि तुरंग ॥ दारव धना मेथी कही हरं चिरौंजो लेऊ गावो घी मै सानि के घायल घोड़हि देऊ ॥ अथ विशेष सो खदिवाम साला कथनं - दोहा - अब ओषदि सो मै कहौं जो नासक सब रोग ॥ और मसाला विविधि विधि उत्तम अधिक प्रयोग ॥ कवित्त ॥ निसा पीत लावै औ कूटहि मिलावै जो कुटकी

तथा भाग सम कर कही ॥ कलेसुर सो जोऊ विडंगी है सोऊ सुहागा औ
कारा है जीरी सही ॥ स्फटिका जो सोहै औ पीपरि अतो है अपर कंज
पिपरा सो मूरौ लही ॥ कचूरौ समेतौ औ सुंठौ निशोतौ सो तौ मिर्च का
रो औ चफला नही ॥ दोहा ॥ अमलतास असगंध कहो अजवाइ-
नि तेहि भाय ॥ मेथी सम सब औखदी दूने गुड़हि मिलाय ॥ आध
सेर को पिंड करि घोड़हि देउ नहार ॥ जहर बाद बलगम कठिन
नासै सकल विकार ॥ पुनः लौंग मिर्च औ पिप्पली अदरख पान
हिं लेउ ॥ रोग रहै सब दूरही जो नित थोरहि देउ ॥ घनाक्षरीछंद
कुटकी कचूर मिर्च लहसन विडंग सो पीपरि और पिपरा मूरहू लि-
याइये ॥ कंचन रिपु हर्दि वच गूगुरु जवाखार सो मेथी पुनि सोंठि
मैन फलहू मंगाइये ॥ सज्जी अजवाइनि कलौंजी के बीज लै चीतौ
औ पमारि बीज जीरे दोउ मिलाइये ॥ फटकरी कलेसुर असित जीरौ
हू सो तुल्य सब ताही सम दही भंग सेरक बताइये ॥ दोहा ॥
सौ पल मानुष खोपड़ी द्वै पल महिषी सींग ॥ लेऊ जराय सो राख
करि ताही सम लै हींग ॥ टका एक नित दीजिये भूंजे आटा संग
रोग दहै पौरुष गहै बड़ सुखु लहै तुरंग ॥ अथ सिगुरुफ गुटि
का ॥ दोहा ॥ सिंगुरुफ सुम्मल सोधि के टका टका भरि लेहु ॥
चकुटा गुगुरु सिंगिया टका टका भरि लेहु ॥ कंचन रिपु अदरख क-
ही लौंग ताहि सम जानु ॥ कर वेरी के वेर सम गोली करौ प्रमानु ॥
नित प्रति गुटका एक सो भूजे आटा देहु ॥ रोग नसै सब अश्व को
शालि होत्र मत एहु ॥ अथ मसाला छंद नरेंद्र ॥ वाय विडंग सु-
हागा औ पुनि अजवाइनि कौं लावै ॥ राई लहसनु कारा जीरौ
पीपरि हर्दि पिसावै ॥ कालि सैंजने की सम औषदि आके खरल
करावै ॥ गो दधि मेलि लोन सब डारै घामे माहि धरावै ॥ सोरठा
जब औषदि उफनाय टका एक भरि नित प्रति ॥ ग्रीषम ऋतुहि

बचाय जो घोड़ा कौं दीजिये ॥ होय पुष्टि सब गात छुधा बढ़ावै अमित सो ॥ वाजी बल सरसात शालिहोत्र इमि उच्चरै ॥ पुनः ॥ अजवाइनि लहसनु सहित कारा जीरी लेउ ॥ एई पिपरा मूरि सो चौराई सम लेउ ॥ वाय विरंगो सिंधिका सेंधो सोंचर लौन खारी साम्हरि मेलि कै घोड़े दीजे तौन ॥ टका एक भरि दीजिये मोठि महेला अम्ब ॥ छुधा करन या सम नहीं बल दायक सर बम्ब ॥ अथ मोटे होने की विधि छंद मत्त मयंद ॥ सेरक लै मडुआ सुभ सो अलसी पुनि भाग बराबरि लीजै ॥ भार भुजाय कुटाय भली विधि तामैं सो और यह औषदि दीजै ॥ मेथी जया अजवाइनि टंकहु सोन्चर खील द्रवी तब कीजै ॥ चारिक सेर सो लेहु गुड़हि म्रद पात्र मैं सानि कै ताहि धरीजै ॥ दोहा ॥ देश काल कौ देखि कै दीजै नित पल चारि ॥ मोटो होय तुरंग सो भच्छत यहै न्हारि ॥ पुनः मसाला छंद मत्त मयंद ॥ पीरी निसा लै आढक सेर सो छीर कै मध्य मै ताहि भिजावै ॥ छांह सुखाइ कै कूटि भली विधि ताते से घीउ मै आनि मिलावै ॥ सेरक सोंठि कही पुनि सो तब पांचक सेर सो गेंहु पिसावै ॥ दूनी शिता दै अर्ध सो दूध लै मंद सी आंच मै ताहि पकावै ॥ दोहा ॥ पाउ सेर नित दीजिये घोड़े कौं उठि प्रात ॥ याते पुष्टि न और कछु मोटो होय सो गात ॥ पुनः सहदेई अरु कूटु वच इंद्राइनि पल चारि ॥ दूनी लीजै वारुनी पिंड करौ निरधारि ॥ शहत सहित दीजै विदित हय कौं सांझ सकार ॥ अंग रोग नासै शकल जानौ सहस कुठार ॥ पुनः ॥ काकोली औ सहत लै सेत केत की मूल ॥ लेहु मुनक्का भाग सम पिंड बनावौ तूल ॥ जे बल हीन तुरंग हैं और वृद्ध जे सोइ ॥ दीजै तिन कौ नित प्रति या सम पुष्टि न कोइ ॥ पुनः जवाखार नपनी वचा घृत युत पिंड बनाय ॥

नित प्रति घोड़न कौं दये सर्व व्याधि बहि जाय॥ पीपर छा-
लि जराय के लोनु बराबरि डारि॥ क्षुधा करन अतिही कहो
दीजै ताहि नहारि॥ पुनः॥ ग्रीषम काल प्रचंड अति तपत
तरंगै भानु॥ यह पिंडी कांजी मिलै दीवे कौ सुष दानु॥ सो-
चरु पीपरि हर्दि लै सम करि ताहि पिसाय॥ दिन प्रति अश्वहि
दीजिये सकल व्याधि वहि जाय॥ अथ कामद घृत छन्द-
मत्त मयंद॥ लै सम भाग सवै सुभ औषदि चौगुन कै घृत आ-
नि मिलावै॥ सोई प्रमान कहो जल को पुनि औषदि से करि
तुर्य बतावै॥ कूटि के वस्तु सवै विधि सौं तब आछी सी भांत
से कल्क बनावै॥ कामद नाम कहो घृत सो अब द्रव्य सुनौ
सोइ खोजि के लावै॥ पुनः लेऊ मंगाय वकायन कौं इंद्रायनि
और सिलाजित लावै॥ नागद्रु पुष्पक हैं पुनि सो तेहि तुल्य
प्रमान गनौ पखावै॥ एकहि एक पलै सो सवै पल तीस सोची
उ मिलाय के राखै॥ कूटि के द्रव्य सो कल्क करै तुलसी रस चारि
टका भरि भाखै॥ दोहा॥ घृत मैं कल्क पचाय के मंद आंच के
योग॥ मधु युत नित्त खवाइये उत्तम सरिस प्रयोग॥ वातव्याधि
विनास करि रोग हरै अधिकाय॥ बल औ पुष्टि की वृद्धि कौ
जानौ सरिस उपाय॥ अथ वातव्याधि विनास घृत-छंद
मदिरा- लेऊ सो धाय के फूल मंगाय के केसरि कूट कुसुंभ तवै
दाड़िम नाग जो केसरि लोधु करौ एक ठौर जु वस्तु सवै॥ चौगुन
सो घृत गाय कहो करि कल्क बनाय पचाइ दवै॥ मंद सी आंच
भली करि कै पुनि सुद्ध भये पै उतारि जवै॥ दोहा॥ देस का-
ल कौ देखि के घोड़े दीजै नित्त॥ वल पौरुष वाढ़ै सरिस निहचै
जानौ मित्त॥ वातव्याधि जो कठिन मै पीड़ित होय तुरंग॥ या-
प्रयोग के करतही वड़ सुख पावै अंग॥ अथ हर्दि प्रयोग छन्द

मत्त मयंद- मोटो जो बेगि करो चहैं बाजि तो ताहि निरा खर पहरु खवैये ॥ ग्रौरु प्रयोग सबै तजि के एक हर्दि बड़ी गुण कारी जो पैये ॥ हर्दि कौ बल वेग वलिष्ट सो हर्दि समान न ग्रौर गनैये ॥ हर्दि से रोग न होत कभू ग्रब ताते सो हर्दि सो हर्दि बतैये ॥ छंद मत्त मयंद ॥ चारि टका रजनी लैं पीसि सो ग्राछो जामे दूध मिजावै ॥ मोठि के चून मै सानि भली विधि ग्राछो सी भांति लै पिंड बनावै ॥ प्रात समै नित देहु तुरंगै कौन सकै गुण ताके गनावै ॥ मोटो तुरंतै होत सो खात पराक्रम को करि ग्रोज बढ़ावै ॥ छंद मदिरा ॥ हर्दि के तुल्य लखौं नहिं ग्रौर सो हर्दि बड़ी गुण कारी लही ॥ हर्दि कौ बल वेग पराक्रम हर्दि से भूख बढ़ै नितही ॥ हर्दि से पानी लगै न कभू ग्ररु बात के रोगन होत सही ॥ हर्दि बड़ी गुण दायक सो कवि वैस केदार विचारि कही ॥ छंद मत्त मयंद ॥ हर्दि रंगीलो सो पीली भली गुण केसरि के सम ताहि सम्हारो ॥ हर्दि जो ग्रावत काम सबै सब खात तिसै नितही सो विचारो ॥ हर्दि विना वह कौन सी वस्तु जहां नहिं हर्दि तहां निरधारो ॥ हर्दि से रोरी बनै तौ सही शुभ कारज मैं पुनि हर्दि निहारो ॥ दोहा ॥ नित प्रति चौरै दीजिये हर्दि सकल सिर मौर ॥ शालिहोत्र मत देखि के नाहिं मसाला ग्रौर ॥ जै महेश गिरिजा सहित जै मुनि वर सुर राज ॥ जै यति नकुल सह देव जै वरदायक सब काज ॥ ग्रंथ समाप्ति मै करो मुनि वर मतो विचारि ॥ सज्जन कृपा सो दृष्टि करि लीजै चूक सुधारि ॥

इति श्री सत्वैस वंशावतंस केदार सिंह वर्मा विरचिते तुरंगम चिकित्सायां शालि होत्र तंत्र समाप्तम् शुभं भूयात्

इश्तिहार

विदित हो कि अश्व चिकित्सा ग्रन्थ अब तक कोई उ-
त्तम रीति अश्व वैद्यक अनुसार छपा नहीं है इसलिये
अति परिश्रम से प्राचीन ग्रंथ बहुत से मथ कर यह
शालिहोत्र तंत्र ठाकुर केदारसिंह वर्मा नवीन तौर पर
निर्माण किया है कोई साहब बिदून मर्ज़ी संपादक के
छापने या छपाने का इरादा न करैं लाभ जान नुक़सान
न उठावें और जितनी पुस्तकें जिन साहिबों को चाहिये
हों वह क़ीमति भेजकर मुझसे मंगा लेवैं और मैंने हक़
तसनीफ़ किसी को नहीं दिया है अपने अख्त्यार में रक्खा
और पता मेरा यह है कि ठाकुर केदारसिंह निवासी माधौ
नगर परगने तालिग्राम व डांकखाना तालिग्राम ज़िला
फ़र्रुख़ाबाद ॥

द: केदारसिंह
व: भोलानाथ
कापीनवीस

शहीद ठाकुर केदार सिंह

ओ३म्

शालहोत्र

जिस में

घोड़ों की ज़ात तथा रंग का भेद और ब्राह्मण क्षत्री वर्णादि का निर्णय भौंरी आदि सर्व शुभा शुभ चिन्हों का वर्णन और रोगों के लक्षण और चिकित्सा वर्णन की गई है

मतबै प्रकाश हिन्द लखनऊ मुहल्लै सुभान्नगर मे बएहतमाम लाला कालीचरन के छपा २५ मार्चि सन् १८८९ ईसवी मुताबिक़ चैत बदी ११ संवत् १९४५॥

श्रीगणेशायनमोनमः

अथ शाल होत्र आरंभ्यते

मंगलाचरण

दोहा

नमो निरंजन देव गुरु मार्तण्ड ब्रह्मंड
रोग हरण आनंद करण सुखदायक जग पिंड
श्री महाराजऽधिराज गुरु सेंगर वंश नरेश
गुण ग्राहक गुणि जनन के जगत विदित कुशलेश
जाके नाम प्रताप को चाहत जगत उदोत
नर नारी सुष सों रहत कुशल कुशल कुल गोत
चित चातुर चख चातुरी मुख चातुर सुख देन
कवि कोविद वरनत रहत सुख मुख पावत चैन
वाजी सों राजी रहै ताजी सुभट समरत्थ
रन सूरे पूरे पुरुष लहहिं कामना अरत्थ ॥
बालापन ते सरन रहि मैं सुख पायो वृन्द ॥
शाल होत्र मत देखि के वरनत चेतन चन्द ॥
श्री कुशलेश नरेश हित नित चित चाह लह्यो
अश्व विनोदी ग्रंथ यह सार विचार कह्यो ॥
मूलमान शाखा सु मधु पत्र सुभग कर साज
सुवन फूल फलियो सदा कुशल सिंह महराज

अथ शालहोत्र यथा प्रतिवर्णन

दोहा। विजय करन अरु जय करन गावत चारों वेद
नकुल कहै सहदेव सों रवि वाहन को भेद
वाहन भूसुर को सुरथ क्षत्रिय को है जान
वैश्य वृषभ वाहन कह्यो महिषा शूद्र निदान
रवि शशि कुल के वंश जो क्षत्री वीर प्रचण्ड
एक तुरी एक वारि वस विजय करन अखंड
मार्तण्ड मण्डल सकल उपजा जासु प्रकाश
वाहन ते जो तुरंग ते जुग जुग जुगत विलास
तेहि वाहन को भेद सब सुनहु सकल सह देव
प्रभु देहो प्रतजान यह हय देवन को देव
जाको प्रबल प्रचंड बल अमित अनल आकाश
ताको गुण कहं लौं कहौं जो रविरथ आकाश
भुवि रुचि क्रिया और धर्म युत जो सबो जग होय
ताहि भगावतो दाहिनो सारन मंडै गोय ॥
महा पुनीत पवित्र तन होय तुरी असवार
विजय करै संशय नहीं डारै शत्रु संहार
जैसे भानु उदोत ते तिमिर लोप ह्वै जाय
तैसेहि गाजी मर्द ते शत्रु न रण ठहराय ॥
गाजी केवल अश्व है मर्द सो क्षत्री नाम।
जाके प्रबल प्रतापते जग पावत आराम

चारि वरण वाहो चरण चाहो जुगजस जास
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्र चरण को दास

सहदेव उवाच

अहे अनुज हय प्रवल है जानत सकल जहान
इन में चारों वर्ण है तिन को करों बखान ॥
तिन के लक्षण सब कहो जा विधि जानेजात
अश्व सबै सामर्थ है होत एक सो गात ॥
वर्ण वर्ण के भेद सब भिन्न भिन्न कह देहु
केते रण समरत्थ हैं केते पालहिं देह ॥

नकुल उवाच अश्व वर्ण लक्षण वर्णनं ॥

ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्र वर्ण हय होत
लक्षण ते पहिचानिये तिनके अंग उदोत
सूक्ष्म रूप अनूप छवि महातेज अधिकार
जाके दर्शन देखते नवनि करे संसार ॥
रुचि दाने रहं अति रहै भोजन करै अघाय
तेज न मानै तोयको पैठे जल में धाय
अग्नि पुंज ज्वाला ज्वलित रन के देखि होय
महा सुगंध प्रस्वेद तन जल अंचवै मुखमोय
अड़ पकडै छांडै नहीं डरै न त्रासहि त्रास
ब्राह्मण सो पहचानिये सरसों आवै रास

अथ क्षत्री वर्ण के लक्षण ॥

क्षत्री वर्ण विरोध अति माने नेक न हारि
क्रोध करै संग्राम लहि डारे शत्रु संहारि
बार २ धुनि शब्द मुख लल करै जनु वीर
एका एको और को आवन देत न तीर ॥
टापै हींसे बल करै डारै बंधन तोरि ॥
असवारी प्यारी लगे वाहि न दीजे खोरि
रण देखे प्रचंड ह्वै मन के साथ उड़े ॥
अस्त्र चोट माने नहीं सन्मुख टूट पड़े
अति सुगंध प्रस्वेद तन आवे लहर सुवास
चौंके चितवे सहजही नवन नमाने खास
मरदानो क्रोधी बडो वर्ण जो क्षत्री होय
जाके बल अरु पौरुष हिं अस्व न लागे कोय

अथ वैश्य वर्ण के लक्षण

सुस्त चुस्त तन तंग कसे रहे सदा आधीन
जल्द करै तो जल्द है तन बलते नहि हीन
हड़के देखत भीत भय माने उर अधिकाय
रण कांचो नाचत फिरै उतरनते चलि जाय
अंग प्रस्वेद प्रस्वेद ज्यों आवै नाहिं सुवास
शुद्ध राह चाहै सदा रुचि सों दानो घास

अथ शूद्र वर्ण के लक्षण ॥ ॥

मलिन वसन सो सो रहे लोटहि थान विशेष

मंदमंद भोजन करै डरपहि पानी देखि ॥
वैसे तो हयो रहै औ गुन देय भुलाय ॥
महा सुगंध प्रस्वेद तन स्नते चले भगाय
यह लक्षण चहुं वर्ण के सब में सब नहि होत
मिश्रित अंग पहिचानिये तैसे करै उद्योत
जो एक हि अंग देखिये लीजै ताहि विचार
चेतन चंद संचेत करि शाल होत्र उपचार

अथ रंग वर्ण उपचार

दोहा नुकरा हंस स्वरूप अति रजित सेत एक अंग
कुमैत मुश्की सुरंग रंग सुरखा सकल प्रसंग
जर्दा सोरठो अतिहि दृढ महा बली बल सात
पंचाईयाको सकल शाल होत्र बल भाव

तोमरछंद· एक स्याह अबलक लाल एक समन्द सहित विसाल
एक संदली पंजाव एक खिंक है सुरखाव
एक समद सिरंगा रंग एक चालि चौधर अंग ॥
एक सूत पचकल्यान एक सब्ज नीला जान
दीनार पायक जर्द नीलादि नारी सरद
एक रंग गाम्रा लाल एक स्याह अबलक खाल
एक तेलिया कुम्मैत एक सेर नप्पाल तेज ॥
एक नपल ताजी मंज फुल्लवारिया कर कंज
एक चंचल चीनी अंग चतुरंग अंग उतंग ॥

दोहा प्रयाम कर्ण ऊंचे अरा वास तुरंग वषानि
अवर रंग मिश्रित बहुत चेतन चंद प्रमान

अथ घोड़े के जन्म समय का फल विचार॰

प्रथम पहर जो राति के जन्मै घोड़ी पुत्र
महा सुफल फल कहत हैं देखत नासै शत्रु
द्वितिय पहर को फल यही निधनी के धन होय
पुत्र लाभ वा साल मे साल होत्र कह सोय
तृतिय पहर चिंता करै कछुक दिनन को ताहि
बहुरि अरणी ह्वैके पुरुष सहरै वेगि उमाहि
पहर चतुर्थक फल यही जन्म सुना सुत गेह
धन प्राप्ति होइ तास को सुत फल होय सनेह

अथ घोड़े के दिन मे जन्म होने का फल वि॰

वासर जन्मै पुत्र को सुत फल होय सनेह ॥
प्रथम पहर मध्यम कहत हरै चित्त वित नेह
द्वितिय पहर फल अति निरखि जाको घोडी होय
संकट ताको परिय अति विरले जानै कोय
तृतिय पहर मध्यम अधम चौथा महा मलीन
दीजे काहू शत्रु को फेरिन बांधे जीन ॥ ७

अथ रवि फल विचार

उत्रायन शुभ फल कहै दक्षिण मध्यम मान
ताही में श्रावण निषे महा निषिद्ध बखान।

अथ घोड़ा के दांतो का लक्षण वि०

प्रथम दंत अस फटिक सम वेद होत गुनक्षीर
बहुरि पीति डर के भये टूटहि है गंभीर ॥
ह्वैक भये तासो कहे ऐसे चार विचार ॥
नेसरि कारे पुंज गति आगे लेहु निहार
तरुण रदन स्याही रहे सप्त वर्ष उनमान
द्वादश ते स्याही तजे लेहु वृद्ध पहिचान
जो असील हैं ठौर के खुरासान मुलतान
ऐराकी अरबी कछी दीरघ आयु बषान
तिनकी तैसी आयु है दीरघ वर्ष प्रमान
वदन वदन ज्यों जानियो रदन रदन पहंचान

सोरठा अधिक दंत हैं जासु विरले विरले अश्व के
करि विना है नास धनी धाम रहि नाम के

अथ भौंरी के शुभा शुभ लक्षण वर्णन

अथ लक्षण घोड़ा के लहो । जो कछु शालहोत्र मत चहो
समुझै पंडित अरु बुधिवंत । रंग वैगुण्य घोड़ा के अंन्त ॥
याते धारत चौपइ छन्द ॥ वरनि कहत सब चेतन चंद
कालह सुठार नयन वह भारे । शुथरी छोटी अधहि कारे
कंठ मिली ग्रीवा अस्थूल । छाती चौडी होय समूल ॥
रूधी स्क्ष्म मास न होय । कर पद स्थंग कैसे शुभ होय
ग्रीवा पृष्ठ उचास बनावै । कटि लखि चौडी पुटो लखावै

छोटे करन श्याम शुभ भौंरे। लम्बोदर कोका फुर वारे॥
चारयो चौका आठहु रंग॥ जो पावै वनि कैसो चन्द॥
भूरि भार नरको तेहि भावै जो घोड़ा या विधि को पावै

अथ भौंरी शुभ लक्षण

अथ भौंरी वरणौ तेहि अंग जो शुभ राखो अंग तुरङ्ग॥
जो माथे पर भौंरी लहिये॥ गुणी लोग औगुन मत कहिये
कंध तरे भौंरी जो होय॥ उत्तम कहत सयाने लोय
अधरस भौंरी जो लहै॥ शुभ सुख दायक वाह कहै
कोसन मे भौंरी जो होय॥ शुभ लक्षण भौंरी जो सोय
पिछले पावन जंघा ऊपर॥ जो भौंरी लहिये पद ऊपर॥
ता समान शुभ वरणन सोय जो भौंरी पावन मे होय॥
विजय करन ताही सो कहै शाल होत्र जेहि लक्षण लहै
भौंरी चार और जो होती॥ तिन को नाम सुनहु उद्योती

दोहा॰ चिंता मणि अरु गोमणी होत कंठ मणि नाम
देव मणि भौंरी आदि दै शुभ राखो श्री राम

भौंरी अशुभ लक्षण

भौंरी अशुभ कहौं मे सोई॥ अंग अश्व के यह विधि होई
आंखिन नीचे ऊपर पूंछ॥ होत मध्य यह भौंरी पूछ
आंसू ढार नाम है ताको॥ खोवै तेहि घोड़ा है जाको॥
अंग तरे भौंरी जो होय॥ तंग करे स्वामी को सोय॥
मूल करन के भौंरी लहो॥ एकहु याते अशुभ हि कहो

जो भौरी होय सपो कार ॥ तो दीजे वाहू को डारि ॥
विधि भौंरी जो नथ्थो समान ताहू डाल देय सो ज्ञान ॥
पद्दे तर भौंरी जो परे ५ ॥ स्वामी को दारिद्री करे
हृदया वलिहु हृदयमे होय सो डाले स्वामी को खोय ॥
भेजा पर भौंरी जो लोय ॥ मेटि देय स्वामी को सो य ॥

देहा नवन भाल सव काल हो खंड २ सब दाम
और सपेदी अंग नहिं अकरव ताको नाम
एक लक्ष कंजा लहो दूजो लहों सफेद
अकरव ताको कहत सों लोजे उपजे खेद

रोग वर्णन

अव औषधि अरु रोग सव वरनों मति अनुसा
र चेतन चंद समेत नर लहो सुअंग विचार
दोनो वेर सुवेर सों विना ताक जो देय
जाय बंद ते होय है रोग दोष सब कोय

अथ घोड़े के सर्व रोग व्याधि नाशक औषधि ॥

कुटकी कूट अरु कारी जीरी कलिस्यार हल्दी अरु पीरी
वाय विडंग सुहागो लेउ ॥ भूंजि फिटकरी ता महि देउ
मिर्च कंज अरु पीपर मूल ॥ त्रिफला अमल तास को मूल
असगंध नागौरी तहं देउ ॥ भाग वरावरि सव करि लेउ
अजवाइन मेथी अरु राई ॥ लेइ पुराने गुड़ हि मिलाई
नाम करि औषधि एक न दीजै औषधि में दूना गुड़ दीजे ॥

आध सेर के पिण्डा चार ॥ घोड़हि दीजे एक न बार
बलगम ज़हर बाद को नासै तासों होय रूप परकासैं ॥
दोहा लोंग मिर्च अरु पान ले अदरक पीपल मूल
नित प्रति घोड़हि दीजिये रोग हरै तेहि स्थूल ॥

घोड़े का बत्तीसा मसाला

पीपल लहसन पिपलामूल कुटकी बाय विडंग कचूर ॥
मिर्च सुहागा काला जीरो अजवाइन हल्दी अरु पीरो
बच गूगुल औ दही मंगावे सज्जी जवाखार को ल्यावे ॥
मेथी सोंठ मैन फल लेउ ॥ बीज कसौंदी तामहि देउ ॥
चीती बीज पमार विधारो ॥ कालेस्वर जीरो किच न्यारो
सेर एक विजिया को लीजे हींग टका भरि तामहिं दीजै
लेउ सुहागा और फिट करी भूंजि खील सों जो वह करी
दोहा मानस की खुपड़ी सुफल द्वैपल महिषी सींग
लेय जराय सों राख करि ताहि कर्म ले हींग
टका एक भरि दीजिये भूंजे आटा मध्य ॥
रोगन सें सब अश्व के बल पौरुष की वृद्धि

सिंगरफ़ गुटिका

सिंगरफ़ टका एक भरि लेउ सम्भल खार तेहि सम कर देउ
त्रिकुटा गूगल अरु विषनागा टंक एक भरि तीनों भागा
लोंग अदरक पान सुहागा करिके खील सोध विष नागा
कर बेरी सम गोली करै ॥ सबिहि रोग घोड़ा के हरै ॥

भूंजे आटा मध्य जो गुड़ का देय बनाय
ना मै रोग सुचंद करि और न करै उपाय

क्षुधा करन विधि

मल दुह गाय दही मंगवावै छाल सहजने को कर लावै
सेंधो सांभर सज्जी लीजे ॥ सांचर खारी नामहिं दीजे ॥
राई लहसन कारा जीरो ॥ अजवाइन हल्दी अरु पीरो ॥
वाय विड़ंग मूसली संग ॥ खील सुहागा करि इक संग
सब को तनक सु कूट करि राखे धूप धराय
टका एक भरि दीजिये जब औषधि उफनाय
ग्रीष्म ऋतु हि बचाय करि जो घोड़े को देय
होत सु पुष्ट शरीर तेहि क्षुद्र अमित कर लेय

औषधि क्षुधा करन

सज्जी अजवाइन अरु राई साम्हर वाय विडंग कटाई
सांचर सेंधो सांभर लीजे वज़न बराबर यह सब कीजे
काला जीरी अरु चौराई ॥ लहसन पीपला मूल सुहाई
मानस को पेशाव मंगावे। कूट पीस तामहिं धरवावे
एक टका भरि दीजिये मोठ महेला माहिं ॥
क्षुधा करत अति अश्व को औषधि या सम नाहिं

औषधि क्षुधा करन

नींव बकायन और कसौंदी ता महिं देउ कंजा की पेंदी
ता पीछे विष खपरा लीजे सेर सेर इन सब को दीजे ॥

अदरक पान मिर्च को लेउ। करि गुट का घोड़ा को देऊ
सात दिवस अश्व जो पावै क्षुधा होय अरु मास वढावै
सोरठा भूंजे आटा मध्य प्रात समय जो दीजिये ॥
होय सुबल को वृद्धि चेतन चंद विचार कह

घोड़े को मोटा करने को दवा

सेर एक महुवा मंगवावै ॥ अलसी सहत भांग भुजवावै
मेथी अजवायन तहां भांग टका एक भरि खील सुहाग
गुड़ में सान लेय सेर चार प्रात सांझ दीजै फल चार ॥
जाय वंद नहिं दीजिये मोटो देखत होय
खाल होत यह भावही वढै पराक्रम सोय

दूसरी विधि

हल्दी सेर आठ ले आवै ॥ सुरभी क्षीर ताहि भिजवावै
सात दिना तक भीजो करै छांह सुखाय कूट कर धरै ॥
ताते घीउ नारि कर मलै ॥ वेर एक सोंठ फिर कलै ॥
सेर पांच मेदा जो लावै ॥ सव को मेदा एक करावै
खेत खांड को हलुवा करै दूध डारि कर छूल सों चलै
पाव सेर नित दीजिये घोड़े को उठि प्रात
चेतन चंद विचार करि मोटा हुइहै गात

सरदी गरमी शांति कारी औषधि

सम्मुल खार संखिया लावै खील सुहागा को करवावै
वहरि अफीम एलुआ धरै ॥ तासों चार चार सव करै ॥

ले दश माशा साँझौ भोर । तासो अश्व होय बहु मोर
काले तिल के साथ सब गुटका दीजै टंक
दीजै प्रात सो एक ही रोग राव अरु रंक

औषधि ज़हर बाद की

मिर्च कसौंदी अदरक पान चारो करो एक परमान ॥
ज़हर बाद विष वेल हि हरै कहे सो फूल होय मति चलै

दूसरी औषधि

राई मिर्च पीपले लेउ ॥ टंक २ भरि सम करि देउ
हींग सुहागा और अफ़ीम उन औषधि ने कीजो नीम
सोई भाग हींग को करो ॥ अक़र करा ताही सम धरो
सोंठ पीपला मूल मंगाई उड़क छाल जड़ सेजन लाई
तामे गोली कीजिये और के परमान ॥
सांझ भोर को दीजिये रोग न रहै निदान

चांदनी मारे का इलाज

राई मिर्च पीपले लेउ ॥ सम करि लहसन तामे देउ
पीपल मिर्च सोंठ अरु पान छाल सहजने को सम आन
कंजा मैन फल इक तर करो पैसा भर गोला अनुसरो
प्रात समय घोड़ा को दीजै रोग घटै घोड़ा को दीजै ॥
सिंह चर्म अजया को लावै घोड़ा को मुख ढांप बंधावै
औषधि कीजै जो कहै लाग न आवे कोय
दधि सुत रवि सुत को हनै वहरि न नो को होय

दूसरी विधि

लहसन हींग सुहागा आनि । कारा जीरो अरु अजवानि
पीपल मिर्च सोंठि भा रंगी ॥ सेंधो सोचर साजो संगी ॥
सींग जलाय राख करि लेउ । तब औषधि के माही देउ
मूल जवासा और अतीसा । पान खटाई और अतीसा
विष षपरा अरु अदरक पान । गोली कर और परमान ॥
भूंजे आटा माहीं देय ॥ दोय पहर बंद करि देय ॥
पानी अधिक तप्त कर वावे । शीतल करिके ताहि पियावे

अथ अधूरा

आक धतूरो सेहुंड जारि । अजवाइन हल्दी लेउ डारि
और राख में दीजै सानि ॥ अंग अश्व के मले निदान
जागहि बंद बांधि तेहि राखे । मरहि मंत्र खेद जो भाखे

मंत्र विधि

चंडी चंडी नूपर चंडी । आवत चोट करै नव खंडी । हय राख हय राख । छूनो वंडा राख ॥ दुहाई हनुमन्त वीर अगस्त मुनि की फट् फट् स्वाहा ॥ चौपाई
पाव अनार तीन ले दीजे । होय आरवल तो नहि छीजै

सर्व रोग हरण सम्मुल गुटिका

हींगलु सम्मल खार मंगाई । टका टका भरि वज़न कराई
गूगल आदो लौंग सुहागा । पैसा पैसा भरि प्रति भागा
पीपल मिर्च मिला सम करै । अदरक पान के अर्क में घरै

खरल करै दिन तीन बनाई गुटिका चना प्रमान कराई ॥
गोली दीजै अश्व को भूंजे आंटे माहिं ॥
रोग हरै बहु बल करै मिटै ज़हर जो छांह ।

अथ जो घोड़ा जकड़ि गयो होय ताको औषधि ॥
प्रथम छुहारे खाली करै ॥ फिर अफ़ीम ताही में धरै ॥
करि कपरौटी भूंजै ताहि ॥ आधो नित्य खवावै वाहि ॥
अश्व अंग खुलि जाय तुरंत दाना मति दीजो बुध वन्त ॥
पानी प्यावै तप्त सो रोज ॥ मिटै रोग रहहिं नहि खोज

दूसरी विधि

सज्जी साम्हर तोड़ी पोस्त ॥ सालिम गुड़ सावन दे दोस्त
टका टका भरि औषधि लेउ पाव सेर गुड़ तामहि देउ ॥
आंटा भूंजि के देउ मिलाय सांझ प्रात अश्व जो खाय ॥
अंग अंग खुलि नीको होय दाना देउ न सातै दोय ॥

तीसरी विधि

साम्हर लहसन टंक पचीस गोली करि दीजै दिन बीस
दाना मेटि मसाला देउ ॥ पानी तप्त नित्य करि लेउ ॥
आधी प्यास पियावै पानी ॥ देइ मसाला यह सुन ज्ञानी
हल्दी सालिम गुड़ सब लेइ प्रात समै घोड़ा को देय ॥
सांझ समय यह गोली देउ घड़ी चार का कज्जा करेउ ॥
नीको होय न लागे वार औषधि साल होत्र अनुसार

छाती बंध का इलाज

गूगुल टका एक भरि लेय ॥ हींग सुहागा खोल करेय।
अजवायन सों चर मिलवाय घोड़ा को दे प्रात खवाय
हींग सुहागा मासे बीस ॥ औषधि वज़न बराबर पीस
दाना मेटि मसाला देउ ॥ सात दिवस में नीके लेउ

नारूने का इलाज

मिर्च दकिवनी को लैलेउ ॥ भांग सुहागा ताम हि देउ।
सेंधो नोन फिट करी खोल। गूगुल वज़न बराबर लोन
कटुक तेल महं खोल कराई नारूने पर देउ लगाई।
रोग मिटहि अरु नीको होय चेतनचंद कहत है सोय

मास वृद्धि की औषधि

अजय पाल अरु हरिया थोथा सम्मल खार सज्जी अरु मोथा
नीम पात की टिकिया करै ॥ कडुवे तेल मध्य सों चरैं ॥
टिकिया काढि औषध हि ताय नीचे खल सों खरल कराय
लेपन करै खोलि रंग देय ॥ हरै रोग नीको करि देय ॥

बादी खाये का इलाज

काला जीरा औ गेरू लेय ॥ सोठ कत्तूर हिं ताम हि देय
गोबर के रस खरल कराई। छीर सों मथिके अग्नि लगाई
हरै रोग नीको ह्वै जाई ॥ यामें कछु संशय नहिं लाई
गरम होय जब लेपन करै बादी रोग अश्व को हरै ॥

दूसरी विधि

टांक सुमन औटाय के नित प्रति बांधे जोय

शालहोत्र इमि औरौ वैजा रोग न होय

खारिश की औषधि

वत्सो गंधक मैन सिल आन वायविडंग चीते ले जानि
कूट पीसि के छकनट लीजे पानी में सब निशाधर दीजे ॥
प्रातमध्ये ले कड़वे तेल ॥ घोड़ि के अंग मर्दन मेल ॥
घटिका तीन घाम मे राखे। मट्टी मलि धोवे हरि साखे
रोगन मे जो धोय खवावे ॥ फेरि खारिस्त होन नहिं पावै

अग्नि वायु का इलाज ॥

लीनो घिरत सेर नित लेय ता पाछे औषधि करि लेय
अरुणा मिर्च पैसा भरि लेय मधु माखी ले मांटी देय ॥
माटी पैसा भरि सुलतानी ॥ तेल डारि कड़वे में सानी
अंग अंग घोड़ा को मले ॥ पीछे अंग बहुरि यह करले ॥
उड़द अक्षय नीर मथि धरै सो लेपन पुनि अंग पर करै
अहि कालि की कांचलि लावै मासे चार कनक मिलवावै
रोटी करके घृत में सानि ॥ घोड़हि देउ प्रात ही आनि

दूसरी विधि

फूला हार सेर दश लेय ॥ खंड खंड करि दूध मे देय ॥
सात दिवस घूरे में राखे ॥ दिवस आठवें बाहर राखे
सेर २ घोड़ा को दीजे ॥ ता पाछे औषधि यह कीजै
महिषी सुत को सींग जरावै छाछ भेड़ की में मथवावै
टंक तीन मैन सिल लेउ ॥ करि मैदा नाकिय में देउ ॥

घाम तेल में मध्य बनाई। घड़ी एक या में मध्य वाई
पीत मटि का में अनुवाई अग्नि वायु को सोध मिटाई
या विधि से जो नित प्रति करै अग्नि वायु घोड़ा को हरै॥
वाई ले कर ताल की जोका आंट देय
सात दिवस के देत ही घोड़ा नीके होय

ग्राह्मनी रोग का इलाज

पट सन जारि आंव सा करै सांभर तीन टंक तहं धरै
दोऊ सोरा मथि लग वावै। चार घड़ी पीछे अन्ह रावै
सन की राख जो आंख भरावै सांभर सहित देह लगवावै
सात दिवस करै जो कोई॥ केस बढ़ै ग्राह्मनी को खोई

वरसायत की औषधि

वरसायती मोम सों मले॥ मलत२ लोहू जब चलै
कटुक तेल ले आगे धरै॥ तामें और मोम को करै॥
अंजक की दारू जो ल्यावै॥ सेंधे सहित वाहि मिलवावै
मल्हम करै हरै वरसायत सात दिवस लागहि दिन राति
दिवस सात में नीको होय वरसाती को डारै खोय

विष वेलि का इलाज

प्रथम मिलाये की विधि लेउ एक२ वढि सौ तक देउ॥
सौते उतरि एक जब आवै जब या मल्हम को बंधवावै
पात बबूल नीम को लीजै। मेढा सींग सहित भुज कीजै
मुरदा संग सुहागा लावै॥ छेरी छीर खरल करवावै

बर पापरी सेंदुर सानै ॥ कड़वे तेल मोम को आनै

पहले लोहा लीजिये चार बंद को खोल
पीछे औषधि को करौ या विधसे सब तोल

सब को खरल करै धर ध्यान मल्हम कीजै या विधि ज्ञान
अस्थ अंग पर ताकूं धरै ॥ निश्चय जान बेल को हरै ॥

हड़ा जानवा का इलाज

जोजानै यह रोग है चारो बंद देय दाग ॥
औषधि कीजे तुर्त यह चेतन चांद सो लाग

मानस की खुपड़ी को लावै तप्त अग्नि सों ताहि जरावै ॥
महिषी मेढा सींग हि जौरै जो औषधि सम नामहि डौ
त्रिफला त्रिकुटा साजी राई जारि सुहागा खील कराई
कालि म्बर और कारा जीरो अजवाइन हल्दी अरु पी
गुड़ सों गोली या विधि करै टंक टंक सब केशनि धरै
उलहत रोग सारो ऋतु करै सकल रोग घोड़ा के हरै ॥

घोड़े के पेशाब बंद का इलाज

प्रथम सेर पानी को करै ॥ जाको अमिलो में अनु सै
घर गड़रिया के लै जाय ॥ तुरत देहि पेशाब हि डा

दूसरी विधि

खीरा ककड़ी बीज मंगाई पीस नीर में देय पिराई
घर गड़रिया के लै जाय ॥ घूंसत वाउ तुरत खुल न

तीसरी विधि

दोऊ करन सो मिर्च पीसि। डाले संग नोन दुइ बीस
ता पीछे बाती कर लीजे ॥ नारि मध्य घोड़ा को दीजे
मिर्च दक्खिनी सांभर नोन गर घोड़ा को विष्टा तीन ॥
बाती कर के देय चलाय ॥ छूटे मूत्र रोग मिटि जाय

इलाज लीद बंद पेशाब बात हरण का ॥

कारी जीरी मिर्च मंगावै ॥ खील सुहागे की कर वावै
सज्जी कुटकी राई लेय ॥ हींग टका भरि नामि देय ॥
अज वायन संग भाग कराई अदरक रस में गोली बंधाई
एक छटांक अश्व जो खाय बाई रोग गुल्म मिट जाय।

सोंठि घीउ संग सानि के गुदा मध्य दे फोरि
लीद करै घड़ी एक में अधिक न होवै वारि

घोड़े के जुल्लाब की विधि

कड़वा नोन और सोंठ का एक संग औटाय
काढ़ा दीजे भाग सम उदर व्याधि बहि जाय

जुल्लाब विधि

राई खारी दही सम सेर अर्ध जो देय ॥
व्याधि उदर की गिर पड़े सकल दोष हर लेय

अथ इलाज

अश्व प्रमेह महा कठिन जो नित वले हैरे
ताकी औषधि कहत हौं नीको विस्तु करै

अथ औषधि

नाग बेलि को जड़ को लावै कदली जर सम भार करावै
तवा खीर सुरमा अरु चीनी मिंगी बिनौरे सम करि लीनी
गाय दूध द्वै सेर मंगावै ॥ सात दिना दीजै तेहि खावै
नासै रोग पुष्ट बहु होई औषधि करै जो या विध कोई
बैठहिं उठहिं लोटि लै जाई मुख बोलै अरु वासन खाई
शूल क्षुधा हति ताको नाम औषधि करो होय आराम
छाली मकरा और पलास बीज करंजन हींग जवास ॥
सेंधो सम करि देय मिलाय गोघृत संग देय पिलवाय
शूल मिटै दोये दिन दोय नासै रोग भूख बहु होय

अथ वायु शूल का लक्षण

गिरै धरनि पर दम करै आंखि मूंदि रहि जाय
वायु शूल वासो कहै ता को यही उपाय ॥

खुरासान वच कूटि मंगावै दंति छालि सों संधो आवै
हींग सुहागा सम करि लेउ पाषाण भेद लै ताम हि देउ
सकल कूटि कर मैदा कीजै माषन सानि अश्व को दीजै
तेहि नीको होय बनाय सकल व्याधि वाको बहि जाय

अथ प्रदृति शूल लक्षण ॥ +

शूल प्रदृति वखा निये ताको यह उपचार
हीं सें तांकहि भूक अति बोलै वारम्बार

५ लाज

वाय विडंग हींग सम लेउ नवदा राख जराय के देउ ॥

बच अरु सोंठ सुहागा लीजे नीर देह के शान सों कीजे॥
नी को होय व्याधि बहिजाय यो यातिधि सों करो उपाय।

अथ शिलह वत शूल लक्षण ॥

सूंघे छाती अश्वको जो गिर हि धरनि बहुवार
शूल तासु पहिचानिये कीजे यह उपचार॥

हींग सोंठि सेंधो सम लेउ। सिरका छानि दही में देउ॥
ताती नीर शूल लखि दीजे यह विचार पूरण सुनि लीजै
लंघन करै हानि नहि होय दाना दिये हानि अति होय

अथ भ्रम शूल लक्षण

भूखे घटे अरु लटे अति अरु चित पै चहुं ओर
भ्रम शूल तासों कहै वाहि न दीजे खोर

अथ औषधि

हल्दी हींगुल दे वैसाखी॥ सोंठि सुहागा खोल सो भाखी
वजन समान पीस के देउ हींग सुहागा थोड़ा लेउ।
भूखे बढ़े अरु शूल भ्रमनाशे बल वीरज बहुत हो प्रकाशै

अथ ऊई शूल लक्षण ॥

मुखे घोड़ा को पानी भरे॥ अधिक पसीना बहु विधके
लोटे नहिं बैठे नहिं भूमि नयन मूंदि रहे झूमि झूमि
ताकी यह औषधि जो करै अष्ट दश शूलन को हरे॥

औषधि

पीपल पिपला मूल बीज कसौंदी मिर्च ले॥

सोंठि वेतरा मूल गो क्षीर सों दीजिये ॥
रोग नसै जो दीजहि प्रात मूख बढ़ै मोटो होय गात
दाने का तेहि नाम न लेई तप्त नीर सोंऐ करि देई ॥

घोड़े के सुम वा ऐड़ी फटने की दवा

राल मोम गुड़ गूगुल लेइ लोध लोस सेंधा सम देहू ॥
पीपल गऊ का घी मंगवावे सब को मैदा पीसि करावै ॥
काले तिल को तेल ले सब को एक तर थ्यान
आंच अनल सों तप्त करि सुम में भरे निदान
कपड़े सों पग बांधिये ऊपर देय के पात ॥
नीको होय जु सुम्म यह मानहु सांची बात

बिवाई की विधि

वाय पित्त कफ की अधिकाई जो घोड़े के उठै बिवाई ॥
ताही दिन तुम औषधि करो जो कछु साल होत्र मति चौ

पित्त विकार की दवा

लक्षण अरुण नेत्र घी की बजे टापै पानी होइ
पित्त विकार सों जानिये औषधि कीजे सोइ

औषधि

मोथा पीपल और गिलोय मिर्च लौंग जाय फल दोय
अदरक पान सोंठि सम लेय सात दिवस यह औषधि देय
नीको होय व्याधि को हरै साल होत्र यह मति उच्चरै ॥
जो सत कार को दाना दीजै सात दिवस महं नीको लीजै

कफ़ाज्वर की औषधि

लक्षण· भारी माथो होइ अति नैन चुवै बहुनीर
पीरी कफ या कर वदन होइ ताहि कर पीर
खैर सार और गऊ का घोउ अग्नि पांच सों तप्त करेउ ॥
हाथ पाउं घोड़ा के मले ॥ ता पीछे याह औषधि करै ॥
औषधि सोंठि कटाई रंग ॥ पीपल मूल कटाई संग ॥
सोचर सेंधो हींग मिलाय औषधि वज़न बराबर लाय
हींग सुहागा मासे चार ॥ भूंजि अग्नि में दीजे डार ॥
टंक तीन भरि दीजे रोज। मेटै अंग रोग को खोज ॥

काढ़े की दूसरी विधि

दन्ती जर भारंगी आन ॥ नागर मोथा कुट को मान ॥
नीव छाल असंग देवदार चीता मिर्च लेउ पुनि ग्वार ॥
अष्ट विशेषी काढ़ा करो। सहत टंक भरि तामहि भरो
सात दिवस देवै नित वाय रोग हरै काढ़ा देय प्याय ॥

श्लेष्मा ज्वर के लक्षण और औषधि

तप्त शरीर अश्व को होय, आमा सोज सुन दृग होय।
कफ़ . डारै मुख ते अधिक कांखै वदन खाय नहिं घास
पीपल सेंधो घोउ मिलाय नास देय घोड़ा को आय ॥
ता पीछे यह काढ़ा करै ॥ अश्व अंग की पीड़ा हरै ॥
वाय विडंग अंड जड़ लावै सोंठ कचूर अरु गुड्ह मिलावै
अष्ट व शेषी काढ़ा करै ॥ सात दिवस में रोग हि हरै ॥

सन्निपातज्वरलक्षण

तन स्तोर श्रम्ब को होय हौसै टापै कुड़के सोय ॥
स्याम मच ढै चलै तेहि अंग सन्नि दोष ज्वर ताके संग

औषधि

वाय विडंग ज्वार और पोस्त जड़ अरंड कारे को दोस्त ॥
अष्टा व शेष देइ ताहि काढ़ो सन्नि पात ज्वर नासे काढ़ौ
गुल्म अग्नि वाके जो परै ॥ ता पीछे एक औषधि हरै ॥
सोंठ पीपरा मूल मंगावै ॥ सहत षाय गुड़ संग खवावै
कज़ान वरा वर घोड़हि देय गुल्म व्याधि वाकी हरि लेय
वही वात ज्वर को अनुसरै या सन्नि ज्वर की औषधि कै

दूसरी औषधि

मोर पालका अरु अंजीर खांड सहित मिश्री अरु षी
कज़ान वरा वर सब कुछ लेउ गाय दूध में घोड़हि देउ ॥
नासै रोग व्याधि सब हरै साल होत्र या विधि अनु सै

मस्तक के सूल का लक्षण और औषधि

सोरठा लक्षण त्रिविधि विकार वात पित्त कफ जा हु
लिये साल होत्र अनुसार औषधि कीजे देषि
जो सीतल घोड़ा को पिवाई रुधिर चलै नकुअन में आई
पित्त दोष पहिचानो ताहि। औषधि कीजे या विधि आ
आस और उसीर मंगाई। लेपन माथे पै जो कराई
नास देय त्रिफला के नीर मेटि लेइ या विधि जो पी

मस्तक के शूल का लक्षण और औषधि

भौंहन पर जो होय अमास देउ कटाई को तेहि नास
फेरो कफ़ पानी सों भरे ॥ जो या विधि से औषधि करै
सोंठि सुहागा साचर नोन ॥ मिर्च पीपलै ता महि देउ
वज़न बराबर दीजे वाहि ॥ नासै रोग शूल दहि जाहि

वात कृत मस्तक शूल के लक्षण और औषधि

भारी सिर और होय अमास देउ कटाई को तेहि नास ॥
ता पाछे यह औषध करै ॥ तौ घोड़ा को वेदन हरै ॥
कुट को बाय विडंग कचूर ॥ सोंठि सुहागा पीपल मूर
वज़न बराबर मैदा लेय ॥ भूजहि आंटा सब करि देय
प्रात सांझ घोड़ा को देय ॥ सकल व्याधि वाको हर लेय

मुख रोग लक्षण

मुखते खाई जायन घास ॥ लेपन करै पकै मुख जास
कफ गिरै मुख ते बहु जाके स्याम रंग मुख माहीं वाके

औषधि

ककरौंधा ताही को रंग ॥ सांभरि सेंधो मिर्च संग
छाल फेरि मलै दोउ जोड़ नीको होय तुरत ही घोड़
तालू मध्य दंत जो होय ॥ काम नाम भावै सब कोय
वाहि निमित्त यह औषध कीजै घोड़ा घास खात नहिं छीजै
कै हल्दी मिर्चै अरु नोंन ॥ कै घृत गाय सहित सम दीन
तुरी दंत मिलि दीजे ताहि तत्क्षण नीको लीजे वाहि

जो मुह सजै सब घोड़ा को होत विकार नात जोरा को

दूसरी औषधि

जवा खार अजवायन राई। सरसों सौंफ़ हरद मिलवाई

लहसन मिलै वजन समकरै जल सों पीसि अग्नि पै धरै॥

गरम सीस मुष देउ चढाई से को नित्य रोग वहि जाई

अथ कर्ण रोग

श्रोणित चुवै श्रवण जो जाके वे आमास होई ज्वर ताके।

कार हि सिर और कांपै अंग। ताहि जानिये वाय प्रसंग॥

ताको औषधि देय निदान तिल हल्दी सो सें कै कान

लहसन हल्दी हींग मिलाय आक पत्र मांझे धर वाय॥

कपरौटी करि दीजे आग॥ काची रहै जरै नहिं आग॥

ताहि कूटि करि अर्क निकार घाउ सहित दीजे मथि डार

सानि सानि कानन में भरै। निश्चय पीर अग्नि को हरै।

दूसरी औषधि

जो आमास होइ अधिकार तौ दाल मलर सों निकार॥

सेंधो कांची संचर आनि॥ सो लीजे पानी में सानि॥

ता को पानी कानो मे भरै सेक करै पीड़ा को हरै॥

नेत्र रोग हरण औषधि

औषधि नाखुना की होय नीको होय करै जो कोय

हल्दी सोंठ सहित घृत सान बांधे ऊपर नेतहि आन॥

सीत वात ते देय उतारि॥ नीको नेत्र होइ वहै नहि बा

नेत्र ढरका को औषधि

सरसों पीली मूल अरंड ॥ गोली बांधि करो जिमि लंड
ता को अर्क खींचि सम लेय ता मदिरा औषधि सम देय
हार बेर अरु खार मिलाय कनेर फूल सहित पिस वाय
सब को एक करि अर्क निकारै सांझ भोर दृग छींटा मारै ॥
नी को होय वायदे बन्द ॥ साल होत्र कहै चेतन चंद

दूसरी औषधि

चंदन सौंफ़ तगर को लावै बकरा को पेशाब मिलावै ॥
रस इन को जब लेइ निकार तामे घोड़ बसन में डार ॥
भरे नेत्र में रोग न साय ॥ घोड़ा नी को होइ बनाय

फुल्ली हरण औषधि

सोना माखी बन्द न कीजे लेप फिट कड़ी ता सम दीजे
सिरस बीज अरु चीनी लाय मिर्च कचूर देय मिल वाय
मैदा करि अंजन दृग भरे । सात दिवस फुल्ला को करे

दूसरी औषधि

रस अंजन रत अंजन लाय विष षपरा को रंग मिलाय
मधु सो पीस नयन में भरे ॥ सात दिवस फुल्ला को करे

घोड़े की आंखों की सफ़ेदी का इ०

पीपल सेंधो सहत मिलाय विष खपरा को रंग मिलाय
दे करि मूंदि नयन दे ताहि नीको नेत्र तुरत है जाहि।

दूसरी औषधि

सावन मिर्च मिलाय कर लौंद रग सो सान
घोड़ा के अंजन करो मिटै रतौं धो खान

घोड़ा के सर्व रोग हरण विधि

घोड़ा में जो होत है सब रे रोग विचारि ॥ ॥
तिन की औषधि कहत हों साल होत्र निरधारि
भाषत चेतन चंद साल होत्र को निर विवेक
सुख पावहिं मम हंद कुशल सिंह महाराज प्रभु
घोड़ा की छाती होय भारी लहि नहिं दीजे अवटारी
हफ़ दाम खोल को तास करै सकल रोग न को नास
जो छाती ते लोहू लीजै ॥ तौ विचार या विधि सों कीजै
प्रथम घड़ी यह राह चलावै ता पीछे रग चोर खुलावै
गरम मसाला दीजे ताहि ॥ क्रम सों दाना दीजै वाहि
उष्ण नीर अचवन को दीजे छाती खुलै जो मन यह लीजै

मसाला

हालम हल्दी सोंठ सुहागा सोंचर सारन साजो चागा
गुड़ सों मिले वज़न सम लेप छाती खुले मान यह लेप
टंक सुहागा तामहि दीजे। वेल गिरी की औषध कीजे

द्वितीय मसाला विधि

गूगल पैसा दोय भरि गो मूत्र सों देय ॥
जकड़ो अश्व खुल जात है या सांचो सुनि लेउ
सांभर लहसन भाग करि दीजे नित्य खवाय

जकड़ी नो को होत है पै लंघन करवाय
तप्त नीर नित दीजिये दाना देहि बताय
यह औषधि को नेम है लीजे चित्त बसाय

वात शूल का इलाज

दो· भूमि गिरै अरु दम करै फिर फिर उठै मरोर
ताको यह औषधि करौ भगै रोग को जोर
त्रिकुटा हींग और कायफल खंड बराबर लेउ
गंधी मासे चार सो मदिरा के संग देउ ॥ ५

सोरठा· कर बांधे पर हेज़ दीने पानी वात सों ॥
औषधि है यह तेज गात देखि के दीजिये

दूसरी विधि

पीपल सोंठ जो रेणुका लांबी कूरी आन
औषधि है यह तेज लो मेहंदी में सान

तीसरी विधि

घोड़ा जो कंपै घनो होयं जो नयने लाल
ताको दीजे नास यह रोग नसै तत्काल
गो घृत ताको करै न दोष तेल सिवाय नास दै दोष ॥
नीको होय पीर नहिं करै ॥ साल होत्र या विधि उच्चरै

राक्षस शूल का लक्षण

घोड़ा व्याकुल अति ही होइ उठै गिरै बहु पल२ सोय ॥
हो से टापै दृग होय लाल। औषधि ताहि करै तत्काल ॥

औषधि

पवकी इमली को रस लेय सेंधोतेल तिलन को देय ॥
सिरसा को रस ता सम करै इकतार करै नारि महं भरै
तीन दिवस घोड़ा को देय। हृष्ट पुष्ट तेहि नी को लेउ।

मूत्र शूल का लक्षण और दवा

चोर रंग हलदी को करै ॥ मुख से लार अधिक तर गिरै
शील वदन हलावै शीस। बढ़ो शूल तौ विष्ठा बीस

औषधि

सेंधों पीसि नथन महं डालै मिर्चन सहित नास अनुसरै
टहलावै और कोषा मलै। या औषधि सों घोड़ा खुलै
गुड़ स्वाती ओस सम लीजै पीसि दूध में घोड़ा दीजै ॥
नीको होय ताक जो करै ॥ साल होत्र या विधि अनुसरै

शिको वर्त्त शूल का इलाज

कापूरा जो ज़र्द कराई ॥ निर्णय कर देवै जो पिवाई
हल्दी राई गुण सम लेय ॥ सिरका संग घोड़ा को देय
देतहि नीको होय बनाय तुरत व्याधि वाकी मिट जाय

मृत्यु शूल के लक्षण

दाना खाय न जल सों नेह नित प्रति लखे वाकी देह
हांफे भूमे गिर गिर पड़े ॥ ता की औषधि या विधि करै

औषधि

प्रथम बादाम एकते लेय। दसते आगे कम कर देय।

बहरि मलाई या विधि करै । जामे रोग अश्व को हरै ॥
हल्दी राई गुड सम लेय ॥ कूटि पीसि सिरका समदेय
तप्त नीर पीवन को दीजै । सप्त दिवस महं नीको लीजै
शीत लहै होय न एको गाढ़ो । ताको रोग निज हो बाढ़ै
मल वं नीने रंग को होय ॥ तेहि असाध्य लक्षणहै सोय
ताको औषधि नहि उपचार । सालहोत्र भाखे निरधार ।

सन्निपात शूल के लक्षण और औषधि ॥

कांपे उछले गिर गिर परै ॥ ताको औषधि या विध करै
अजवाइन वच राई लेय ॥ भूंजि फिटकरी नामहि देउ
सोंफ सुहागा हींग मंगाय । सिरका के संग देउ पिवाय
ता सिरका को डारै घीउ ॥ तातै सुस्त होइ नहिं जीउ
सप्त दिना जो औषधि करै । सत में शूल अश्व को हरै ॥

दूसरी विधि

सोरत ज्वर के शूल यह ताको औषधि एक
उपचारै लहै एक जो कष्ट न राखे एक

घोड़ा के अंग होय अमास । एरण लक्षण खाय न घास
उचके चौंकि धरनि पर गिरै । औषधि ताको या विधि करै
प्रथम सहजा हींग मिलाय । अंजवाय कंचन रिपु लाय
वाय विडंग सोंठि अरुसर सों । अधूण करि चहुंधा कर सों

दवा खिलाने की विधि

सोंठि अजवायन वाय विडंग । रजन बराबर एक मतंग

काढ़ौ अष्टविशेषौ देउ सात दिवस मह नौको लेउ
बरस बरस प्रति दीजिये गेहूं के रसवाय
रोगी अश्वन हेत है नौको यही उपाय
विना चराई लोह्न लेय ॥ जाय विदिवन जतन करेय
तो घोड़ा की ह्वैहै हानि ॥ साल होत्र कहि दीजे मानि

अथ लोहहरण विधि

लोह्न लीजे अश्व को जा को है विष वेल
जाय बिन्दु को पुष्ट है ता दिन दीजे भेल
जा घोड़ा को लोह कढै ॥ ताते बीस गुनो नित बढै ॥
लालच मोटे को मति करौ सेर सवैया लोह्न हरौ ॥
रोग न होय रहहि चालाक जो लोह्न लीजे ना पाक ॥
नर घोड़ा एक गति साल होत्र कहि भाष
ताके लक्षण भेद सब अंग २ प्रति भाष
नर नारी तेहि भोग संयोग ताके वाके बढ़ै न रोग ॥
ताके गुन लोह्न जो हरै ॥ घोड़ा बन्द रहै अरु चरै।
जो कस्वौ धामहि पहिचानै लोह्न लै इन राखौ ज्यानै
विन जाने छेदहि नस कोइ कल्म करौ करता के सोय
ख़श रंग शहर यवट रंगहोइ हफ़ते दामा जानिये सोय
ऐसी तेरहै धामहि जानि जो जाहो ताहो सों मानि
मारग को जेते गुन कहो ॥ कस्वौ लोह्न तैसे कह्यौ
नसनां रहै हनै तनै जोय जो डौरै रोगन को खोय

नर को जो पर हेज़ है हय को सोई जान
लोहू लीजै तास को होय न जी को ज्यान

घोड़े के अमास सोथ का इलाज

जो घोड़ा को सोथ पकड़ै ग्रीवा कंठ अरु तन जकड़ै ॥
ता को प्रथम करै उपचार सें को ग्वारि सों सेंधो डारि
ता पीछे यह सेंकन करै ॥ सकल व्याधि घोड़ा को हरै
अजवायन अज मोद ले हींग मोठि सब लेउ
कालो मिलय कर लेप तुर्त वहीं कर देउ ॥
सो० जब सोथा मिटि जाय सूधी गर्दन होय जब
कीजै यही उपाय रग छाती की खोलिये

खून बंद होने को औषधि

घोड़ा की नकसीर जो फूटै चहुं ओर में धारा छूटै ॥
के लोहू के पानी गिरै ॥ ता की औषधि या विधि करै
सौंफ़ धनिया जीरा मंगवाई सोंठि सहित दीजै पिसवाई
भाल अस्था को लेपन कीजै नास ताहि या विधि सों दीजै
संग ऊंट के लेंड़ा लीजै ॥ ता को अर्क छानि कर कीजै
तिन को गऊ घीउ मंगवाई दमड़ी भरि सेंधो मिलवाई
नास देय घोड़ा को जभी ॥ श्रोणित बंद होय गो तभी
सो० कुट कुट के तार तारि अग्नि सों धूप देय ॥
औषधि करहु विचार रोग हरण संशय नहीं

इति बन्द चौपाई

प्रथम सेक माथे पर करै हल्दी पानी सो अनुसरै
ता पीछे यह लेप कराय सोंठि सुहागा पीपल लाय
पीसि कूटि करि लेपन करै सकल रोग घोड़ा को हरै

पेशाब बन्द की औषधि

मूत्र रोग घोड़ा के होय ताको जतन करै सब कोय
पीपल सोंठि देहु पिसवाय नरा मध्य वाती चलवाय
रंचक नोन मिर्च पिसवाय दोउ करण घोड़ा के नाय।
छूटहिं मूत्र धार अधिकार मेटहिं वाके सकल विकार
देवे को यह नोन हैं मूली अमली पा
न को कोरे के वीज हैं याते होइ न हानि

लीद बंद का इलाज

राई मठा देहु पिस वाइ के कारी मर्थ मठा के लाय
दधि खारी सो देहि खवाय छूटै अस्थ रोग वहि जाय

दूसरी विधि

हींग टका भरि लाइकै सेर दोय लै घीउ
दोरा करिके दीजिये कहि घोड़ा सो पीउ

कृमिरोगहरणइलाज

जो घोड़ा के पेट मे कृमी वहुत ह्वै जायँ
गिरे पटेरे पेट सों दाना घास न खाय
राई हल्दी काय फल आन प्रात होत दीजै नित खान
तो को होय व्याधि सब हरै सालि होत्र या विधि उच्चरै ॥

प्रमेह का इलाज

त्रिफला दीजै खांड सों सात रोजउठिप्रात
मूत्र रोग नासन करै मिटै रोग उत्पात ॥

दूसरी विधि

गाल खांड द्वै सेर भरि घोड़हि देउ खवाय
वीर्य बन्द द्वै जायगो जो यह करै उपाय

अथ षट्ऋतु का उपचार

ऋतु वसंत और मांसए चैत्र और वैसाख
दाना दीजो चने का मन मिश्री अरु दाख
ग्रीष्म जेठ असाढ है महा अग्नि को मूल
सतुवा दीजै जवन को बनो रहै जो फूल
सावन भादों भेद नहि यह वर्षा ऋतु जा
न गेहूं को गजरा भलो घीउ खांड में सान
आश्विन कार्तिक सर्द ऋतु मोठ मूंग अधिकात
काचो दाना दीजिये हल्दी गुड़ नित प्रात।
मार्ग पूष हेमंत है घीउ महेला आन ॥
मिर्च साथ सो दीजिये होय अश्व बलवान
शिशिर माघ फागुन कहे दाना दीजै मोठ
गुड़ के साथ खवाइये मिर्च पीपली सोंठ
त्रिफला दीजै खांड जो ग्रीषम और वसंत
त्रिकुटा दीजै गुड़ सहित शरद और हेमंत

हल्दी वर्षा शिशिर मे घोड़हि दीजै नित्त
नित्त नेवाला दीजिये रोग न करै निवृत्त
मुरग़ा परहि वाली करै जो घोड़ा को देय
वात बचावै अंग को सकल रोग हरि लेय

अथ वैजा मोत्त रा नासन विधि ॥ ॥

तारा माखी लाय करि सोना माखी साथ
नींबू का रस खरल करि मल्हम कीजै तात
पछना दै लेपन करै बांध चना तेहि देहिं
अजा मूत्र सों भिजै कर तत्छिन नीको लेह
सप्त दिवस पीछे खुलै भीजत रहै हमेश
ता पीछे जब खोलिये औषधि कीजै वेश

अथ इलाज

डरपी सेंधी गोघृत मल्हम सो करि लेय
माखी चाय चवाय करि चापरि तेहि देय

अथ सिंगरफ़ गुटिका

कर्ष एक सुमंल सों लेउ खरल करवाय
देउ टंक भरि सवै लै औषधि दीजै ढार
सिंगरफ़ मिर्च सुहागा लीजै गूगुल मिर्च ताहि में दीजै ॥
अदरक रस में खरल कराय गोली चना प्रमाण धराइ ॥
सर्व रोग को दीजै कह्यो ॥ साल होत्र गति मति में लह्यो

दूसरी विधि

अमलो और कचनार को नोम पत्र सम वाय
सिरका में औटाय सब तापर देउ चढाय
उलहत बांधे सात दिन वहुरि न वेजा होय
नित नेवाला दीजिये जो पहिचानै कोय
टेसू सुमन उसेय करि नित्त चढावै जोय
उलहत ही विधि करै वाद बढै नहि रोग

घोड़ा को रंग पल्टो चाहे ॥ कै चाहे कै चीन्हन आहे ॥
वाल सफेद करै या रीती ॥ जो पावै मन महं परतीती
प्रथम वाल वे दूर करावे ॥ तापर सावुन घिसघिस लावे
कूष मंडरस धोवै ताहि वहुरि फटकरी देवै जाहि
खरल करै सावन रस माहं मल्हम करि राखे तेहि छांहं
लेपन कीजे फिरि २ ताहि या विधि सो भावे नित वाहि
एक मास में होय सफेद ॥ विरले जाने ताको भेद ॥

अथ सांप काटे की विधि

दाना घास दुहूं पर हेरै ॥ लोद करै खुल कै वह चेरै

उपाय

गरुड़ मंत्र पढवाय के निर्विस कीजे ता-
हि औषधि ताको सात दिन दीजै तायं मंगाय

औषधि

काना दरी अर्क जड़ मिर्चें सम लेलेय
संग नीर में पीस के प्रात सांझ नित देय

हय नर को जो दीजिये लीजै तुरत जिवाय
पुनि जो कीजे यथावत विष विष धर वहिजाय
अश्व मपाला को जो खाय ग्राम मध्य जो रहै छुपाय
ताके लक्षण कहौं बषान जो नर को आवे पहिचान
वारि वदल मुख ते अति छूटै ग्रीवा सूजि अंग तेहि फूटै
बिछुआ टंक सो पांच ले दीजे मिरचैं घीउ
घर घीउ में वाटिकै घोड़हि देय पिवाय
ता पीछे यह औषधि करै ॥ तुरत व्याध घोड़ा की हरै
चौराई जड़ अंड मिलाय ॥ आक मूल तामस ले जाय
मिर्च कसौंदी अदरक पान सब को करहु एक पर मान
संग घीउ के देउ खवाय ॥ विष धर को विष निश्चै जाय
घोड़े की सुजुम्मा फुल्ली काटने का उपाय ॥ ५
अर्क दूध फिटकरी सो या विधि आनिये
वहरि दूध मिलवाय कनक में सानिये
आनि अग्नि में धरहिं जलावै तासु को
सुरमा करि दृग देय नाश सवरे रोग को
अथ दूसरी विधि
मानस की खुपड़ी तनक अग्नि मध्य लै वार
खोल फिटकरी मिले कर सुरमा करैविचार
दूध खोल के डालिये सात दिवस लौ नित
फुल्लो सु जुम्मा काटिहै सांचो मानो मित्र

खालदार घोड़े
का स्वरूप जिस
घोड़े पर स्याह ख़
त हो उस को वह
त बुरा जानो

कुतेकी जीभवाले घोड़े की सूरत

मलदांत घोड़ा
साहिनाल घोड़ा अच्छा नहीं होता

फलदार घोड़ा

सिकाल घोड़ा बुरा होता है

कीलकास्वरूप
गामचोकेपेटमेंकचो
का निशान
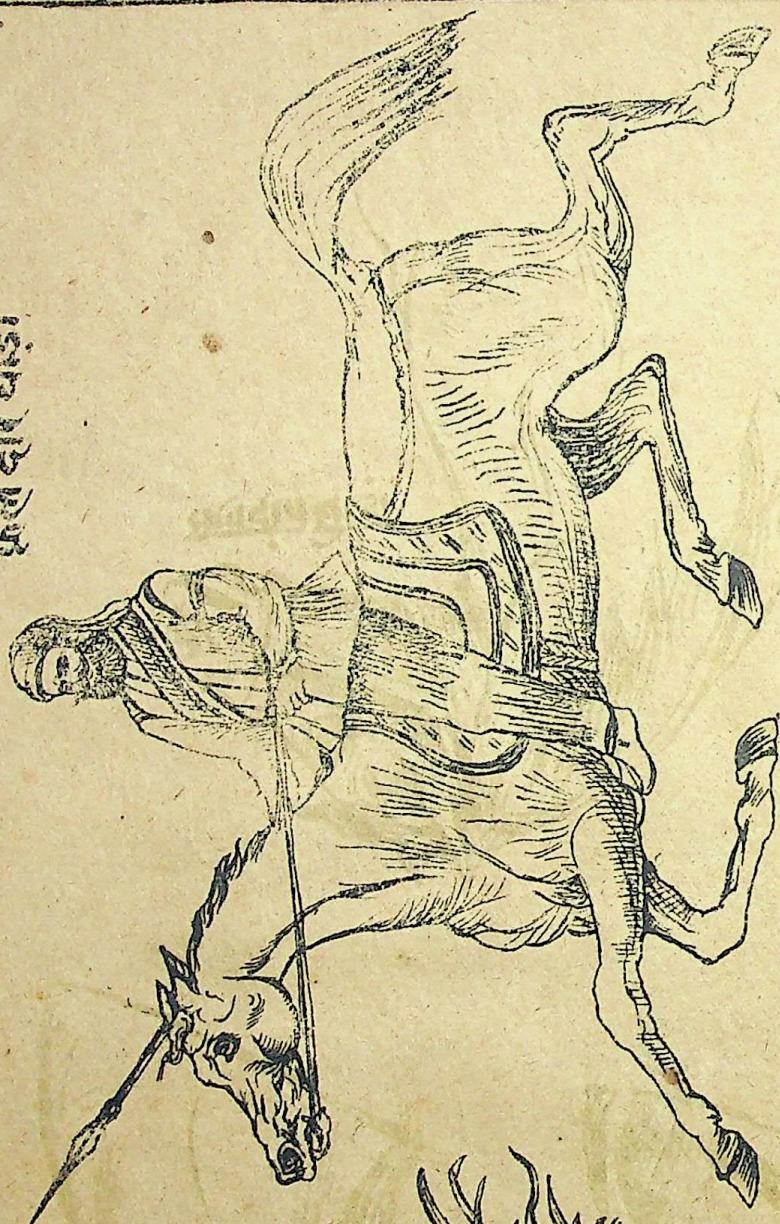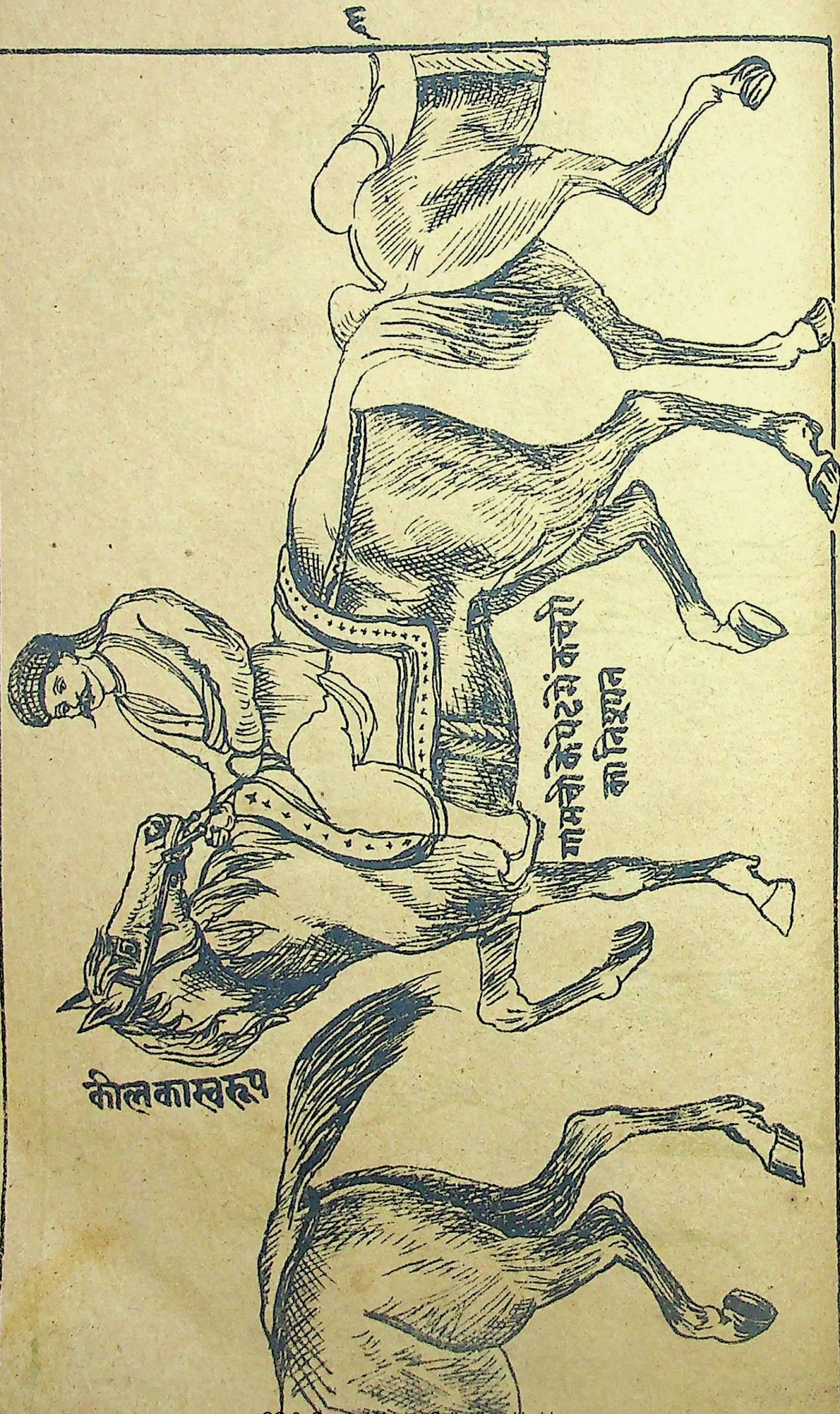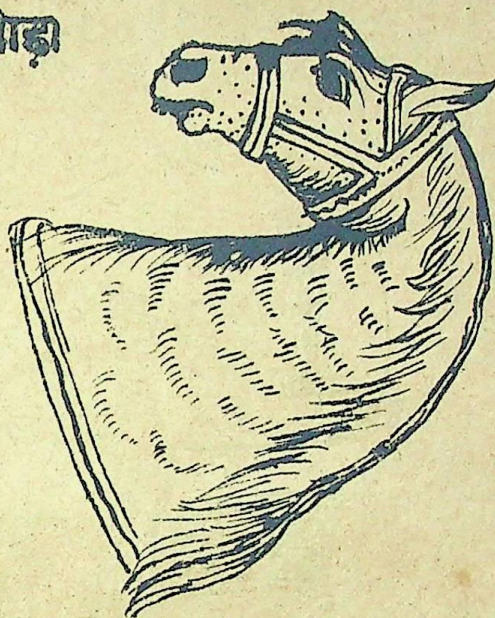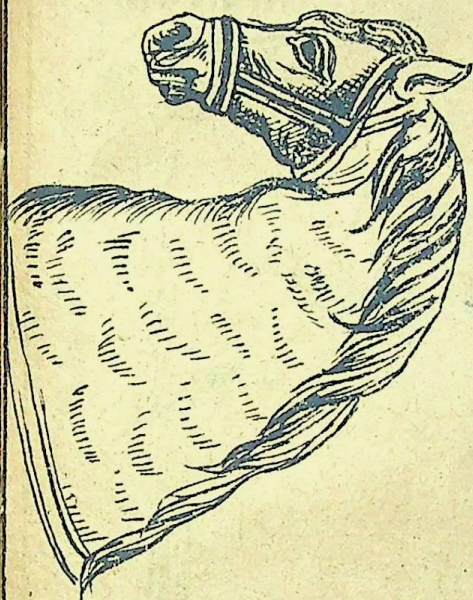
पोपले घोड़े
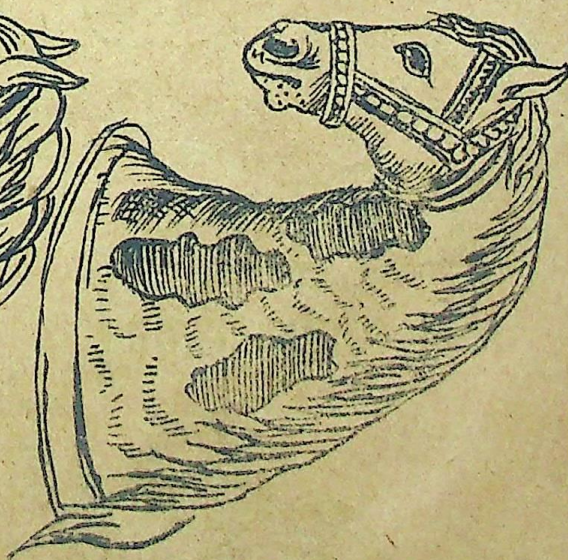
जो एक पैर की सफ़ेदी दूसरे पैर
की सफ़ेदी का जवाब न रखती हो
तो बुरा है और उस घोडे का ए
तबांर नहीं
अर्जुन घोड़ा बुरा है
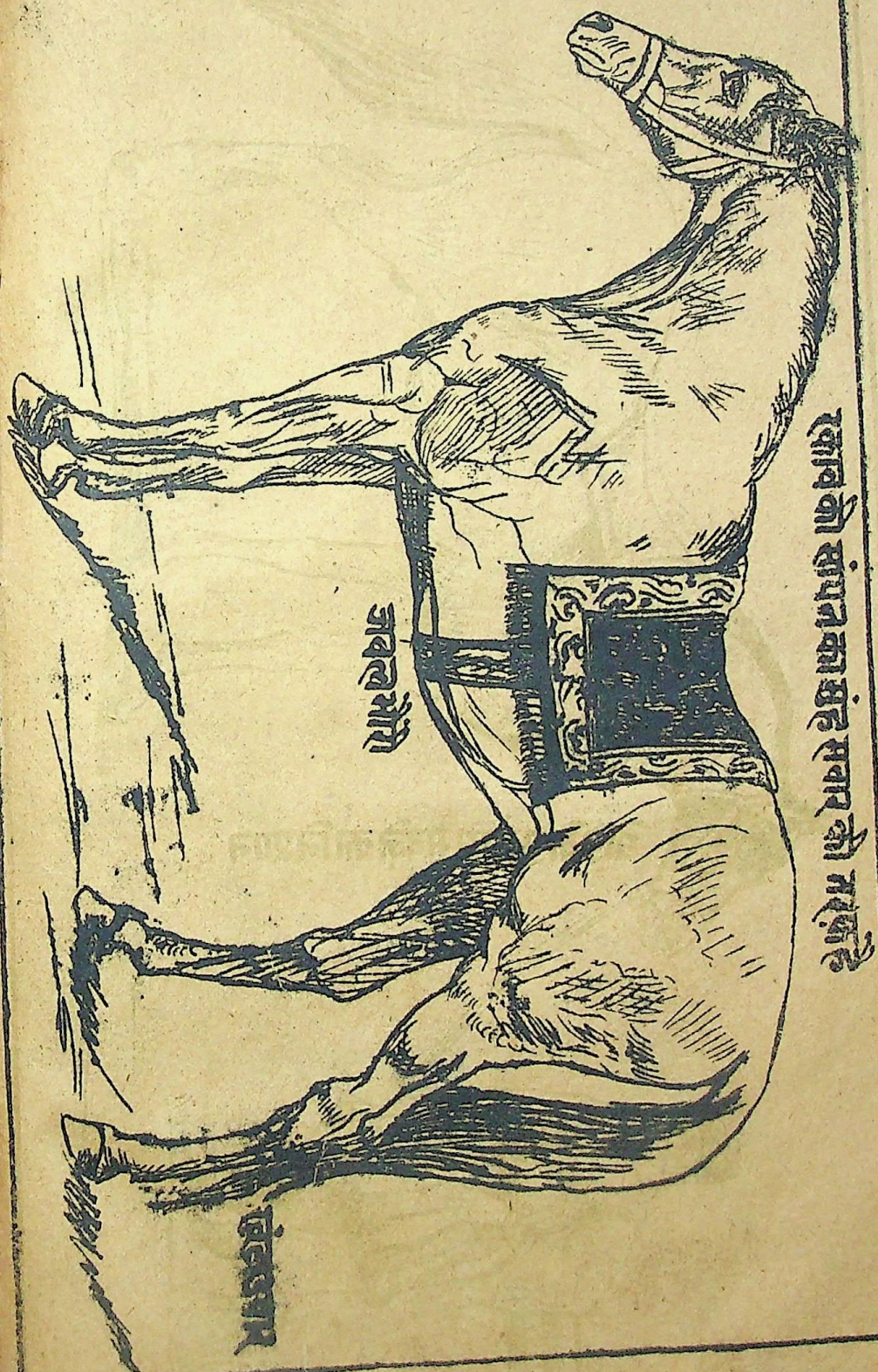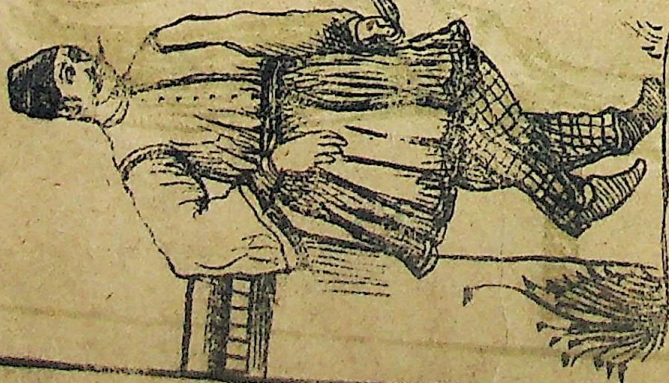
रकाब की सांपन का मुंह सवार की तरफ़ है
जवल भौंरो

घोड़े के मुहं पर सब्ज़े का निशान

देरमनी

सूत्रभंग

चरकीला

मेरे

जिस घोड़े के हाथ में फ़ल हैं कमबख़्त है

चपदस्त घोड़ा उस्ताद को बुरा होता है

अवलखभौंरी

बांसदार

चंद्रसूर्यकीभौंरी

अमलीया घोड़े का सफ़ेद हो उस को अर्जुन घोड़ा कहते हैं ॥

शानदार घोड़े की पहिचान

कानेघोड़े

गीनवाननाले घोड़े

ज़रदेकास्वरूप

यहभीमुतल्लयकुमहै

पदम घोड़े की सवा का स्वरूप उस को ईरानी मुग़ल बुरा कहते हैं

तीन कान वाला घोड़ा

जिस घोड़े का शगना निकल आता है ख़राब है और ऐब है

इस तसवीर में सिवाय एक भौंरी देवमनि के बाक़ी सब नाक़िस हैं और बुरी है

गावदुमो घोड़ा

गुमल देकन घोड़े का स्वरूप

यह रंग असील है
मुश्को सूरत
ग्रर्वी का निशान
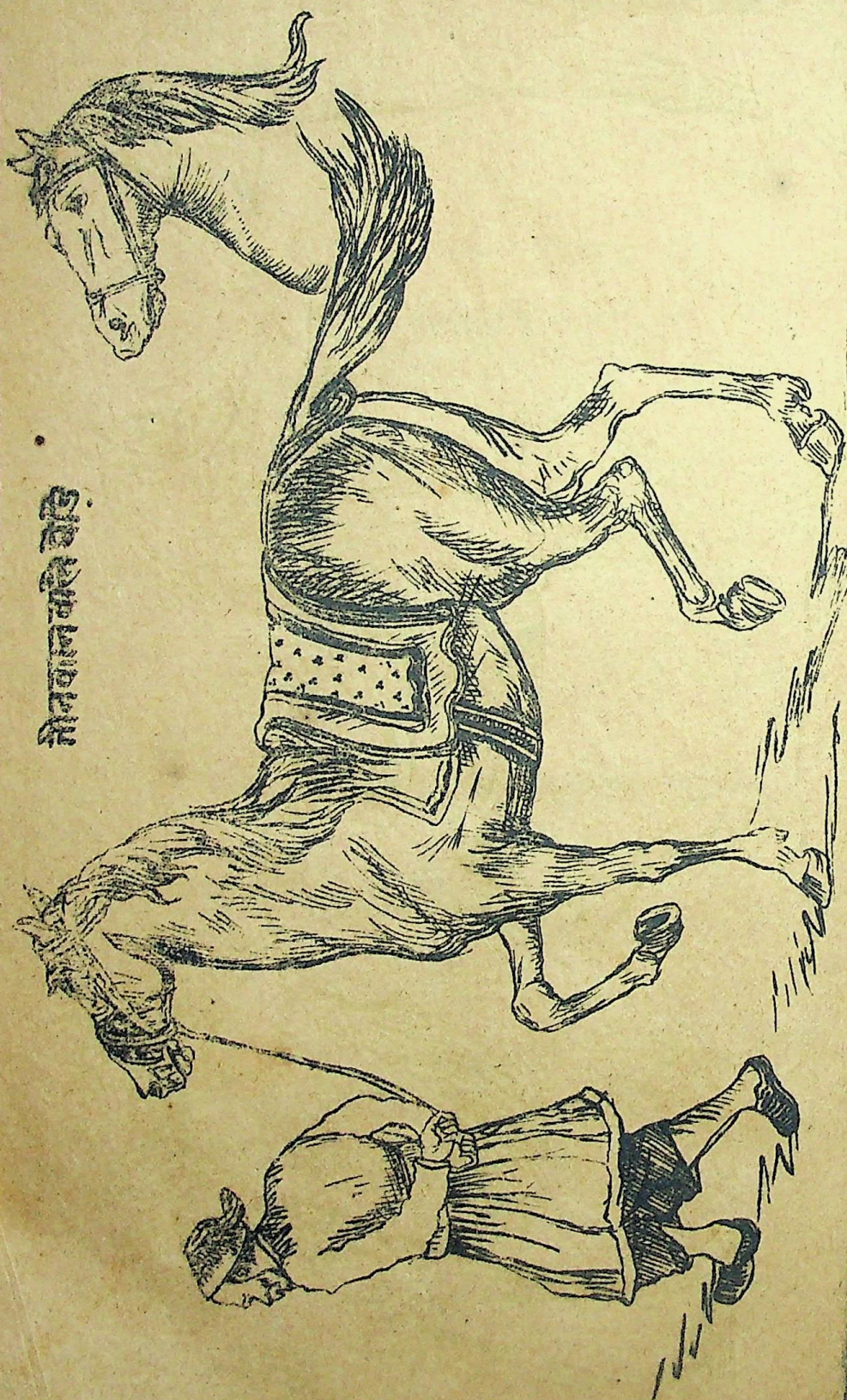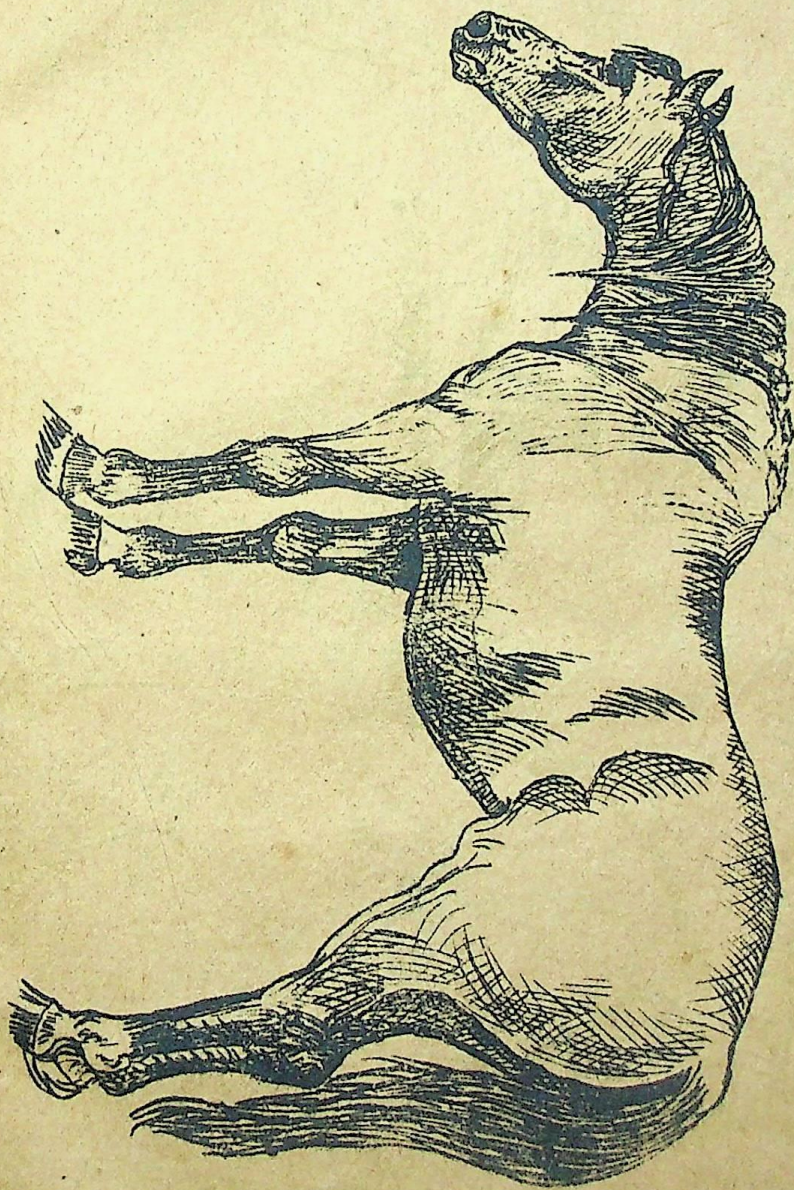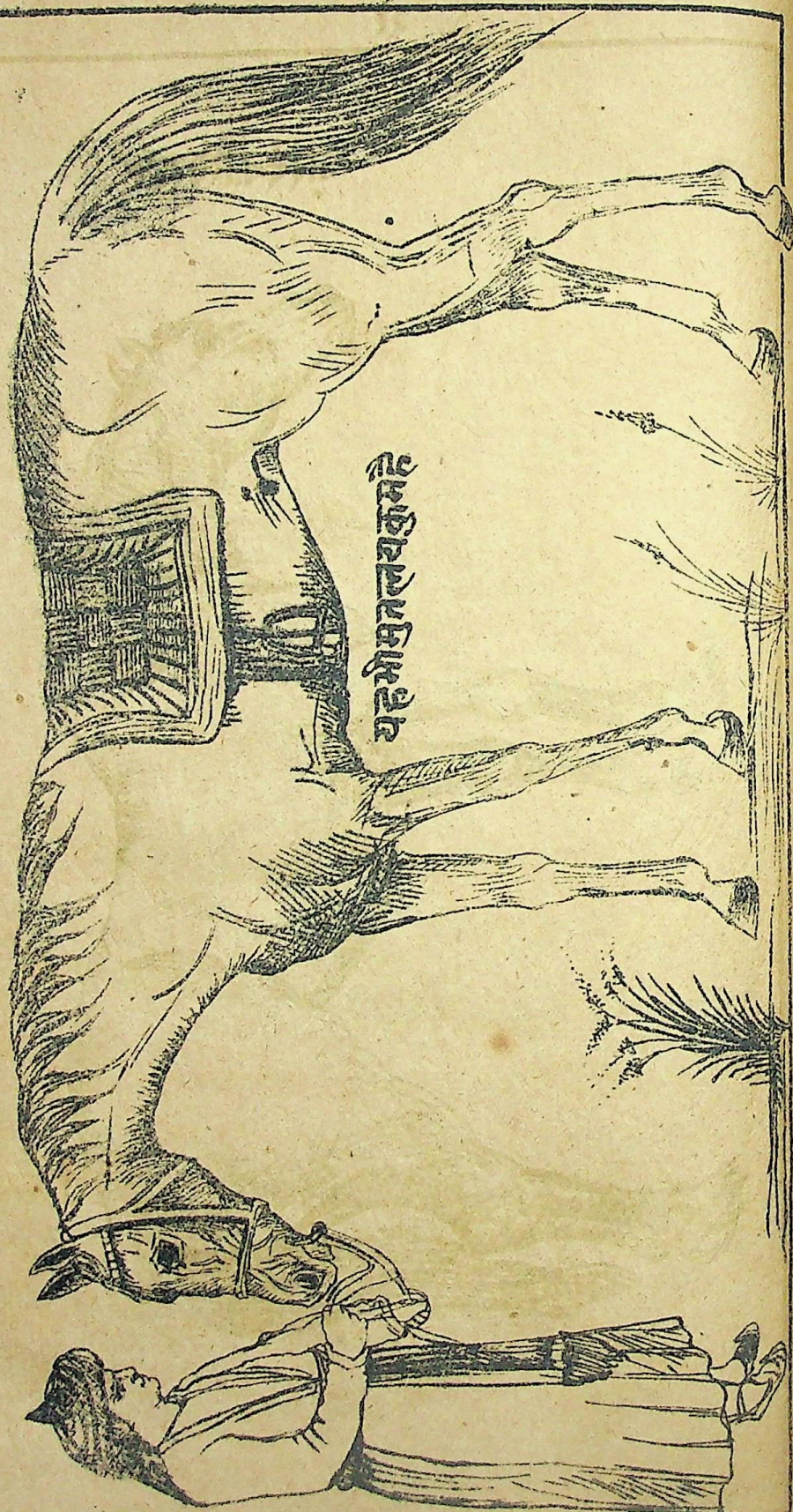
जिस घोड़े के असल अर्थात लिंग के मुहर न हो उस को अरहा कहते है

जिस घोड़े के बांये पैर पर सफ़ेदी हो उसका सुतला कुलय सार कहते हैं

पेट फूलने की औषधि

उदर रोग घोड़ा को वंद । औषधि कीजे चेतन चंद ॥
राई मठा में सौंफ मिलाय । तुरत दीजिये ताहि खवाय
सोंठ मिर्च यह गोली बांध । मूल हार तह देउ खवाय
टहलावे फेरे बहु बार । लीद करे वाही उपचार

पेशाब बन्द की औषधि

मिर्च कचूरे साबन आनि । खरल करे पानी में सान ॥
बाती देइ नरा में कोइ ॥ बहु पेशाब करिहगो सोय

कल्ला बंद होजाने व जीभ सूख जाने का इलाज

सेंधो मिर्च दोउन को लाय ॥ करौ दार सम खरल कराय
गोली करि मुख मेले तास । ता पीछे यह देउ खवाय ॥

लेप

पीपल पीपला मूल सोंठ कुलींजन बचै ले
सबको कीजे चूर कटुक तेल में खरल करि
मल्हम सा करि वाको लीजे । लेपन करि कपडा में दीजे
बांधे गले अश्व के कोय ॥ जो सेंके सो नीको होय ॥

वाय बन्द की औषधि

उदर अश्व के वाय जो बंद होय अधिकार
साल होत्र या विधि कहै याहू को उपचार
प्रथम सोंठि अजवायन लावै ॥ मेदा करि घृत में औटावै

मलै उदर कोवा बहुबार। ता पीछे यह करहु विचार
सोंठ सुहागा सोचर भांग। सहजने के रस में गोली बांध
सकल व्याध चौरासी वाय शाल होत्र कहि सबही वाय
एक गोली आटे मे देउ॥ सर्व रोग मारून हरि लेउ

अथ हड़वा जान अनासन विधि

उलहत हड़वा जबा जो यह जतन करै
शाल होत्र या विधि कहै दीरघ रोग हरै

चूना कली मटा में भरै। कपरौटी करि भूमें धरै ॥६
जब पी पक्क होय जरि जाय। तब वह मटा लेय पिसवाइ
भित उठि कै पायन में भरै। सो रस रोग छिन कमें हरै

अथ रुशचोका उपचार

हल्दी सोंठ सुहागा लीजे। अस्थ स्थंभ पर लेपन कीजे
कडुवा तेल मिलाय भरै। वह रस रोग को या विधि हरै

अथ घोड़ों की प्रकृति का विचार

शीतल गर्म स्वभाव ये अरु पुनि द्वंदजहोय
शाल होत्र या विधि कहे जो पहिचानै कोय

कुमैत मुश्की और समन्द। गरम प्रकृति होवै सुनचंद
सुरखा सुरंग को हरो बोज। पड़ द्विज कहिये लखि कै सोज
लीला और चीनी सब जार। शरद प्रकृति होवै बतार
वाकी रंग घोड़ा कहि जेते। अरून है उदयहैं तेते॥
है मधान उन सब के पित्त। वात पित्त मिलि होय विचित्र

पहिचाने अंग अंग की रीति । करि औषधि याकी परतीत
नाडी नैन बनाव हि देखि । प्रकृति स्वभाव सबहि करि रेख
औषधि करै रोग पहिचान । ताके हाथ न आवै हानि
घुरहा पाहे गोपीनाथ । कान कुब्ज में होय सनाथ
तिन के सुत चारो दयि काई । इंद्रजीत लक्ष्मण यदुराई
चौथे तारा चंद कहायो । जिह यह अश्व विनोद बनायो
हरिपद चित्त नाम को आसा । शालहोत्र वन्दे परकाशा
कुशल सिंह महाराज अनूपा चिरंजीव भूपन के भूपा ॥

सोरठा

यह ग्रंथ सुख सार चेतन चंद कह्यौ तथा
लेउ सुधार विचार चेतन चंद कह्यौ तथा

दोहा

संवत सोलह सौ अधिक वार चौगुने जान
ग्रंथ कह्यौ कुशलेश हित रक्षक श्री भगवान
मास फाल्गुन शुक्ल पख द्वितिया शुभ तिथि नाम
चेतन चंद सुभाषियत गुरु को कियो प्रनाम
तदस और आठ से इक्यावन पै सार ॥ ॥
फागुन शुक्ल त्रयोदशी लिषी वार बुधवार
अश्व विनोदी ग्रंथ यह सालहोत्र सुरसाल
निश्चय करिके लिख्यो है शोर नही में लाल

इति ॥

अथ घोड़े के ऐबों का बयान

चकावरी सुम की मूठा जान आधो कुम्मैत वेहड़ो न
र के सुम में यादि पैरै तो कफ़ गोरी जानिये पिछले पांवर
की मोह पर होयहै तुम पुस्तक तो जानियो घोड़ं कोन
स जवर पड़े तो मोहड़ा जानिये ऊपर जवर पैरै तो पोट
री जानिये। वरसाती कमर वामनी पूंछ में होय तो स
वार गिर पैरै नामो अकरब में लालटीका होय कसेउ र
य को होय सफ़ेदी माथे पर होय अंगूठा सो ढक जाय तो
सो सितार पेशानी कहते हैं तितल टूटे तिसै तिलक तो
माथे पर एक भौंरी होय सिंगिनि और जो दो भौंरी हो
य तो मेढा सिंगिनि स्याह ताल दुम्बसरी आल में
एक भौंरी सो सांपिनि द्वै भौंरी दोऊ लगसो वांधे म
ट पै भौंरी सो क्षत्र भंग चूतर को भौंरी खूंटा उपार र
काव के बराबर होय सो रकाव पेट के नीचे भौंरी होय
सो गूंस अगले पाव में भौंरी होय सो खूंटा उपार घा
ती में भौंरी होय तो हदया वलि· जिस घोड़े की दुमटे
ढ़ी टेढी रहै उसे कजदुमा जानों और इस के मस्तक
पर गाय का घी या रोग़न कुंदज सफ़ेद न लगाया जाय
तो अंधा सा होजाता है और उस को एतनी खुश्की व्याप
ती है कि बिलकुल अंधे की तरह राहचलताहै इस लिये

एक दवा ऐसी लिखी जाती है जो घोड़ों को सुस्ती आदि के लिये बहुत मुफ़ीद है· दवा गोली ~ सुहागा विरियान गूगल होरा हींग· अजवायन कूट सौंठ ॥ नरकाचूर काला बिछुवा निर्विसी पीपलामूल सोंचर नमक आध २ पाव असगंध अजवाइन खुरासानी असगंध गोरी सर सज्जी राई लोटन सज्जी अजमोद कमोला आध २ पाव वाय विडंग खाने का आध २ पाव इन सब को कूट छान कर सवा सेर उड़द का चून मिला कर सान कर पैसे पैसे भर की गोली बना के सुखा रक्खें बाद रातब के वक़्त गोली हर रोज़ खिलाया करै

दूसरी विधि

मिलावां और कुचला सवा सवा पाव रोग़न कुंजद स्याह डेढ़ पाव खूब भून कर निकाल लेवें आमा हल्दी पाव भर कूट की पीपला मूल हींग गूगल भुना सुहागा आध २ पाव सब को मिलाय पीस लेवें और ढाई सेर आक के पत्ते बारीक कर के और सेर भर कुंजद स्याह इन तीनों को खूब भूनें जिस्से कि पानी जल जावे उस सफ़ूफ़ को मिला रक्खे दो पैसे भर की आध पाव गुड़ में मिला कर खवाया करै इस के सेवन से घोड़े के मिज़ाज की सब तरह की बीमारियां रफ़ै हो जाती हैं ॥ - ॥ ॥

दोद गल खन मूशल आध सेर बाहूद १ छटांक गुड़ तीन पांव इन सब को मिलाय कूट पीस कर मंज़िल पर खिलाया करै तो थकान नहीं मानै और हायोक म उमर को हर महीने में पंद्रह रोज़ उस की इसलाह मिज़ाज के रखता है और हर तरह की खूबियां नमूदार करता है॰ ॥

इति सालहोत्र संपूर्णम्

अब मनुष्यों के अजीर्ण मिटाने वाले चंद नुसखे लिखे जाते हैं ०॥

हड़ की छाल टंक २ को महीन पीस १० टंक जल के साथ हर रोज़ लेय तो आमा जीर्ण जाय भूख बढ़ै १ अथवा हड़ की छाल व सेंधा नोन का सेवन रोज़ करै अजीर्ण ज्वर जाय भूख बढ़ै २ अथवा चित्रक अजमोद सेंधा नोन सोंठ काली मिर्च बराबर ले महीन पीस टंक दो गाय की छाछ के साथ १५ दिन लेय तो भूख बहुत बढ़ै मंदाग्नि और पांडु रोग बवासीर जाय ॥३॥ आमा जीर्ण होय तो लवण के सेवन और वमन से जाय। विदग्ध अजीर्ण होय तो लंघन से जाय ॥४॥ सोंठ काली मिर्च पीपल अजमोद सेंधानोन दोनो जीरे॰ भुनी हींग ॥

येसव बराबर ले चूर्ण करे। इस चूर्ण को टक १ या २ भर खिचड़ी में गुड़ मिलाय प्रथम ग्रास के साथ रोजो ना खाय तो अजीर्ण कभी न होय और भूख बढ़े-गोला फिया दूर होय यह हिंगाष्टक चूर्ण है॥

अथवा- जवाखार सज्जी चित्रक पांचौ नोन इलायची पत्रज भारंगी सुनी हींग पोहकरमूल कचूर निसोत मोथा इन्द्रजौ डासरया अमलवेत जीरा आमला हड़ की छाल अजवाइन पीपल तिलों का तेल सहजने की खार खैरसार यह सब बराबर ले महीन पीस छानले पीछे बिजौर के रस की पुट दे सिद्ध करले इस चूर्ण में से टंक २ हर रोज़ जल के साथ ले तो भूख बहुत लगे और अजीर्ण गोला उदर व्याध और अष्ट वृद्धि वात आदि सब रोगों को यह अग्निमुख चूरण दूर करे है॥

इति०

Sitaram Contractor
Jubbulpore

Ramprasad Contractor
Jubbulpore

BARELAL